कल्हण

सोमनाथ धर

MT
891.202 109 2
K 124 D

भारतीय
साहित्यक
निर्माता

MT
891.202 109 2
K 124 D

INDIAN INSTITUTE
OF
ADVANCED STUDY
LIBRARY, SHIMLA

कल्हण

अस्तर पर छपल मूर्तिकलाक प्रतिरूपमे राजा शुद्धोदनक दरबारक ओ दृश्य देल गेल अछि जाहिमे तीन गोट भविष्यवक्ता भगवान बुद्धक माय रानी मायाक स्वप्नक व्याख्या कय रहल छथि। हिनका लोकनिक नीचाँमे एक गोट देवानजी बैसल छथि जे ओहि व्याख्याकेँ लिपिबद्ध कय रहल छथि। भारतमे लेखनकलाक ई प्रायः सभसँ प्राचीन एवं चित्रलिखित अभिलेख थिक।

नागार्जुनकोण्डा, दोसर शताब्दी
सौजन्य : राष्ट्रीय संग्रहालय, नयी दिल्ली

भारतीय साहित्यक निर्माता

कल्हण

लेखक

सोमनाथ धर

अनुवादक

नवीनचन्द्र मिश्र

साहित्य अकादेमी

Kalhana: Maithili translation by **Nawin Chandra Mishra** of Som Nath Dhar's monograph in English. **Sahitya Akademi**, New Delhi (1994), Rs. 15.

© साहित्य अकादेमी

प्रथम संस्करण : १९९४

MT
891.202
K124D

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय
रवीन्द्र भवन, ३५, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नयी दिल्ली ११० ००१
विक्रय विभाग : 'स्वाति', मन्दिर मार्ग, नयी दिल्ली ११० ००१

क्षेत्रीय कार्यालय
१७२, मुम्बई मराठी ग्रन्थ संग्रहालय मार्ग, दादर, बम्बई ४०० ०१४
जीवनतारा बिल्डिंग, चौथा तल, २३ ए/४४ एक्स, डायमंड हार्बर रोड,
कलकत्ता ७०० ०५३
३०४-३०५, अन्ना सलाई, तेनामपेट, मद्रास ६०० ०१८
१०९, ए डी ए रंगमन्दिर, १०९, जे. सी. मार्ग, बैंगलौर ५६० ००२

मूल्य : पन्द्रह टाका

ISBN 81-7201-793-6

Library IIAS, Shimla
MT 891.202 109 2 K 124 D
00117148

लेज़र-टाइपसेटिंग : अक्षरश्री, दिल्ली ११० ०३२
मुद्रक : सुपर प्रिन्टर्स, दिल्ली ११०

117148
9.12.04

विषय-सूची

प्रस्तावना	७
कल्हण ओ हिनक परिवार	१३
कल्हण ओ हिनक समय	१८
कविक रूपमे कल्हण	२९
इतिहासकारक रूपमे कल्हण	३७
कालगणनाक पद्धति	४०
वर्णनकर्ताक रूपमे कल्हण	४४
प्रागैतिहासिक ओ प्रारंभिक काल	५१
कर्कोट आ हुनक वाद	५७
राजतरंगिणी सँ शिक्षा	६६
अन्य पुरालेखक	७१
सन्दर्भ ग्रन्थ - सूची	८०

प्रस्तावना

वास्तविक पुरालेखक अभावमे भारतक सुदूर अतीत धूमिल अछि। प्राचीन भारतमे इतिहास (वास्तविक वा पौराणिक) राजा लोकनिक उपलब्धिक पुरालेखक रूप लेने छल। उदाहरणार्थ, पुराण सभमे वंशावलीक विवरण भेटैत अछि आ एहि मे आर्य सभसँ पूर्वक राजा लोकनिक उपलब्धिक विस्तारपूर्वक वर्णन कएल गेल अछि। परंतु, वैज्ञानिक इतिहास लिखबाक लेल एहि राजा लोकनिसँ सम्बन्धित बहुत कम तथ्य भेटैत अछि। संस्कृत साहित्यक दीर्घ अवधिमे गम्भीर रूपे समीक्षक - इतिहासकार मानल जायवला लेखक नगण्य छथि।

ईसाक छठम शताब्दीक बादसँ भारतक यशस्वी राजा लोकनिक पुरालेख भेटैत अछि - 'जेना वाणकृत' 'हर्षचरित,' 'कल्हणकृत' राजतरंगिणी,' 'आइने अकबरी,' 'अकबरनामा,' इत्यादि। एहि ग्रंथ सभमे समाविष्ट तथ्यकेँ समकालीन साहित्यिक कृति सभमे सन्निहित ऐतिहासिक सामग्रीक सन्दर्भ द्वारा आओर शिलालेख ओ मुद्राक प्रमाण द्वारा परीक्षण कएल जाए सकैछ। सहस्रो वर्ष पूर्व धरि व्याप्त इतिहासक विस्तृत अभिलेख रखबाक कारणे कश्मीरके भारतमे महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त अछि आ एहि लेल कल्हण धन्यवादक पात्र छथि।

कल्हणकृत 'राजतरंगिणी' (राजालोकनिक नदी) प्राचीनतम उपलब्ध कश्मीरी इतिहासक पुस्तक थिक। ११४८ आ ११५० ई.क बीचमे कश्मीर आ शेष भारतसँ सम्बन्धित मूल्यवान् राजनीतिक, सामाजिक ओ अन्य सूचना समाहित अछि। एच.जी. रालिंसनक शब्दमे "ई इतिहासकेँ हिन्दू भारतक एकाकी देन थिक"। संस्कृत - साहित्यक उपलब्ध कृति सभमे कल्हणक पुरालेख अपन तुलनात्मक कालक्रम लेल विद्यमान अछि। साहित्यिक ओ दार्शनिक कृति लिखनिहार अनेक भारतीय विद्वान लोकनिक तिथि निर्धारित करबाक कुंजी एकरा द्वारा प्रदत्त अछि। वस्तुतः 'राजतरंगिणीक प्राचीन भारतीय इतिहासक पुनर्निर्माणक क्षेत्रमे सराहनीय योगदान रहल अछि।

उत्तरवर्त्ती संस्कृत पुरालेखक स्वल्प ऐतिहासिक अभिलेख सभक उपयुक्त स्पष्टीकरण आव सम्भव अछि आ एहि लेल कल्हणक 'राजतरंगिणी'क वास्तविक सूचनाके धन्यवाद देबाक चाही। तेँ महान कवि - इतिहासकार कल्हण खाली कश्मीरक प्राचीन संस्कृति ओ इतिहासके विस्मृत होएबासँ नहि बचओलन्हि, अपितु उत्तरवर्त्ती पुरालेखक विशृंखल लेखनके संयोजित करबामे इतिहासक विद्यार्थीके सहायतो कयलनि। आओर, एहूसँ बेसी ई जे कश्मीरक इतिहासक विद्यार्थी अतीतक संग बेसी सन्तोषजनक रूपसँ

Kalhana: Maithili translation by Nawin Chandra Mishra of Som Nath Dhar's monograph in English. Sahitya Akademi, New Delhi (1994), Rs. 15.

बौद्धिक वार्त्तालाप कए सकैछ, जे भारतक अन्य प्रदेशक इतिहासक विद्यार्थी लेल सुगम नहि अछि ।

'राजतरंगिणी'क रणजित सीताराम पण्डितकृत अनुवाद[१]क विस्तृत प्रस्तावनाक क्रममे जवाहरलाल नेहरू एकर कथा ओ नीतिक सारांश देलनि जे कोन तरहे कल्हण अपन समकालीन, भूतकालीन, सामाजिक ओ राजनीतिक जीवनक प्रामाणिक चित्र प्रस्तुत कएलनि । एक उद्धरण द्रष्टव्य–थीक "ई इतिहास थिक आ एकटा काव्य सेहो, यद्यपि एहि दुनूमे साम्य नहि अछि आ अनुवादमे विशेष रूपे एहि संयोगक कारणेँ हम दुःखी भए जाइत छी; हेतु जे काव्यक संगीतके कल्हणक उदात्त मधुर भाषाक मोहक सौन्दर्यक हम प्रशंसा नहि कए सकैत छी – ई मध्ययुगक एक कथा थिक आ कतेको बेर ई कथा आनन्ददायक नहि अछि । राजमहलक षडयंत्र, हत्या, विश्वासघात, गृहयुद्ध आ विद्रोहक अधिकता अछि । ई तानाशाही आ सैनिक शासनक कथा थिक । – ई राजागण, राजपरिवार आ अभिजातवर्गक कथा थिक, सामान्यजनक नहि । तथापि, कल्हणक पुस्तक राजाक कार्यक लेखा-जोखासँ वेसी महत्त्वपूर्ण अछि । राजनीतिक, सामाजिक आ किछु अंशमे आर्थिक सूचनाक ई भण्डारधर थिक । हमरा लोकिन देखैत छी जे मध्ययुगक सर्वांग कवच, चमकैत कवच धारण कएनिहार सामन्ती वीर ... आ षडयंत्र, आ युद्ध, कलहरत आ व्यभिचारिणी रानी सभ । नारी लोकनि एक महत्वपूर्ण भूमिकाक निर्वाह करैत प्रतीत होइछ ; मात्र नेपथ्यमे नहि, अपितु नेता आ सैनिकक रूपमे सभा-स्थल आ समरांगनमे सेहो । कखनहुँ हमरा लोकनिकेँ घनिष्ठ मानवीय सम्बन्ध आ भावना, प्रेम आ घृणा, श्रद्धा आ वासनाक झलक परिलक्षित होइछ । हम पढ़ैत छी सुयक महान यांत्रिक क्रियाकलाप आ पटौनी-कार्यक विषय मे, सुदूर देशमे ललितादित्यक विजय-संग्रामक प्रसंगमे, विजय कए अहिंसा व्याप्त करबाक लेल मेधवाहनक विचित्र प्रयासक सम्बन्धमे, मन्दिर आ विहारक निर्माण तथा मन्दिरक खजानाके लुटनिहार अविश्वासु आ मूर्त्तिभंजक द्वारा ओकर विनाशक प्रसंगमे । आओर अकाल, बाढ़ि आ अग्निकाण्ड छल ; जे जनसंख्याक दशमांशके नष्ट कए देल तथा बचल व्यक्तिकेँ विपत्तिग्रस्त कएल ।

ई ओहन समय छल, जखन प्राचीन आर्थिक प्रणाली नष्ट भए रहल छल ; जाहि तरहेँ कश्मीरमे तहिना शेष भारतमे सेहो प्राचीन परिपाटी बदलि रहल छल । कश्मीर एशियाक विभिन्न संस्कृति - पश्चिमी ग्रीक - रोमन आ ईरानी तथा पूर्वी मंगोलियाक मिलन-स्थल छल । किन्तु, अपरिहार्य रूपे ओ भारतक एक अंग छल आ भारतीय आर्य-परम्पराक उत्तराधिकारिणी । जखने आर्थिक संरचना ध्वस्त भेल, ओ प्राचीन भारतीय आर्य-राज्य व्यवस्थाकेँ प्रभावित कयलक, आन्तरिक विप्लव आ विदेशी आक्रमणक सुलभ शिकार

---

१. दि इण्डियन प्रेस लिमिटेड, इलाहाबाद, १९३५, पुनर्मुद्रित, साहित्य अकादेमी, १९६८ ओ १९७७

बना देलक। प्राचीन भारतीय आर्य-आदर्श प्रज्वलित होइत छल, मुदा बदलैत परिस्थितिमे ई व्यर्थ सिद्ध भेल। युद्धनायक व्यस्त रहैछ आ जन-जीवन अस्त-व्यस्त भए जाइछ। जन-क्रान्ति होइत अछि - कल्हण कश्मीरक वर्णन एक एहन देशक रूपमे करैत छथि 'जे विद्रोहप्रिय अछि' आ 'सेनानायक ओ साहसी व्यक्ति अपन लाभक लेल ओकर शोषण करैछ।

'राजतरंगिणी'क विषयवस्तु, रणजित सीताराम पण्डित द्वारा अपन अनुवादमे देल गेल आकार-प्रकार धरि पहुँचबासँ पूर्वहि, पाण्डुलिपि-परम्परामे अत्यधिक प्रवास कएल, जे उल्लेखनीय अछि। कल्हण एहि लेल धन्यवादक पात्र छथि, जे 'राजनरंगिणी'क आदि आ अन्तमे निश्चित तिथि सभ देल गेल आओर तैं हुनका द्वारा ग्रन्थक समाप्तिक बाद पाण्डुलिपिमे परिवर्त्तन नहि कएल गेल। तथापि, किछु भ्रष्ट पाठ आ छन्द - दोष द्वारा ई भेटैत अछि जे (विशेषतः अन्तिम भागमे) कल्हण सम्पूर्ण कृतिक संशोधन नहि कएल। अन्तिम छओ सय पद्य, जाहिमे किछु प्रायः निरर्थक अंश आ अन्तराल छल; एहि दोषके सर्वाधिक व्यक्त करैत अछि।

अस्तु, जे किछु दोष रहय, कश्मीरक इतिहासक ई प्राचीनतम ओ पूर्णतम अभिलेख उत्तरवर्ती इतिहासकार लोकनिक अभिरुचि जगौलक। कश्मीरक सुल्तान जैनुल अबीदीन (१४२१ - १४७२ ई.) क प्रेरणासँ 'राजतरंगिणी'क एक भागक पहिल अनुवाद फारसीमे कएल गेल छल। एहि संस्करणक शीर्षक छल 'बहरूल् अस्मर' (कथा - समुद्र)। जखन अकबर कश्मीर पर कब्जा कएलक, तखन ओ १५९४ ई. मे अब्दुल कादिर अल् बदायूनी कें ई अनुवाद पूर्ण करबाक आदेश देल। अबुल फज़ल अपन 'आइने अकबरी' मे कश्मीरक प्राचीन इतिहासक संक्षेपण देल आ स्रोतक रूपमे कल्हणक उल्लेख कएल। जहाँगीरक शासन-काल मे मलिक हैदर १६१७ ई. मे 'राजतरंगिणी'क संक्षिप्त संस्करण तैयार कएलनि। डॉ. फ्रांसिस वर्नियर (१६६५ ई.) अपन ग्रंथ 'पैराडाइस आफ दि इण्डीज' मे 'राजतरंगिणी'क हैदर मालिक कृत अनुवादक कएल। एही तरहें एक शताब्दीक बाद फादर टीफैनथलर एहि संक्षिप्त संस्करणक उपयोग कएल।

यूरोपमे संस्कृत- अध्ययनक प्रवर्त्तक सर विलियम जोन्स १९म सदीक प्रारम्भमे 'एशियाटिक रिसर्चेज' मे घोषणा कएने रहथि जे ओ संस्कृत कश्मीरी अधिकृत स्रोतसँ 'भारतक इतिहास' लिखबाक नियार कएने रहथि, मुदा सामग्री प्राप्त करबा धरि ओ जीवित नहि छलाह। १८०५ ई. मे कोलब्रुक 'राजतरंगिणी'क एक अपूर्ण प्रति प्राप्त कएल, मुदा पाण्डुलिपि प्रसंग हिनक विवरण लोकके १८२५ ई.मे ज्ञात भेलैक।

एहिसँ नीक पाठय - सामग्री मूरक्राफ्ट के भेटलन्हि जे महाराजा रणजीत सिहंक अनुमतिसँ १८२३ ई. मे श्रीनगर अयलाह आ प्राचीन शारदा पाण्डुलिपिसँ एक गोट देवनागरी पाण्डुलिपि तैयार करबौलन्हि। ई 'राजतरंगिणी'क ओहि संस्करणक आधार छल,

जे १८३५ ई.मे एशियाटिक सोसाइटी आफ बंगालक तत्वावधानमे कलकत्ता सँ प्रकाशित भेल। स्टीन एहि पाण्डुलिपिकेँ सम्पूर्ण कश्मीरी पाण्डुलिपिक आदर्शसंहिता कहलनि, मुदा एहिमे लिप्यन्तरक दोष विद्यमान छल। कश्मीरक भूमिरचना आ परम्परासँ अपरिचित कलकत्ताक विद्वान लोकनि पाण्डुलिपि एहि पाठक संग अनावश्यक रूपेँ मुक्त संशोधन सभ कएल।

एही बीच डा. होरेस हेमैन विल्सन लगभग दस वर्ष पूर्व एक नव दिशा देलनि, जखन ओ 'एसे आन् दि हिन्दू हिस्ट्री आफ कश्मीर'[1] प्रकाशित कएल, जाहिमे 'राजतरंगिणी'क पहिल छओ सर्गक सारांश समाविष्ट छल आ जे सर्वप्रथम यूरोपीय इतिहासकारकेँ एहि महत्वपूर्ण कृतिसँ परिचय कराओल। ई संस्कृतक विद्वान अक्षरसः अनुवादसँ बचि चतुरतापूर्वक तीनटा अपूर्ण देवनागरी पाण्डुलिपिकेँ अपन आधार बनओने रहथि।

'राजतरंगिणी'क सर्वप्रथम पूर्ण अनुवाद लेल मूल संस्कृत पाठकेँ आधार बनाओल गेल ओ ओकरा पेरिसमे 'सोसाइटी एशियाटिक'क कीर्त्तिध्वजाक अन्तर्गत १८५२ ई. मे फ्रांसीसी भाषामे प्रकाशित कएल गेल। तथापि, फ्रांसीसी अनुवादक ए. ट्रायर (तत्कालीन कलकत्ता संस्कृत महाविद्यालयक प्राचार्य) ओही सामग्रीके आधार बनाओल जकर १८३५ ई. मे कलकत्ता मे उपयोग भेल छल।

१८३५क कलकत्ता संस्करणक उपयोग योगेशचन्द्र दत्त 'राजतरंगिणी'क अंग्रेजी अनुवाद लेल कएने रहथि, जकर शीर्षक छल 'कश्मीरक राजा : कल्हण पण्डितक संस्कृत ग्रंथ राजतरंगिणीक अनुवाद'; ई पुस्तक कलकत्तामे १८७९-१८८७ ई. क बीचमे प्रकाशित भेल छल। किछु दृष्टिएँ ट्रायरक संस्करणसँ नीक रहितहुँ दत्तक अनुवाद कलकत्ता संस्करणक दोषसँ युक्त छल, संगहि प्राचीन कश्मीरक भूमिरचना, परम्परा ओ संस्थाक सन्दर्भ केँ नीक जकाँ बुझबा मे अनुवाादकक असमर्थता सेहो छल।

'राजतरंगिणी' मे विद्वान लोकनिक रूचि निरन्तर बढ़ैत रहल। डोगरा शासन प्रारम्भ भेलाक बाद कश्मीरक यात्राक क्रम मे ए. कनिंधाम 'राजतरंगिणी'क कालक्रम प्रणाली आ मुद्राक साक्ष्यसँ सम्बन्धित अनेकों विषयकेँ स्पष्ट कएलनि। कल्हणक विवरणमे प्रयुक्त संवत् पर प्रकाश दैत ओ 'राजतरंगिणी'क प्रायः सभ राजा लोकनिक तिथि उपयुक्त ढंगसँ निश्चित कएल। ओही समय जेनरल कनिंधम (जे ओछि समय केप्टन छलाह) कल्हण द्वारा निर्दिष्ट महत्वपूर्ण घटनावलीक समीक्षात्मक निर्धारण लेल मुद्राक साक्ष्य सेहो निर्दिष्ट कएल।[2] हिन्दू युगक विद्यमान वास्तुकलाक अवशेषक अध्ययन सेहो एहि विद्वान सैनिककेँ एहन अनेक स्थान बुझएबा मे सहायता केलकनि, जे कश्मीरक प्राचीन नक्शा निश्चित करबाक लेल महत्वपूर्ण छल।

---

१. एसिएटिक रिसर्चेज़, कलकत्ता, १८२५ खण्ड-१५

२. ई साक्ष्य, पाश्चात्वर्ती अनुसंधानक संग, वर्त्तमान शताब्दी धरि अनुवादक आ इतिहासकारक श्रम आलोकित करैछ

कल्हणक 'राजतरंगिणी' पुनः अपना दिस पश्चिमक ध्यान आकृष्ट कएल; एहि बेर प्रो. लासनक सुविख्यात जर्मन विश्वकोष, 'इडिश आल्टर-टुमूस्कुंड'क माध्यमे एहि ग्रंथक ऐतिहासिक विषयवस्तुक विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत कएल गेल। प्रोफेसरक विद्वत्ता रहितहु विश्वकोषक विश्लेषण डाक्टर विल्सन आओर जनरल कनिंधम द्वारा संगृहीत ऐतिहासिक सामग्रीमे वेसी किछु नहि जोडि सकल।

ई कार्य प्रो. जी. बूहलर (तत्कालीन बम्बइक शिक्षा विभागसँ सम्बद्ध) केलनि जे १८७५ ई. मे अपन कश्मीर यात्राक परिणामस्वरूप ई देखौलनि जे कोन तरहेँ कश्मीरक प्राचीन भूगोलकेँ उपयुक्त ढंगे पुनर्निर्मित कएल जाए सकैछ। ओ अपन सुविदित प्रतिवेदनमे कहलनि अछि जे, कल्हणक 'राजतरंगिणी'क घटनाक-कालक्रम के नीक जकाँ बुझबाक लेल एकर (प्राचीन भूगोल) बड आवश्यकना छैक। एहि विद्वान पुराविद्क कश्मीर-यात्रा संस्कृत भाषाशास्त्र लेल एक स्मरणीय घटना बनि गेल। जतय धरि 'राजतरंगिणी'क प्रश्न अछि, प्रो. बूहलर स्पष्टीकरण लेल उपलब्धसामग्री दिस ध्यान आकृष्ट कएल - जेना नीलमत पुराण, उत्तरवर्त्ती संस्कृतक पुरालेख आ दोसर कश्मीरी पाठ्य-ग्रंथ। ओ देवानागरी पाण्डुलिपिक ऊपर कश्मीरी पाण्डुलिपिक निर्विवाद श्रेष्ठता स्थापित कए देल आ एहि तरहेँ 'राजतरंगिणी'क उपयुक्त पाठक समीक्षात्मक पुनर्निमाण हेतु मार्ग प्रशस्त कएल। हिनक प्रसिद्ध प्रतिवेदन भावी इतिहासकार लेल किछु समीक्षा-सिद्धान्त स्थापित कएल जे कोन तरहेँ कश्मीर आ शेष भारतक इतिहास लेल कल्हणक 'राजतरंगिणी'क उपयोग कएल जाए सकैछ। प्रो. बूहलर सँ प्रेरित भए डॉ. ई. हुल्ट्जेक् द्वारा लिखित राजतरंगिणी - विषयक उपयोगी समीक्षात्मक लेख १८८५ ई.मे 'इण्डियन एंटीक्वेटी' (खण्ड १८, १९) मे प्रकाशित भेल। १९म शताब्दीक अन्तिम दशक धरिं यूरोपीय आ भारतीय संस्कृत विद्वान द्वारा लिखित एहि तरहक अनेक लेख प्रकाशमे आएल; जाहिमे प्रत्येकमे 'राजतरंगिणी'क विशिष्ट भाग वा अंश पर विश्लेषण छल। एही बीच एक दोसर प्रमुख विद्वान एम. ए. स्टीन कश्मीरक पुरातन अध्ययन-सम्बन्धी अनेको यात्रा कएल आ हिनका एक संहिता भेटल जे कश्मीरी विद्वान पण्डित राजानक रत्नकान्त द्वारा प्रायः १७म शताब्दीक तेसर भागमे लिखल गेल छल आ जाहिमे प्राचीन विद्वान लोकनि द्वारा महत्वपूर्ण सुझाव ओ टिप्पणी अंकित छल। श्रीनगरक पण्डित गोविन्द कौलक सहायतासँ स्टीन प्राचीन संस्कृत पाठ्य ग्रंथक अध्ययनक संग शेष भारतसँ एहि घाटीकेँ पृथक् करएबला पर्वतमालाक अन्तर्गत उपलब्ध भेल पुरान संस्कृत ग्रन्थ तथा कश्मीरक विशिष्ट परम्पराक अध्ययन सेहो कएल जाहिसँ कल्हणक विवरणकेँ ठीक-ठीक बूझि सकी। हिनक संस्कृतपाठ कश्मीर दरबारक संरक्षणमे एजुकेशन सोसाइटी प्रेस, बम्बई द्वारा १८९२ ई. मे प्रकाशित कएल गेल।

लगभग ओही समय कश्मीरक पण्डित दुर्गादास सेहो अपन संस्करण प्रस्तुत कएल,

जे निर्णय सागर प्रेस, बम्बई द्वारा प्रकाशित भेल। १९०० ई. मे स्टीन 'राजतरंगिणी'क अंग्रेजी गद्य मे अनुवाद कएल। ई प्रो. बूहलरक अनुवादक नमूनाक अनुसरण कएल, "अनुवादक एक एहन रूपकेँ स्वीकार कएल जे टीकाकारकेँ पाठक अर्थक सुगमतासँ अनूदित करबाक लेल आओर अपन संस्करणमे निहित रचना वा दोसर टीकासम्बन्धी कारणकेँ अप्रत्यक्ष रूपेँ इंगित करबाक अनुमति प्रदान करैछ"। एहि स्मरणीय टीकायुक्त संस्करण (दू खण्ड) पहिल बेर 'राजतरंगिणी'क विषय-वस्तु केँ नीक जकाँ स्पष्ट कयल।

'राजतरंगिणी'क अग्रिम महत्वपूर्ण अनुवाद जेना कि पहिने कहि चुकल छी, रणजित सीताराम पण्डित द्वारा कएल गेल, जे दुर्गादासक समीक्षात्मक संस्करणक बेसी ठाम उल्लेख करैत, सामान्यतः स्टीनक संस्कृत पाठक अनुसरण कएल। तथापि, ई अनुभव कएल जे स्टीनक 'अनुवाद-पद्धति मूल पाठक' अध्ययन करबा मे असमर्थ पाठककेँ एहि कृतिक साहित्यिक रूपक पर्याप्त बोध नहि करबैछ। अपन अनुवादक प्रसंग ओ कहैत छथि जे 'मूल पाठक त्रुटि सभकेँ छोड़ि ई (अनुवाद) पूर्ण ओ असंशोधित अछि।'

हम रणजित सीताराम पण्डितक अनुवादक प्रसंग जवाहरलाल नेहरू लिखित प्रस्तावनामे सँ उद्धरण पूर्वहिँ दए चुकल छी। ई जून १९३४ मे देहरादून जेल मे लिखल गेल छल। जवाहरलाल नेहरू (ओहि समयसँ लगभग आधा शताब्दी पूर्व) एस. पी. पण्डितक टिप्पणीक उल्लेख कएल जे 'राजतरंगिणी' मात्र 'एखन धरि भारतमे अनुसन्धान कएल गेल एहन कृति थिक जे इतिहासक कृति होयबाक गर्व कए सकैत अछि' आओर 'एहि तरहक पोथी प्राचीन भारतीय इतिहास आ' संस्कृतक प्रत्येक विद्यार्थीक लेल आवश्यक रूपसँ महत्व रखैछ। 'रणजित सीताराम पण्डितक अनुवादक प्रसंगमे हिनक कथन एहि तरहेँ अछि - 'अनुवादक अक्षरसः अनुवाद शैलीक चयन कएल जाहिसँ कतेको स्थल पर भाषाक सौन्दर्यक उपेक्षा सेहो होइछ; तथापि हम सोचैत छी, जे ओ ठीक चयन कएल, कारण जे एहि तरहक काजमे तथ्य-परकता नितान्त आवश्यक छैक। टिप्पणी आओर परिशिष्टक संग "कश्मीरक इतिहासक बैदिक, बौद्ध आ ब्राह्मण युग सभक उल्लेखनाय योगदान सभ पर प्रकाश देबऽबला आओर स्टीन सन विद्वानक विद्वत्ता सँ प्रतिस्पर्धा करऽबला एहि अनुवाद-कृतिक गुणवत्ता एखनहुँ अक्षुन्न तऽ अछिए, समयोक जाँच पर खरा उतरल अछि।

भारतीय साहित्यक निर्माताक रूपमे कल्हणक स्थान हिनक एकमात्र उपलब्ध कृति 'राजतरंगिणी' द्वारा सुरक्षित अछि; जे एकहिँ संग एकटा उत्कृष्ट साहित्यिक रचना आ ऐतिहासिक अभिलेख सेहो थिक। हिनक जीवन ओ कार्यक विषयमे बेसी जानकारी नहि अछि। अग्रिम पृष्ठ सभमे हिनक जीवन ओ समय सँ सम्बन्धित तथ्य केँ उपलब्ध स्रोत सँ संगृहीत करबाक एवं भारतीय साहित्यकेँ हिनक देनक मूल्यांकन करबाक प्रयास भेल अछि।

---

१. सूफी जी. एम. डी. कशिर; प्रस्तावना

कल्हण ओ हिनक परिवार

ई यथार्थ जे कल्हणक जीवनक प्रसंग मे बहुत कम जानकारी उपलब्ध अछि ; मुदा ई बात तत्कालीन आ पूर्ववर्त्ती अनेको लेखकक प्रसंग लागू अछि । ई अत्यन्त खेदक विषय थिक जे ओहि विद्वान -कविक जीवनक कोनहु लेखा-जोखा उपलब्ध नहि अछि, जकराप्रति हम प्राचीन कश्मीरक प्राचीन इतिहासक ज्ञान लेल ऋणी छी । परंच, धैर्यपूर्वक अनुसन्धान कयलाक उपरान्त कल्हणक प्रसंग किछु तथ्य हिनक काव्य मे भेटि जाइछ । मुदा कालिदास सन लेखकक जीवन प्रसङ्ग प्राप्त सूचनाक (जे परस्पर विरोधी किंवदन्ती सँ भरल अछि) तुलना मे, एहि रूपेँ प्राप्त हिनक सूचना कतहुँ बेसी अछि ।

कल्हण नाम 'राजतरंगिणी'क आठो तरंगक अन्तमे अबैत अछि । प्रत्येक तरंगक अन्त मे एकर रचनाकारक नाम कल्हण - प्रसिद्ध कश्मीरी मंत्री चंपकक पुत्र अंकित छैक। हिनक पिता चम्पक कश्मीरी सामन्त रहथि, जे द्वारपति वा अग्रिम मोर्चाक सेनापति पद पर अभागल राजा हर्षक शासनकालमे नियुक्त रहथि । कल्हण अपन ग्रंथक प्रस्तावना ११४८-४९ ई. मे लिखलनि आ अगिला वर्ष पूरा कएलनि । एहि तिथि सभ पर विचार कएला पर पुरालेखमे राजा हर्षक प्रमुख पदाधिकारी रूपमे चम्पक नामक पुनरावृत्ति चम्पकसँ कल्हणक अपत्य-सम्बन्धकेँ सिद्ध करैछ । द्वारपतिक रूपमे हिनक उल्लेख ससम्मान अछि, सीमान्तमे दरद जातिक विद्रोहकेँ दबएबा मे हिनका द्वारा कयल गेल कार्यक प्रशंसा आ विपत्ति-ग्रस्त होएबा धरि राजा हर्षक प्रति एकटा स्वामिभक्त अधिकारी रहबाक कारणेँ हिनक प्रशंसा कएल गेल अछि । ई कहल गेल अछि जे राजा जखन विपत्तिग्रस्त भेलाह तखन चम्पक उपस्थित नहि रहथि, कारण जे राजा हिनका एकटा विशेष अभियान पर कतहुँ पठौने छलाह । पछाति राजधानी छोड़ि भागि जएबाक लेल विवश भेनिहार अभागल राजा आ चम्पकक बीच वार्तालाप एवं राजाक दुखान्त मृत्यु सँ सम्बन्धित दोसर घटनाक विवरण चम्पक आ लेखकक बीच पिता-पुत्र-सम्बन्धकेँ स्पष्ट करैछ । मुदा ई स्पष्ट होइछ जे कल्हण राजाक प्रति प्रदर्शित चम्पकक स्नेहकेँ नीक नहि मानैत रहथि । चम्पक (viii,२३६५) ११३६ ई. मे प्रायः जीवित रहथि ।

पुरालेखमे एक दोसर निकट सम्बन्धीक उल्लेख अछि – चम्पकक अनुज कनकक। ई जानि जे राजा अत्यन्त संगीत प्रेमी छथि, ओ राजासँ संगीतक पाठ सीखि राजाक कृपा प्राप्त कएल । कनककेँ बहुत नीक पुरस्कार भेटल, एक लाख स्वर्ण मुद्रा । एतेक टा पुरस्कार अप्रत्यक्ष रूपेँ कल्हणक परिवारक उच्च स्थितिकेँ प्रदर्शित करबैत अछि । ई निष्कर्ष

पुरालेखक एक दोसर अनुमानक संग जुटि कऽ इहो स्पष्ट करैछ जे कल्हण कहियो जीविका लेल कोनो कार्य नहि कएल आ अपन जीवन काल मे कखनहुँ आय-स्रोतक वा कमीकेँ अनुभव नहि कएल ।

'राजतरंगिणी' सँ विदित होइछ जे कनक अपन राजकीय संरक्षकक स्मृतिक प्रति इमानदार बनल रहलाह आ राजाक मृत्युक बाद वाराणसी चलि गेलाह; जत जीवनक शेषांश ओ शान्ति ओ मनन मे व्यतीत कएल । जतय धरि चम्पकक प्रश्न अछि, जाहि रूपेँ एकाएक हिनक परिचय पुरालेख मे कराओल जाइछ (vii, ९५४) ओहिसँ हिनका दूनूक बीचक सम्बन्धेटा स्पष्ट नहि होइछ; अपितु ई कल्हणक सरल स्वभाव दिस सेहो इंगित करैछ । ओ बुझलनि जे समकालीन समाजसँ अपन पिताक जे एक प्रसिद्ध व्यक्ति छलाह बेसी जानकारी देब आवश्यक नहि छलैक । सम्बन्धित पद्य एहि रूपक अछि - ''नन्दी क्षेत्रमे प्रत्येक वर्ष सात दिन बिताय चम्पक अपन सम्पूर्ण जीवनमे अर्जित धनकेँ सफल बनौलनि ।'' 'राजतरंगिणी' मे कएल गेल तीर्थक विशद विवरणसँ स्पष्ट अछि जे नन्दी क्षेत्रक तीर्थ सभक परम भक्त अपन पिताक संग कल्हण सेहो बाल्यावस्था मे एहि पवित्र स्थल पर गेल रहथि । तेँ एहिमे कोनहु सन्देह नहि जे कल्हण जातिसँ ब्राह्मण छलाह । ब्राह्मण कुलोत्पन्न पण्डित लेल संस्कृतक ज्ञान तद्विशिष्ट गुण छल, तेँ 'राजतरंगिणी' मे प्रदर्शित गम्भीर विद्वत्ता कल्हणक ब्राह्मण वंशक होयबाक अतिरिक्त प्रमाण अछि । तीन शताब्दीक बाद जोनराज कल्हणकेँ द्विज मानलन्हि ।

कल्हणक जन्मस्थानक प्रसंगमे 'राजतरंगिणी' अप्रत्यक्ष रूपे इंगित करैछ । ई अपन काका कनकक एक सत्कार्यक उल्लेख करैत छथि, जे कोना ओ अपन जन्मस्थान परिहासपुरमे बुद्धक एक विशाल प्रतिमाके राजा हर्षक आदेश सँ ठीक समय पर आबि विध्वंस होयबासँ वचौलनि । विवरणक प्रति ध्यान देलासँ स्पष्ट होइछ जे कनक प्रायः कोनहु बौद्ध सम्प्रदायमे दीक्षित भऽगेल रहथि । एकर द्वारा बौद्धमतक प्रति कल्हणक स्वयं सहिष्णु रहबाक बात सेहो स्पष्ट होइछ । परिहासपुर कल्हणक परिवारक मूल वासस्थान छल, ई विषय 'राजतरंगिणी' मे वर्णित हिनक पवित्र स्थल आ ओहि क्षेत्रक भू - रचनाक विशद् वर्णनसँ स्पष्ट अछि ।

कल्हण अत्यन्त अभिजात कुलक छलाह से निश्चित । अपन पिताक जीवन ओ चरित्रसँ अत्यधिक प्रभावित छलाह कल्हण आ तेँ अपन जन्म आ वंशक गौरव हुनका रहनि । ब्राह्मण कुलक आ शैव मताबलम्बी रहैत हिनक परिवार बौद्धमतक प्रति सहिष्णु छल । ब्राह्मण होएबाक कारणेँ कल्हण शैवमतक परलोकवादी सिद्धान्त आ संगहि सम्बद्ध तान्त्रिक सम्प्रदायसँ परिचित रहथि । एहि विषयक अनुमान कश्मीरमे शैवमतक प्रमुख व्याख्याता भट्ट कलट्टक प्रति हिनक सम्मानपूर्ण उल्लेखसँ कएल जाइछ । 'राजतरंगिणी'क प्रारम्भमे शिव-स्तुति अछि --''अलंकरण रूपक अनेक नागमणिक पूँज्जीभूत आभासँ

मण्डित'' - अपन अर्द्धनारीश्वर रूपमे ''जनिक आधा अंग अपन पत्नीक अंग सँ सायुज्य छनि '' । एहि स्तुतिक महत्व एहि विषय मे अछि जे कल्हणक समयमे शैवमतक प्रचार प्रसार छल ।

ब्राह्मणक शैवमतसँ हिनक परिवारक घनिष्ठ सम्पर्क रहितहुँ कल्हण 'राजतरंगिणी' मे सर्वत्र बौद्धमतक प्रति सौजन्यपूर्ण झुकाव प्रदर्शित करैत छथि ।[1] बौद्धमतक प्रचार करबाक वास्ते, विहार आ स्तूप बनएबाक लेल अशोकसँ लए कल्हणक समकालीन नरेश धरिक ई प्रशंसा करैत छथि संगहि निजी व्यक्ति सबहिक द्वारा बनाओल संस्था सभक स्थापनाक सेहो ओही तरहें मनोयोग पूर्वक विवरण प्रस्तुत करैत छथि । ''सभ प्राणीक सुखदाता, पूर्ण उदारता आ भावनाक उदात्तताक मूर्त्तिमान बोधिसत्व वा बुद्धक बेर-बेर उल्लेख करबामे कल्हण संकोच नहि करैत छथि । ओसभ (बौद्ध) हिनका लेल चरम उत्कृष्टताक सत्व अछि जे पापी पर सेहो क्रोध नहि करैछ, अपितु ओकरा पर धैर्यपूर्वक दया करैत अछि ।[2] बौद्ध परम्परा आ शब्दावलीक विशिष्ट विषयसँ कल्हण पूर्ण परिचित रहथि से ज्ञात होइछ जाहि घाटी क्षेत्र मे उपलब्ध ब्राह्मणक आचार-संहिताक आधिकारिक। ग्रन्थ नीलमतपुराणमे बुद्धक जन्म-दिन कें उत्सवक रूप मे मनाओल जयबाक आ चैत्य सभकें सजाक हुनक मूर्त्तिक पूजा आराधनाक निर्देश होइक ओहि भूखण्ड सँ एही प्रकारक उदार-भावनाक आशा छलैक । कल्हणक सहिष्णुता आओर आगाँ बढ़ि गेल - ओ मूर्त्तिभंजक आ मूर्त्तिपूजाक विरोधी धरि पहुँचि गेल–हेतु जे एक इतिहासकारक रूपमे ओ स्वतन्त्र आ निष्पक्ष पर्यवेक्षकक भूमिकाक निर्वाह करैत छथि ।

बौद्ध लोकनिक सदृश, *कर्म* मे कल्हणक विश्वास पुरालेखमे प्रमुख स्वर अछि। 'राजतरंगिणी' मे *भाग्य* वा *नियतिक* प्रति बेर - बेर उल्लेख अछि । महत्वाकांक्षा, वासना आ अपराधक तात्विक शक्ति मानवीय कर्मकें उत्प्रेरित करैत प्रतीत होइछ, आ पूर्णता मे एक - दोसर कें कटैत अछि । तथापि कल्हण लेल प्रत्येक युगक अपन आदर्श एहू सभ अराजकतासँ उद्भूत होइत प्रतीत होइछ । तैं प्रत्येक *तरंगक* प्रारम्भिक पद्य मे कल्हण जीवनक रहस्य आ रूपकक प्रसंगमे किछु मत व्यक्त करैत छथि, जे ओहि तरंगक मूल स्वरकें ध्वनित करैत छैक । ओही तरहें प्रकृतिक दृश्यावलीक वर्णन करैत ओ दार्शनिक साधारणीकरण करैत छथि । ओ बेसी काल कल्हण अन्तमे होमएबला प्रलयक उल्लेख सेहो कए दैत छथि ।

कल्हण अपन धार्मिक दृष्टिकोण मात्रमे सहिष्णु नहि रहथि, अपितु ओ अन्य रूपक संकीर्ण सिद्धान्तवाद आ राष्ट्रीयताक अवगुणसँ सेहो मुक्त रहथि । ई. कल्हणक विशेषता

---

१. चीनी तीर्थयात्री औकांग, जे ७५९ ई. मे कश्मीर आएल रहथि, ओतय हिनका तीन सय बौद्ध मठ भेटलनि

२. स्टीन एम. ए., कल्हणक 'राजतरंगिणी', अनुवाद, खण्ड-१, आमुख

छल जे ओ कश्मीर घाटीक *त्रिग्रामी मे* अपन राजाक विश्वासघातपूर्ण हत्याक बदला लेवाक हेतु कश्मीरक कठिन यात्रा करएबला बंगाली योद्धा सभक सेहो प्रशंसा कएल। ओ 'गौड (बंगाल) क ओहि वीर व्यक्ति सभक प्रशंसा कएल, जे अपन जीवनक बलिदान देल - "ओकर रक्तक धार सँ सामन्त - राजाक प्रति ओकर सभक असाधारण स्वामिभक्ति देदीप्यमान भऽगेल। आ पृथ्वी धन्य भए गेलीह।"

कल्हण वीर - पूजक नहि रहथि, 'राजतरंगिणी'मे कीर्त्तिधवलित वीरपुरूष वा वीरांगना नहि छथि। एही तरहें कल्हण पर जाति-गौरवक आरोप सेहो नहि लगाओल जा सकैछ। ओ पुरोहित - वर्गक कटु आलोचक रहथि आ हिनका लोकनि द्वारा राजकार्यमे टाँग अड़यबाक प्रति ओ अपन घृणा व्यक्त करैत छथि। ओ लिखैत छथि जे मात्र जाति वा जन्मक आधार पर केओ व्यक्ति कोनो नागरिक वा सैनिक पद पर नियुक्त होएवाक अधिकारी नहि होइछ। निम्नजन्मा डोम आ उच्चवर्गीय ब्राह्मण दुनू सैनिक बनैत रहथि तथा सेनापतिक उच्च पद पर सेहो पहुँचैत रहथि। एक क्षत्रिय राजा द्वारा रोहतकक एक बनिया स्त्रीसँ विवाह करबाक उल्लेख अछि। बौद्ध युगमे अस्पृश्यताक असरि बड़ कम भऽगेल रहैक, जे उदार परम्परा एखनहुँ कश्मीर-घाटीमे विद्यमान अछि। यद्यपि अपन परिवार आ.प्रदक कारणें कल्हणकेँ अधिकारीवर्गसँ सम्पर्क छलनि ओ हुनका सभक लेल पक्षपात नहि प्रदर्शित करैत छथि, एतेक तक जे ब्राह्मण कुलक 'कायस्थ' लोकनिक दुर्गुण सभक आलोचना करैत छथि।

कल्हण अपन विषय मे जतेक मौन रहथु, हिर्नक विस्तृत ज्ञानकेँ स्पष्ट करएबला पर्याप्त प्रमाण 'राजतरंगिणी' मे उपलब्ध अछि जे सिद्ध करैछ जे हुनका पारम्परिक शास्त्रक विद्यमान शाखा सभक पूर्ण ज्ञान रहनि। ओ 'रघुवंश' आ 'मेघदूत' सदृश उच्च कोटिक ग्रन्थ मात्रसँ सुपरिचित नहि अपितु 'रामायण' आ 'महाभारत' सन महाकाव्यक गहन अध्ययन सेहो कएने रहथि - जाहि दुनू ग्रन्थक उपयोग ओ पुरालेखनक ऐतिहासिक घटनासँ समानता देखाकऽ केलनि अछि। पाण्डव आ कौरवक युद्ध एवं सम्बन्धित पुराणकथाक चारूदिस घुमैत आख्यानकेँ कल्हण अपन पूर्वज ओ समकालीने जकाँ इतिहास बुझैत छथि। जेना कि स्टीन[1] लिखने छथि - "भारतीय मस्तिष्क लेल ऐतिहासिक घटनासँ एसि पौराणिक कथामे वर्णित घटनाक अन्तर एतबहि अछि जे पौराणिक कथा सभ मे वीर-युगक चमक आ धार्मिक आधारक कारणे लोक बेसी रूचि प्रदर्शित करैत अछि। हम ई अनुमान निःसंकोच लगाए सकैत छी जे एही पवित्र महाकाव्य सभक अध्ययनसँ कल्हण अपन काजक चयन करबा मे प्रत्यक्षतः प्रभावित भेल रहथि।"

कल्हणक साहित्यिक शिक्षा-दीक्षाक पर्याप्त प्रमाण उपलब्ध अछि, जकरा बलेँ ओ कवि - इतिहासिकारक भूमिकाक निर्वाह करबामे समर्थ भेलाह आ कश्मीरी ओ सम्पूर्ण

१. स्टीन, एम. ए. : कल्हणक 'राजतरंगिणी'क अनुवाद, प्रस्तावना

भारतीय साहित्यआ इतिहास पर अपन अमिट प्रभाव छोड़लनि । अपन समकालीन ओ पूर्ववर्ती अनेक कवि आ विद्वानक विषयमे ओ जे चर्चा कएल, से हिनका नीक शिक्षा - दीक्षाक पृष्ठभूमिकेँ स्पष्ट करैत संस्कृत - साहित्यिक छात्रक लेल अमूल्य सिद्ध भेल अछि । ई निश्चित अछि जे ११म ईस्वीक प्रायः आठमे दशकमे कश्मीरी कवि विल्हण द्वारा रचित *विक्रमांकदेव चरित* कल्हण पढने छलाह । एहि प्रसंगमे कल्हणक समकालीन कवि *मंख* द्वारा रचित श्रीकण्ठचरितमे कवि कल्याणक उल्लेख महत्वपूर्ण अछि । कल्याणक काव्य-कौशलक विषयमे *मंख* कहैत छथि जे ओहिमे विल्हणक समस्त काव्य - कौशल दर्पण सदृश प्रतिविम्बित अछि । मंख आख्यान आ कथाक अध्ययन मे कल्याणक अनन्य उत्साह आ रूचिक चर्चा सेहो कयने छथि । ई उल्लेख कल्हणक अतिरिक्त आओर ककरो लेल नहि भए सकैत अछि, संस्कृत - शब्द 'कल्याणक' प्राकृत रूप 'कल्हण' थिक । श्रीकण्ठचरित पर लिखल गेल अपन टीका मे जोनराज *कथा* सभमे कल्हणक गहन अभिरूचिक उल्लेख करैत छथि, एतऽ कथा सँ महाभारत आ दोसर महाकाव्यक कथासभ बूझल जयबाक अछि। प्राकृतक आधार पर 'कल्हण' एवं 'कल्याण'मे अर्थसाम्य स्थापित भेलासँ कल्हणक विद्वत्ता आ उदार पृष्ठभूमि आओर बेसी सिद्ध भए जाइछ । ('कल्याण' संस्कृत मे एकर अर्थ शुभ-वोधक अछि) ।

एहि तरहेँ 'राजतरंगिणी'क कथा-सभमे प्रचुरतासँ उपलब्ध कल्हणक विशिष्ट गुण हिनक जीवनक परिस्थिति ओ वातावरणक सन्दर्भ मे, विशेष महत्वक अछि । समकालीन घटना पर हिनक दृष्टि आ संगहि हिनक व्यक्तिगत राजनीतिक मतक हमरा लोकनिक प्रशंसा करए पड़त । जाहि सूक्ष्मतासँ ओ सैन्य - संचालनक वर्णन कयने छथि, ताहिसँ व्यक्त होइछ जे ओ युद्ध - विद्या मे निपुण रहथि । भूरचनासँ हिनक घनिष्ठ परिचय स्पष्ट करैछ जे स्वतंत्र साधनसम्पन्न व्यक्ति होएबाक कारणे ओ पर्यटन खूब कयने रहथि मुदा, एहि सभसँ ऊपर अछि हुनक निर्णय लेबाक स्वतन्त्रताक गुण जे कल्हण अपन समयक घटना सभक वर्णन आ व्यक्तिसभक चर्चामे व्यक्त करैत छथि ।

कल्हण ओ हिनक समय

'राजतरंगिणी'क अधिकांश भागमे ओहन घटना सभ सम्मिलित कएल गेल अछि, जे कल्हणक समय मे घटित छल। जे किछु ओ स्वयं देखलनि वा सुनलनि आ जे किछु जीवन्त स्मृति द्वारा गोचर भेलनि, ओएह एतेक विशद रूपसँ लेखनीबद्ध कएल गेल हिनक समकालीन वा पूर्ववर्ती कोनहु अन्य लेखक तत्कालीन कश्मीरक राजनीतिक ओ सामाजिक अवस्थाक एतेक स्पष्ट चित्र अंकित नहि केलनि अछि। कश्मीर घाटीक प्राचीन भूरचना विषयक हिनक विस्तृत ज्ञान इतिहासकार ओ भूगोलज्ञ लेल वास्तवमे एक सोनाक भण्डार अछि। तत्कालीन समान आ व्यवहारक विषयमे हिनक विचार स्वयं कल्हणक चरित्र ओ व्यक्तिगत सम्बन्धक कुंजी प्रदान करैछ।

एहि घटना सभक वर्णनक शैलीसँ स्पष्ट होइछ जे जाहि समय ओ लिखलनि, ताहि समयमे हिनका जीवनक यथेष्ट अनुभव भए गेल रहनि। 'राजतरंगिणी'क रचना ११४८-५० ई.क बीच कएल गेल छल, जेनाकि कल्हण स्वयं कहैत छथि। उदाहरणार्थ, सुस्सल (१११२-२८ई.)क राज्यकाल मे घटित घटनाक वर्णनक शैली स्पष्ट करैछ जे ओ तत्कालीन मनुष्य आ तकर प्रवृत्तिक वीक्षक रहथि। तेँ हिनक जन्मतिथिकेँ शताब्दीक प्रारम्भमे राखल गेल अछि।

कल्हणक जीवनक अधिकांश भाग जाहि समयमे बीतल, ओ कश्मीर लेल गृहयुद्ध आ राजनीतिक कलहक एक दीर्घ अवधि छल। बारहम सदीक आरम्भ होइतहिँ कश्मीरमे महत्वपूर्ण राजवंशीय उल्क्रान्ति भेल, जाहिसँ देशक राजनीतिक जीवन प्रभावित भेल। राजा हर्ष, जनिक राज्यकाल (१०८९-११०१ ई.) छल, प्रारम्भमे समृद्ध ओ शान्ति स्थापित केलनि मुदा ओ अपन अविचारी स्वभावक (नीरो जकाँ) स्वयं शिकार भए गेलाह। राजा द्वारा सताओल गेल दमरसक जमीन्दार विद्रोह कएल आ हर्ष मारल गेलाह। सत्ता हथि आबऽवला, लोहर नामक स्थानक रहनिहार दूटा भाई, उच्चल आ सुस्सल, राज्यक विभाजन कय देल।

जेठ भाइ उच्चलक अधीन घाटीक शासन छल, लोहर एवं समीपवर्ती पर्वतीय क्षेत्र सुस्सलक अधीन रहल। अत्यन्त शीघ्रे दुनू विद्रोही राजकुमार कश्मीरक सिंहासन लेल प्रतिस्पर्धी बनि गेलाह। उच्चलक शासनकाल सिंहासन पर मिथ्या अधिकार जतौनिहार आ राजनीतिकं समस्या सँ आक्रान्त रहल; जकर देशक आर्थिक स्थिति पर विपरीत प्रभाव पड़ल। उच्चलक हत्याक बाद घाटी मे अनेक मिथ्या दावेदारक शासन रहल आ अन्तमे

डमार-प्रमुख गर्गचन्द्रक सहायतासँ सुस्सल अपन महत्वाकांक्षा पूरा कएल । हिनक शासन सेहो पूर्ण निरंकुश आ महलसँ शुरू होमएबला षडयंत्रसँ भरल छल, शासन पर एकर प्रतिकूल प्रभाव पड़ल । सुस्सलकेँ किछु मासक लेल लोहार भागि जाए पड़लनि, परन्तु शक्तिशाली डमारक मध्य एकता-आपसी कलहक कारणे, ओ १९२१ ई. मे पुनः सिंहासन पर अधिकार कए लेल । सुस्सलक शासनकालक अग्रिम सात वर्षमे निरन्तर गृहयुद्ध चलैत रहल । १९२८ ई.मे हर्षक पौत्र भिक्षाचरकेँ मारबाक षडयंत्रक फलस्वरूप सुस्सल स्वयं मरि गेलाह । तत्पश्चात् हिनक पुत्र जयसिंह राजा बनलाह आ ओ डमार शासक सभक मध्य नीति अपनाए राज्यमे शान्ति बनौने रहलाह । भीतरी शान्तिक संक्षिप्त अन्तराल शीघ्रहिँ विध्वंस आ विग्रहक शक्तिसँ पुनः आक्रान्त भऽगेल ।

कल्हणक 'राजतरंगिणी' मे वर्णित अन्तिम किछु वर्ष (११४५ सँ ११४९ ई.) ई आभास दैत अछि जे जयसिंहक शासनक एहि कालमे अपेक्षाकृत शान्ति रहल । ओ अपन ज्येष्ठ पुत्र गुल्हणकेँ लोहारक राजा बनाए देल । भिक्षाचर पकड़ल गेल आ ११३० ई. मे मारल गेल । सिंहासनक अनेक मिथ्या दावेदारक शमण कएल गेल । कल्हण कहैत छथि जे कोन तरहेँ एहि अवधिमे राजा अनेको पवित्र कार्य कएल तथा राजकुलक अनेको सदस्य आ मंत्री सभ हिनक अनुसरण कएल ।

उपर्युक्त घटनावलीसँ स्पष्ट होइछ जे कल्हणक जीवन-काल शासनमे अनेक आन्तरिक विग्रहक बीच व्यतीत भेल, परन्तु अशान्त वातावरणसँ हिनक लेखन-कार्यमे अनावश्यक विघ्न नहि पड़ल । की राजनीतिक घटनाक सतत परिवर्त्तन कल्हणक जीवन ओ कार्यमे उल्लेखनीय विघ्न नहि उपस्थित कएलक - एहि विषयक अध्ययन रूचिकर भए सकैछ । परवर्त्ती राजा लोकनिक अनेक अधिकारी आ धूर्त्त षडयंत्रकारीक बीच कल्हणक पिता चम्पकक नाम नहि अबैछ । चम्पक हर्षक शासन कालमे एक अत्युच्च पद पर आसीन रहथि । 'राजतरंगिणी' सँ ई स्पष्ट नहि होइत अछि जे की हर्षक मृत्युक बाद चम्पक स्वेच्छासँ अवकाश ग्रहण कएल ?

'राजतरंगिणी' सँ ई पूर्णतः स्पष्ट अछि जे कल्हण कोनहु राजाक अधीन कोनहु पद पर कार्य नहि कएल । ओ कोनहु राजाक छत्रच्छाया मे नहि रहलाह, यद्यपि एहन लगैछ जे राजदरबारमे हिनक महत्व रहनि । 'राजतरंगिणी' मे ई स्पष्ट करएबला किछु नहि अछि जे ओ संरक्षकक प्रशंसा करबाक अलिखित परम्पराक पालन कएल, कारण हिनक संरक्षक केओ नहि रहथि । एहि विषयक संकेत वा उल्लेख सेहो नहि अछि जे ओ अपन रचना जयसिंह (जनिक शासनकाल मे 'राजतरंगिणी' पूर्ण भेल) वा कोनो अन्य पूर्ववर्ती राजाक आदेशसँ लेखनीबद्ध कएल । जाहि सामान्य शब्दावली मे ओ जयसिंहक उपलब्धिक प्रशंसा करैत छथि ओहिसँ प्रतीत होइछ जेना ओ सामान्य कार्य कए रहल होथि, हँ कने दक्षिणपक्ष भए । तथापि ओ जयसिंहक पिता सुस्सलक गम्भीर दोष सभक दिस

इंगित करैत छथि आ भिक्षाचारक शौर्यक प्रशंसा करैत छथि, जनिक आचरणक कारणें जयसिंह आओर हिनक पिताकेँ कष्टकर समय देखय पड़लनि । 'अपन सेनाकेँ कठिन परिस्थितिसँ त्राण दिएनिहार, अथक परिश्रम केनिहार, आत्मश्लाघारहित, कठिन परिस्थितिसँ लड़निहार भिक्षाचार सन बहादुर व्यक्ति सदृश कतहु नहि भेटि सकैछ (८-१०१७) । ओही तरंगक १७७६म श्लोकमे आगाँ कहल गेल अछि - 'दीर्घकालीन अव्यवस्थाक क्रममे जाहि व्यक्ति सभक लेल घैंटक ढैंगे जकाँ नहि अपितु ओकर सभक बर्बादीक कारण छलाह अन्तमे ओएह सभ । हिनक वीरता पर आश्चर्यचकित होइत हिनक प्रशंसा केलनि । ओहि समयक दोसर मिथ्या अधिकार जतौनिहार मात्र भोज कल्हणक सहानुभूतिक पात्र बनलाह । कश्मीरी लोककेँ नीकजकाँ बुझबाक अनेक अवसर भेटलासँ ओ ओकरा सभक शब्दाडम्बरहीन यथार्थ चित्रण करैत छथि, कारण जे ओ मात्र इतिहासकार नहि रहथि, अपितु कवि सेहो रहथि, जनिका वनाच्छादित घाटी, ओकर उन्नत हिमाच्छादित पर्वत, हरीतिमा, स्वच्छ निर्झर ओ नदीसँ पूर्ण स्नेह रहनि । पुरालेखमे ओ अपन समयक मनुष्य समाज आ व्यवस्थाक सप्राण वर्णनक बलेँ अतीत केँ पुनर्जीवित कऽदैत छथि ।

सूक्ष्मदर्शी होएबाक कारणें ओ कोनहु विषय पर ध्यान देब नहि छोड़ने रहथि । हिनका दृष्टिएँ तत्कालीन कश्मीरीमे शारीरिक ओ नैतिक साहसक कमी छल, विशेषरूपेँ समाजक निम्न श्रेणी मे । कश्मीरी सैनिकक मिथ्या आत्मश्लाघाकेँ ओ हास्यक विषय बनौलनि अछि । कहैत छथि जे कोन तरहें तुर्क सिपाही सँ भयभीत भए किछु भागि गेल, कखनहुँ तऽ समस्त शिविर छिन्न-भिन्न भए गेल आओर (तः ८.३२४) नायक "नाङरि सदृश अपन कटारकेँ नुकौने कुकूरक सदृश पड़ा गेल"। ई स्पष्ट अछि जे कल्हण अपन देशवासीक सामरिक वीरताक विषयमे उच्च विचार नहि रखैत छलाह आओर अपन समयक युद्धरत राजपुत्र लोकनिक बीच विश्वासघातक अनेक उदाहरणसँ उबल छलाह । दोसर दिस ओ युद्धरत राजन्यक पक्षधर राजपुत्र आ भाड़ा पर आयल भारतीय सैनिकक शौर्यक ओ अनेको अवसर पर प्रशंसा कएलनि अछि ।

शासकसभक बीच चलएबला उत्तराधिकार सम्बन्धी युद्ध आ राजदरबारक षड्यंत्रक प्रति अपन देशवासीक निष्ठुर उदासीनता दिस कल्हणक ध्यान गेलनि । ओ ओहि सामन्त डमारसभक आलोचना करैत छथि जे हर्षक पतनक कारण रहथि आ कल्हणक जीवन-काल मे कश्मीरी घाटी मे होमएबला राजनीतिक उथल-पुथलक कारण सेहो । यद्यपि अवंतिवर्मा आओर दिद्दा सदृश शक्तिशाली शासक लोकनि उजड्ड डमारसभकेँ दबएबाक प्रयास कएल आ किछु सफलतो प्राप्त कयल तथापि सामन्ती समाजक आर्थिक संरचनाक कारणे ओ सभ संवल पबितहिँ रहल । ओहि समाजमे जमीन्दारक उत्थान अपरिहार्य छल, जाहिमे खेत जोतनिहार जमीन्दारक आसामी छल ।

जमीन्दार नीक - बेजाय तरीकासँ राजस्व वसूल करैत छल आ साल मे एक बेर राजकीय अधिकारीकेँ दैत छल। कल्हण एकर उल्लेख करैत छथि जे कोन तरहें किछु डमार जमीन्दार जमीनक राजस्वसँ अत्यधिक धन-सम्पत्ति एकत्र कए लेल। कल्हण एहन-एहन अन्यायी जमीन्दारक असभ्यता आ उजड्डपन तथा हुनका लोकनिक कायस्थ करपरदार द्वारा खेतिहरक उत्पीड़नक तथ्य केँ देखार करैत छथि। ओ ब्राह्मण पुरोहितक राजनीतिक दृष्टिक परीक्षा करैत छथि, जे निर्बल शासककेँ अभीष्ट मार्ग पर अनबाक लेल ठकिकऽ प्रायोपवेशक (उपवास) सहायता लैत रहथि। दोसर अवसर पर, ओ हिनका लोकनिक हास्य करैत छथि, जे हिनक हठधर्मिता आश्चर्यजनक रूपसँ कायरतासँ प्रेरित अछि।

ललितादित्य (आ हिनका सन शक्तिशाली आनो शासक)क अधीन लोक दासक रूप मे रहैत छल। पूर्वोल्लिखित डमार सामन्त जकाँ आनो सामन्त जीवनक सर्वोत्तम वस्तुक उपभोग करैत छलाह। दरबारी आ उच्चवर्गीय व्यक्ति प्रसिद्ध कश्मीरी भोजनक आनन्द लैत छलाह; हिनका लेल उपलब्ध छल 'तइल मांस' आओर 'वर्फसँ सुशीतल कयल ओ फूलसँ सुगन्धित आनन्ददायक मदिरा जकर उपयोग प्राचीन कालहिसँ होइत छल। नीलमतपुराणमे उत्सव सभमे मद्यक उपयोगक वर्णन अछि। साधारण लोक साग (हरव) भात मात्र पर निर्वाह करैत छल, जे अकालक समय नहि भेटैत छलैक। अकालो कम नहि पड़ैत छलैक। 'राजतरंगिणी' सँ गरीब आ पीड़ित लेल कल्हणक ममता स्पष्ट होइछ। तरंग ४.३९२-३९४ मे ओ क्रूर आ कामी राजा वरादित्यक विषयमे कहैत छथि जे ओ, म्लेच्छक हाथें मनुष्य बेचथि ओ 'दास-व्यापारकेँ' 'म्लेच्छक योग्य' कार्यक संज्ञा देलनि अछि।

दसम शताब्दीक बाद कश्मीरक व्यापारिक समृद्धि जे कश्मीरक विदेशी व्यापार सेहो छल–क्रमशः अवनति पर चल गेल (एकर सर्वश्रेष्ठ काल सातम सँ नवम शदी धरि छल, जखन समीपस्थ पहाड़ी राज्य सभ पर कश्मीरक प्रभुत्व छल आ व्यापारिक मार्ग मध्य एशिया धरि पहुँचैत छल)। परिणामस्वरूप, कल्हणक समयसँ बहुत पहिनहिँ राज्यक धनी ओ शक्तिशाली वर्गक रूपमे व्यापारिक महत्व घटय लागल छल। 'राजतरंगिणी' मे उल्लिखित व्यापारी 'स्वभावसँ ठक' छथि। एकटा व्यंग्यात्मक टिप्पणी अछि –'जे व्यापारी छल सँ धनक उपार्जन करैत अछि ओ सतत पवित्र धर्म ग्रंथक पाठ सुनबाक लेल उत्सुक रहैत अछि[1]।'' व्यापारी वर्ग धूर्तपनी सँ धनार्जन पर उतरि आयल रहथ-कारण जे डमार सामन्त व्यापार करब शुरू कए देने छलाह।

कृषि आ व्यापारमे लागल व्यक्तिक अतिरिक्त आओरो लोक छल जे समाज मे

---

१. तरंग ८मे म्लेच्छकेँ सीमान्त जातिक रूपमे उल्लेख अछि, जे राजकुमार भोजक मित्र रहथि। म्लेच्छकेँ सम्मानजनक दृष्टिएँ नहि देखल जाइत छल; जे एहि विषयसँ स्पष्ट अछि जे कश्मीरी पण्डित एखनहुँ अपवित्र आ, नास्तिक लेल म्लेच्छ शब्दक प्रयोग करैछ। परन्तु कल्हण एहि शब्दसँ ग्रीक व्यक्तिक सेहो निर्देश कएने होथि से संभव। देखू पृ. ५३

11714.8
9.12.04
SHIMLA

विभिन्न कार्य करैत छल। शिक्षक, ज्योतिषी, चिकित्सक, श्रमिक, दोकानदार, मूर्त्तिकार, गाड़ी-चालक, पनिचक्की चलौनिहार आ मील चलौनिहारक उल्लेख 'राजतरंगिणी' मे भेल अछि। सैनिकक उल्लेख तऽ ढेरों अछि। एहि व्यावसायिक वर्ग सभमे सेहो विभिन्न शाखा प्रशाखा छल।

प्रशासन चलौनिहार राजाक अधिकारी कें दू प्रमुख वर्गमे बाँटि सकैत छी—कुलीन वर्ग आ कर्मचारी वर्ग (कायस्थ सेहो कहि सकैत छी) राज्यक उच्च अधिकारीक रूपमे कुलीन वर्गक व्यक्ति नीक वेतन लैत छलाह, किछु व्यक्तिकें जमीन ओ विपुल सम्पत्ति सेहो रहनि। कर्मचारीक अन्तर्गत किछु विशिष्ट अधिकारीक पदनाम अछि, गृहकृत्याधिपति, महत्तम, परिपालक, मार्गेश वा मार्गपति, शौल्किक, नियोगी आ नगर-दिविरस, गाम-दिविरस जनिक कार्य प्रायः राजस्व वा कर वसूलवाक रहनि। यद्यपि कायस्थ कें राजकीय कोष सँ वेतन भेटैत छलनि ओ सभ सन्दिग्ध रूपें अतिरिक्त आय प्राप्त कए लैत रहथि। कल्हण कहैत छथि जे राजा जयपीड़ (४.६२९)क शासनकाल मे कायस्थ लाचार प्रजाक सम्पत्तिक गबन करैत रहथि आ जे किछु भेटैत छल ताहिमेसँ किछुए अंश राजाकें दैत रहथि। ओ लोकनि दोसर राजाक शासनकाल मे सेहो आतबए गबन-उत्पीड़न करैत छलाह, सम्भवतः एहि लेल जे अनेक राजाक शासनकाल अल्पवीजी ओ अस्थायी छल आ एहि मे अनेको बेर नव-नव कर्मचारीक परिवर्त्तन कएल जाइत छल। जखनहिँ राजगद्दी पर नव शासक आसीन होइत छलाह, ओ अपन दुलरूआ सभकें नियुक्त करैत छलाह।

'राजतरंगिणी'क प्रारम्भिक तीन तरंगमे कायस्थक उल्लेख नहि अछि। चारिम तरंगक बाद नव - नव पदनामक संग एकर उल्लेख बढ़ैत गेल अछि। राजस्व आ कर प्राप्त करबाक लेल राजाकें देसी कर्मचारी नियुक्त करय पड़ैत छलनि -- कारण जे जनसंख्या बढ़बाक कारणें जमीन पर बेसी दबाब पड़ैत छलैक आ उपलब्ध कृषि - योग्य भूमिक पुनः बटबारा करऽ पड़ैत छलैक। कर्कोटक पतनोपरान्त जखन विदेशी व्यापार समाप्तप्राय भए गेलैक तखन राज्यकें अपन आय लेल मुख्यतया भूमिराजस्व मात्र पर निर्भर रहय पड़लैक। अचल सम्पत्तिक रक्षार्थ आ बेसीसँ बेसी कर प्राप्त करबाक लेल बेसी कायस्थ सभक बहाली करऽ पड़ैक।

कल्हणक ई कथन जे कायस्थ (८, २३८३) ब्राह्मण जातिक होइत छलाह, पूर्ण ध्यानाकर्षक अछि; हेतु जे एहिसँ ज्ञात होइछ जे कश्मीरमे कायस्थ कोनो विशेष जातिक नाम नहि छल। एहन प्रतीत होइत अछि जे कायस्थ पदक नाम छल जातिक नहि आ एहि पद पर कोनो जातिक लोक कें बहाली भऽसकैत छलैक। माली पर्यन्त (७.३९-४०) कायस्थ बनि सकैत छल। निम्न पदं पर नियुक्त कायस्थक उच्च पद पर पदोन्नति भए सकैत छलैक।

राजा उच्चल 'प्रजा - पालक' रहथि आ स्वभावसँ लोभी नहि रहथि (तरंग ८) । 'ओ मारूक आ भ्रष्ट' कायस्थ आ अन्य राजकीय कर्मचारी सभसँ प्रजाकेँ बचएबाक प्रयास कएल, ओकर मूलोच्छेद कयल । कायस्थ सभक दुर्दशाक वर्णन करैत कल्हण लिखैत छथि -

"वास्तवमे हैजा, पेट दर्द तथा द्यूत-क्रीड़ा सदृश कर्मचारी सेहो एहि संसारके सतबैत अछि आओर प्रजा लेल एकटा संक्रामक रोग सदृश अछि । (८८)"

"काँकोड़ अपन बापकेँ खा जाइछ दिवार अपन माएकेँ नष्टकऽ दैछ किन्तु एकटा कृतघ्न राजकर्मचारी अधिकार प्राप्त कए सभकेँ मारैत अछि । (८९)"

"राज्याधिकारी आ विषवृक्ष जाहि भूमि पर बढ़ैत अछि, ओकरहि अगम्य बनाए दैछ। (९१)"

"महत्तम सहेल आ अन्यकेँ पदच्युत कए राजा ओकरा जेल मे सनक कपड़ा पहिरबाक लेल बाध्य कएल । (९३)"

"एकटा-दोसर कर्मचारीकेँ नाङट कए गाड़ीसँ बन्हबा, ओकर आधा माथक केश कटबा ओहि पर कारी-चूनक टीका करवा देल । (९७)"

"ओकरसभक भ्रष्टताक प्रसङ्ग प्रजाक वीच ढोल पीटि कऽकहबाक कारणे आ ओकरा सभक माथ पर कारी-चूनक टीकाक कारणे ओ सभ पूर्ण रूपें अपयश उपार्जित कयल । (९८)"

मुदा एहन *कायस्थ* सभ सेहो रहथि, जे बुद्धिमानीसँ उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य करैत छलाह । एक वेर राजा ललितादित्य (तरंग - ४) मदिराक निशाँ मे रहथि । अपन राजधानी परिहासपुर सँ दूर प्राचीन नगर प्रवरपुर मे जरैत दीपकेँ देखि ओ अपन मंत्रीसभ के आदेश देलनि जे ओहि नगर केँ जराय देल जाय । ओ सभ एकर बदला मे घोड़ाक भूँसाक टाल केँ जराय देल, जाहिसँ निशाँ मे धुत्त राजाकेँ विश्वास भेलनि जे आज्ञाक पूर्त्ति भए गेल । दोसर दिन, ललितादित्य ठीक काज करबाक लेल एहि मंत्री सभक प्रशंसा कएल आ कहल – 'जखन हम निशाँ मे रही, तखन हमरा द्वारा देल गेल कोनहु मौखिक आदेश पूरा नहि कएल जाय ।" कल्हणक निम्नलिखित टिप्पणी आधुनिक युगक राजकर्मचारी लेल सेहो उपयोगी भए सकैछ–"ओहन अधिकारी निन्दनीय छथि, जे मात्र अपन स्वार्थ, वेतन आ आरामक लेल भूस्वामी राजाक अशोभनीय आमोद-प्रमोदकेँ बढ़ावा दैछ । एहन अवसर पर राजाक स्वामित्व ओहने जेहन स्वामित्व किछुए समयक लेल ककरहुँ कोनो बाजारू स्त्री पर रहैत छैक । ओहि उदात्त व्यक्ति द्वारा ई वसुन्धरा धन्य अछि, जे अपन जीवनक उपेक्षा कए कुमार्ग पर जएबासँ राजाकेँ बलपूर्वक रोकैत अछि ।"(३२१)

यद्यपि जाति प्रथा नहि रहय, 'राजतरंगिणी' मे अनेको निम्न जातिक उल्लेख अछि –निषाद, किरात, कैवर्त, डोम्ब, स्वपाक एवं चाण्डाल । ब्राह्मण सभ जखनसँ दोसर ठामसँ

कश्मीर घाटी मे अएलाह, तखनहि सँ विशेषाधिकार प्राप्त वर्गमे रहथि आ हिनका सभ सम्मान भेटैत रहनि । ओएह लोकनि राजाक मंत्री आओर सलाहकार रहथि । हिनका इच्छानुसार सैनिक आ राजनीतिक पद सेहो भेटि जाइत छल, यद्यपि एहिमे सँ अधिकांश व्यक्ति शास्त्रके पढ़ाए वा पौरोहित्य कए अपन जीविका चलबैत रहथि । मन्दिरक पुरोहित सुसम्पन्न होइत छलाह । हिनका राजाज्ञा (२, १३२; ५, ५८-६२) द्वारा मन्दिर सभसँ संलग्न गामक राजस्व भेटैत छल आ कखनहुकेँ ओ सभ फूल, धूप, आदि पूजा-सामग्री बेचैत रहथि (५, १६८) ।

निषाद सम्भवतः आदिवासी जाति छल । कल्हण[1]क अनुसार, एक दोसर निम्न जातिक व्यक्ति, किरात, जंगल मे शिकार कए अपन पेट भरैत छल । ओ कतेकहुँ चाण्डाल'क संग डोम जातिक चर्चा कयलनि अछि जे निम्न कोटिक काज करैत छल । कल्हण डोमके गायक आ संगीतज्ञ रूपमे सेहो उल्लेख करैत छथि -- जे सभ प्रायः लोकगीत गायकक रूपमे विद्यमान अछि ।

सामान्य रूपेँ,शेष भारतमे ज्ञात, चारि प्रमुख पारम्परिक जाति कश्मीरमे नहि छल। क्षत्रिय, वैश्य आ शूद्र सदृश जाति ओतय नहि रहय । कश्मीरी नागरिक अपन-अपन व्यवसायक आधार पर वर्गमे विभक्त छल । जेना कि कहि चुकल छी, डमार जाति खेतीसँ सम्बन्धित छल । उद्योग आ वाणिज्य व्यापारिक हाथ मे रहय,जकर प्रसङ्ग पहिनहि कहल गेल अछि। यद्यपि सम्पत्तिक - वितरण - प्रणालीमे राज्यक हाथ रहैत छल; प्राचीन कश्मीरमे राज्य निजी उद्योग वा सम्पत्तिमे बहुत कम हस्तक्षेप करैत छल । मुदा सम्पत्तिक उपार्जन लेल जे उत्तरदायी रहथि, से अपन परिश्रमक फलक उपभोग करबाक लेल एसगर नहि छोड़ल जाइत छल, अनेको एहन विशेषाधिकार - प्राप्त व्यक्ति रहथि, जे ओहिमे कमो - बेस अपन हिस्सा लैत छल आ ई व्यवस्था धन - वितरण - प्रणाली पर आधारित छल।

एहि पुरालेखक आलेखनक समय मे एशियाई बाहर सँ आबऽबला धर्म - योद्धाक सामना करैत छल, तखन लिखैत कल्हण एहन रराजा सभक आ अधिनायकक समूहक वर्णन करैत छथि, जे ब्राह्मण अनुयायी, दरबारी आ सुन्दरी ''चन्द्रमुखी वनिता'' सभक संग ओहि श्रीनगर आएल जकरा प्राचीन राजधानी प्रवरसेनपुरक समीप सम्राट अशोक बसौने रहथि । ओ नगरक ओहि सीमा-चिह्न सभक उल्लेख करैत छथि जे आइयो अछि आओर ई ओहि बीतल युगक दरबारी षडयंत्र ओ परस्पर-विनाशी युद्धक प्रसङ्ग पाठककेँ स्मरण करबैछ, जकरा बीच-बीचमे जँ शान्ति भेटैक तऽमात्र भन्दिर आ धार्मिक संस्था-नसँ । नगरक ओ सीमा-चिह्न अछि *गोप - पर्वत* (ओ क्षेत्र, जकरा एखन लोक *गुपकर*

---

१. जतय धरि 'चाण्डाल'क प्रश्न अछि, अल्बेरूनी आ कल्हण दुनू ई उल्लेख कररैत छथि जे चाण्डाल हत्याराक रूपमे भाड़ा पर प्रयुक्त कयल जाइत छल । तेँ आश्चर्य नहि जे कश्मीरी एखनहु अस्वच्छ आ घृणित व्यक्तिके 'चाण्डाल' कहैछ

कहैछ), जकर ऊपर अछि ज्येष्ठरूद्रक प्राचीन मन्दिर (शंकराचार्य मन्दिर); शारिका-पर्वत (हरि-पर्वत) आ आगाँ 'मार्त्तण्डक भव्य मन्दिर' ।

'राजतरंगिणी' कश्मीरी स्त्री सभक जीवनक नीक परिरचय दैछ । पिताक घरमे बिताएल जीवनक प्रारम्भिक अवस्थामे ओ सभ नीक ढंगक शिक्षा प्राप्त कए लैत छलि। ओ सभ संस्कृत आ प्राकृत दुनू धाराप्रवाह बाजि सकैत छलि । सार्वजनिक क्षेत्र मे रानी आ दोसर स्त्री सभक सफलताक उल्लेखसँ ई अनुमान कए सकैत छी जे ओकरा सभकेँ पर्याप्त शिक्षा-दीक्षा भेटैक । उदार सौन्दर्यवादीक रूपमे कल्हण स्वयं स्त्रीक रूप-सौन्दर्यक प्रशंसक रहथि । कालिदास सदृश ओ स्त्रीक सौन्दर्य पर अनुरक्त रहथि, विशेष रूपेँ स्कन्धक सौन्दर्य पर । प्रथम तरंग मे (२५३) ओ नाग जातिक अधिपतिक कन्याक उल्लेख करैत छथि जे– 'अत्यन्त सौन्दर्यमयी रमणी रहथि,' जनिक हाथ 'कमल सदृश' छलनि । 'आकर्षक नेत्र वाली ब्राह्मणक पत्नी अपन' नाम आडुरबला तरहत्थीक स्वर्णिम छाप 'नर पर छोड़ि देल, जे ओकरा पर मोहित भए गेल छलाह । तरंग ८ (३६६) मे उच्चलक रानी सभक वर्णन करैत छथि --''आह ! रहस्यमय हृदयवाली वनिता लोकनि ! सघन केशराशि नेत्रक रसमय निमंत्रण, गोल कठिन उरोज - एहि सभ गुणक स्वामिनी ई बनिता लोकनि गुहय अन्तःपुर वासिनी छथि - ककरहुँ आभासक परे ।'' स्त्रीगणक रहस्यमयताक प्रसङ्गमे लिखनिहार महान कवि लोकनिक परंपरामे ओ रानी सभक विषय मे आगाँ लिखैत छथि–''असतीत्व आ पतिघात मे प्रवृत्त रहनहुँ, ई स्त्रीगण सभ सुगमता सँ आगि मे कूदि जयबाक सामर्थ्य रखैत छथि । केओ स्त्री जाति पर विश्वास नहि कए सकैत अछि।''

नारी लोकनिक सौन्दर्य मात्र हिनक प्रशंसाक लक्ष्य रहय । स्त्री जातिकेँ स्वतंत्रता छलैक । आर्य लोकनिक स्त्री-पुरूषक समानता आ स्वतंत्राक सम्मान १२म ई. धरि केलनि अछि । ई सम्भव अछि जे कश्मीरमे कानूनी रूपेँ स्त्रीगणकेँ सम्पत्तिपर किछु अधिकार आ स्वतंत्रता प्राप्त छलैक । ई मनोरंजक बात अछि जे संस्कृतमे पर्दाक लेल कोनो शब्द नहि अछि -- एकर प्रथा आ प्रयोग मुसलमान द्वारा भारतमे आयातित भेल । पुनः संस्कृत भाषा मे 'हरम' लेल कोनो शब्द नहि छल । शेष भारत सदृश कश्मीरक राजा सभक सेहो अनेक पत्नी रहैत छल, जे अन्तःपुर वा शुद्धान्त मे रहैत छलीह । कल्हणक 'राजतरंगिणी' एकर साक्षी अछि जे ओहि समय स्त्रीगणक कोनो प्रकारक पृथक्करण नहि रहय आ ने भिन्न रूपेँ ओ पर्दामे राखल जाइत छलि । कल्हण उल्लेख करैत छथि जे कोन तरहे प्राचीन विधि ओ परम्पराक पालन करैत राज्याभिषेकक समय कश्मीरक रानी सभ सेहो पवित्र जलसँ अभिसिंचित कएल जाइत छलीह आ रानी सभक निजी सलाहकार, स्वीकृत धन आ अलग सँ खजांची रहल करैत छल । अपन सलाहकारक सहायतासँ रानी राजकीय मामलामे सक्रिय भाग लैत छलीह । तेँ आश्चर्य नहि जे दिद्दा, सगन्धा, सूर्यमती आ दोसर रानी सभ शासन - कार्यमे पुरूषे - तुल्य दक्ष छलीह । कल्हण कहैत छथि जे रानी सभसँ

निम्नो स्तरक स्त्री राजक शासन मे सक्रिय छलि । रानीक चयनमे जाति पर ध्यान नहि देल जाइत छल। राजा चक्रवर्मन (९२३-९३३ ई.) एक डोम स्त्री सँ विवाह कएने रहथि । ओ ओकरा पटरानी बनौलनि, जकरा चामर डोलायल जायवला सन विशेषाधिकार प्राप्त रहैक (५, ३८७) । कल्हण लिखैत छथि जै कोन तरहें श्रीनगरक समीप रमास्वामीक विष्णुक पवित्र मन्दिरमे ओ डोमिन रानी राजकीय सम्मान सहित आबय आ कोन तरहें ओकर सम्बन्धी सभ मंत्री बनाओल गेलैक । वस्तुतः एहि विवाहक समर्थक व्यक्ति सभ उत्तरवर्ती राजागणक संत्री सेहो बनल । कल्हण ललितादित्य सदृश्य यशस्वी राजा आ हुनक भाई चन्द्रपीडक कोनो अवगुणक उल्लेख नहि कएल, जे दिल्लीक समीप रोहतकक एक 'तलाकशुदा बनिया स्त्रीसँ उत्पन्न राजपुत्र रहथि ।

विधवासँ ई आशा कएल जाइत रहय जे ओ पवित्र आ अनासक्त जीवन व्यतीत करत, आभूशण आ भड़कदार वेशभूषा सहित दोसर कोनहु भोग-विलासमे अनुरक्त नहि होयत (८, १९६९) । एक स्थान पर ई उल्लेख अछि जे मृत पतिक अचल सम्पत्तिक उत्तराधिकार विधवाकेँ (पुत्र सभकेँ नहि) भेटल । एहन स्त्री सभक विषयमे कल्हण कोनहु मत व्यक्त नहि कएलनि ; स्पष्ट अछि जे ओ सती (पतिक चिता पर जरिकऽ मरब) नहि बनल । ओ सतीप्रथाक प्राचीनताक प्रसङ्ग कहैत छथि आओर उदाहरणक लेल राजा शंकरवर्मन (५, २६६)क मृत्यु पर रानी सुरेन्द्रवती आ दोसर दुइ गोट रानीक सती भऽ जयबाक उल्लेख करैत छथि । त्रैलोक्यदेवी, सूर्यमती आ कुमुदलेखा नामक रानी सभ चिता मे प्रवेश कएल । एही तरहे उच्चलक शवदाह (८, ३६८) भेलाक किछु दिनक बाद जयमती अग्निमे प्रवेश कएल । सती-प्रथा मात्र राजवंश धरि सीमित नहि छल । कल्हणक अनुसारें कखनहु काल वेश्या सभ आ रखैल सेहो अपन -- राजा, मंत्री वा अन्य उच्चधिकारी प्रेमीक लेल सती भऽजाइत रहय । तरंग ८ (४४८) मे एक उल्लेख अछि जे दिल्हमट्टाकी अपन भाइक संग अग्निमे प्रवेश कऽगेलि ।

स्थितिक दोसर पक्षक उल्लेख सेहो अछि । स्त्री लोकनिक किछु वर्गमे विद्यमान अतिशय अनैतिकताक उदाहरण 'राजतरंगिणी' मे भरल अछि । मन्दिरमे गीत ओ नृत्य करबाक लेल देवदासीक रूपमे युवती कन्या केँ समर्पित करबाक भारतीय प्रथा कश्मीरमे सेहो रहय । मन्दिरसँ कोनहु देवदासीकेँ अपन 'हरम' मे लए जएबाक राजागणक विशेषाधिकारक उल्लेख सेहो अछि ।

स्त्रीलोकनिक अवगुणकेँ नीक जकाँ लक्ष्य करैत कल्हण ओकरा आ ओकर प्रेमी सभक गोपनीय विषयक पोल सेहो खोलैत छथि । युवा सुगन्धादित्य (तरंग ५) राजाक दुइ रानीकेँ ओही प्रकारेँ सन्तुष्ट करैत रहय, जेना 'घोड़ा घोडीक जेरकेँ करैत अछि' ।

"दिन प्रतिदिन ओ एकक बाद दोसरक सेवामे उपस्थित रहैत छल; हिनक

विलासिताकेँ बढ़एबाक लेल दुइ गरीब स्त्रीक बीच स्थित एक भोजन-पात्रक समान ।" (२८५)

"अपन - अपन पुत्र लेल राजगद्दी प्राप्त करबाक उद्देश्य सँ एक-दोसरसँ प्रतिस्पर्धा करैत, दुनू (रानी) मानदेयक रूपमे बहुमूल्य पुरस्कार दय अपन मंत्री केँ अपना संग मैथुन करबाक सुविधा प्रदान करैत छलीह ।

रानी दिद्दा (तरंग ६) वस्तुतः विरोधाभासक समुच्चय छलीह; ओ अनेक विहार बनबौलनि, किन्तु पुण्यक ई काज हिनक ' विलास - तृष्णा आ शक्ति - लिप्साक कारणे निरर्थक भऽगेल । ओ अपन शिशु - प्रपौत्रकेँ 'जादू - टोना' द्वारा मरबाए देल । कल्हण एहि प्रसङ्ग; निम्नलिखित तीक्ष्ण टिप्पणी दैत छथि– "पवित्र कुण्डमे रहितहुँ आ मौनव्रत धारण कयनहुँ ' तिमि' माछ अपन स्वजाति केँ खाए लैछ, मेधक जलकण परं जीवित रहयबला मयूर प्रत्येक दिन साप खाइत अछि, ध्यानमग्न योगी सन लागऽबला बगुला पानिक कछेर पर आबएबला निरीह माछकेँ अपन भोजन बनाए लैत अछि; पवित्र आचरण करितहुँ पापी पुनः कखन पापकए लेत, तकर कोनहु विश्वास नहि । (३०९)"

कल्हण नीच मनोवृत्ति वाली स्त्रीक भार्सना करैत "छिया छिया" कहैत छथि । महिला लेल 'शर्म शर्म' कहैत *कलश* क (तरंग ७) मृत्यु भेला पर हुनक प्रेमिका काया एकटा देहातीसँ फँसि गेलि;

" विलासमय जीवन बितएबासँ सुन्दर भऽगेल ओकर देह जे राजाक भोग जोकर छल एकटा ग्रामीणक संभोगक वस्तु बनि गेल; नीच वृत्तिक स्त्रीगणक नाश हो ।"

स्वामीकेँ वशमे राखऽबाली पत्नी' द्वारा अनेक गर्हित योजना (तरंग-७) क क्रियान्वयन करऽबला राजा अनन्त स्त्री (चरित्र) पर निम्न रूपेँ अपन मत व्यक्तकरैत छथि –"स्वाभिमान, कीर्ति, प्रभुसत्ता, शक्ति, बुद्धि आ धन, आह ! पत्नीक वश मे भय हम की-की ने गमौलहुँ (४२५)"

"व्यर्थहि मनुष्य स्त्रीगणकेँ पुरूषक नाङ रि मानैछ, अन्तमे पुरूषहिँ स्त्रीगणक हाथक खेलौना भऽजाइत अछि ।" (४२४)

जादू-टोना वा रूपक सम्मोहन द्वारा किछु स्त्रीगण पति केँ शक्तिहीन बनाए दैछ, किछु स्त्रीगण अपन पतिक बुद्धि आ पौरूषेक हरण नहि अपितु ओकर प्राणो लऽलैछ । (४२६)

उपर्युक्त अंश पढ़ि ई धारणा नहि बनबाक चाही जे कल्हण एक तरहेँ स्त्रीद्वेषी रहथि, तेँ नीचाँ (तरंग ७ सँ) उद्धत ओ अंश जे कालिदासक एहन वर्णनसँ तुलनीय, जाहिमे राजा हर्षक दरबारक कीर्त्तिमती महिला - मण्डलीक कल्हण - वर्णन करैत छथि :-*केतक* (आभूषण) स्वर्णपत्र सँ जटित खोपा पुष्पमाला सज्जित छल, *तिलक* (कुण्डल) क चंचल प्रसून सुन्दर मस्तकक आलिंगन करैत छलैक, काजरक रेखा सभ आँखिक कोणके कानसँ

जोड़ैत छल ; केशक जुट्टीक छोरसभ सोनाक तारसँ गूहल छल, अधोवस्त्रक छोर भूमि तक लटकल छलैक, स्तनसँ सटल लघु कंचुकी भुजाद्वयक ऊपरी हिस्साकेँ झपने छलैक, कुटिल भौंहवाली रमणीसभ कर्पूरचूर्ण सदृश उज्ज्वल मुस्कान नेने एम्हर - ओम्हर धूमि रहल छलि आ जखन ओ सभ पुरूषक वस्त्र पहिरैत छलि, तखन छद्मवेशी कामदेव सन सुन्दर लगैत छलि । (९२८ - ३१)

भारतक दोसर भागक लोक सभक अपेक्षा कश्मीरी बेसी अन्धविश्वासी रहथि, से सुविदित अछि । ओ सभ मनुष्यक जीवनकेँ प्रभावित करएबला जादू-टोनामे विश्वास करैत छल । कल्हणक वर्णन सभसँ ई सिद्ध होइत अछि जे प्राचीन कश्मीर मे जादू-टोनाक विपुल प्रचार छल । ओ जादू-टोनासँ प्रभावित अनेक राजा लोकनिक उल्लेख करेत छथि । एहन लगैछ जे कल्हण स्वयं, आनं लोक जकाँ, जादू-टोनाक प्रभावमे विश्वास करैत रहथि । वर्णित घटना सभमे अलौकिक शक्ति सभ पर हुनक विश्वास एहि मनोवृत्तिकेँ सिद्ध करैत अछि ।

कविक रूपमे कल्हण

'राजतरंगिणी' प्राचीन कश्मीरक विषयमे विस्तृत विवरण प्रस्तुत करबला एकटा महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक अभिलेख थिक। किन्तु कल्हणक ई पुरालेख ने तँ वोल्टेयर -कृत्त 'हिस्ट्री आफ एशिया' थिक आ ने गिबन-कृत्त -'डिक्लाइन एण्ड फॉल आफ दि रोमन एम्पायर'। कल्हणक रचना मात्र इतिहासक एक अमूल्य देन नहि, अपितु मुख्यतया एकटा काव्यकृति सेहो थिक। ओ अपनाकेँ इतिहासकारक संगहि कवि सेहो मानैत रहथि। ग्रंथक प्रारम्भिक प्रास्ताविक अध्यायमे अपन कार्यकेँ स्पष्ट करैत कहैत छथि :-

"वास्तविक कवि सभक ओ शक्ति जे अमृतक धारासँ बढ़िकए अछि, प्रशंसनीय अछि कारण जे एतद् द्वारा ई लोकनि अपना संग दोसरों व्यक्ति सभकेँ यशस्वी आ अमर बना दैत छथि। प्रजापति सदृश निपुण कवि लोकनिक अतिरिक्त अन्य के एहन अछि जे मानवचक्षुक समक्ष अतीतक वर्णन कऽ सकैछ ?"

अपन कृतिक प्रारम्भहिँमे कविक विशेषता सभक कल्हण द्वारा उल्लेख ओहि सम्बन्ध केँ रेखांकित करैछ जे ओ अपन काव्यकला आ दीर्घ आख्यानक विषयवस्तुक बीच स्थापित करऽ चाहैत छलाह।

कल्हणक साहित्यिक शिक्षा-दीक्षा अत्यन्त कठोर छल। ओ उच्च कोटिक साहित्यक विशेष अध्ययन कयने छलाह आ हुनका व्याकरण तथा अलंकारशास्त्र पर अधिकार छलनि। रामायण आ महाभारत सन महाकाव्यक संग अन्य ऐतिहासिक प्रबन्ध साहित्यक लेल हिनक आवेश अत्यधिक रहनि। परन्तु ओ दोसर काव्य सभक अपेक्षा महाभारतसँ बेसी उद्धरण देने छथि। कन्नौजक राजा हर्षवर्धनक वीर गाथा वाण-कृत्त *हर्षचरित* तथा विल्हण कृत्त *विक्रमांकदेवचरित* कल्हणकेँ अत्यधिक प्रभावित कएल। 'राजतरंगिणी'मे ओ पूर्वक कवि लोकनिक प्रति अपन आभार प्रकट करैत छथि, जनिकासँ ओ एतेक किछु सिखलनि–

"सत्कविक ओ अनिर्वचनीय गुण वन्दनीय आ (माधुर्य आ अमरत्व) अमृतक धारासँ श्रेष्ठ अछि किएक तँ एकरा माध्यमे ओ स्वयं अपनाकेँ आ तखन दोसरहुँ के यश आ अमरत्व प्रदान करैछ।"

कल्हणक समकालीन कवि मंख लिखैत छथि जे कथा ओ आख्यान सभक अध्ययन मे हुनक (कल्हणक) उत्साह छल। शासन-तंत्र, अर्थशस्त्र, ज्योतिष, तथा कामशास्त्र सहित दोसर शास्त्र तथा विज्ञानक हुनक ज्ञान सूक्ष्म छल। तथापि, इतिहासकारक रूप मे कल्हण

समकालीन आर्थिक स्थितिक अध्ययनक अपेक्षा कला ओ मानवीय अध्ययन पर बेसी जोर देने छथि, यद्यपि अन्नक मूल्य, मुद्रा, कर - निर्धारण आ अकालक यथावत् वर्णन भेटैछ। प्राचीन भारतीय लोकगाथा ओ पौराणिक आख्यान अनेक उल्लेख अछि; उदाहरणार्थ गंगावतरण आ समुद्रमंथन। रणजित सीताराम पण्डितक अनुसारे कश्मीरमे अप्राप्त भारतीय पशु-पक्षी आ गाछ सभ - जेना आम, ताड़, सिंह, मगर, आदिक कल्हण द्वारा उल्लेख स्पष्ट करैछ जे ओ पारम्परिक भारतीय शास्त्र सभक पूर्ण अवगाहन कयने रहथि।

आकार - प्रकारमे काव्य (चरित वा वीर गाथा-काव्य) सदृश 'राजतरंगिणी' मे लगभग आठ हजार श्लोक (स्टान्जा) अछि; जकरा आठ तरंग मे विभक्त कएल गेल अछि। तथापि ई दोसर चरित सभसँ किछु भिन्न अछि, कारण कल्हण प्राचीन कालसँ लए अपन समय धरिक कश्मीर पर शासन कएनिहार राजवंशक क्रमबद्ध विवरण एहि मे देल अछि। महाकाव्य सभक काव्य-सौन्दर्य आ मानवीय रूचिसँ उत्प्रेरित उत्साहित भए गहन विद्वता-बला कल्हण अपन देशक इतिहास पूर्वक यशस्वी कवि-गुरू सभक शैली मे लिखलनि अछि। आ सुविचारित रूपेँ छन्दोबद्ध रूपकेँ अपन कृतिक रचना मात्र अभिव्यक्तिक लेल नहि केलनि अपितु एहि लेल केलनि जे ओहि समयक साहित्य - सह - इतिहास लेखनक प्रामाणिक शैली इएह छल। ओ 'राजतरंगिणी' केँ यथावसर काव्यशास्त्रीय अलंकार सभसँ अलंकृत कएलनि।

तथापि राजतरंगिणी विभिन्न ऋतु आ दृश्य सभक अरूचिकर वर्णन तथा निरन्तर उपमा सभसँ मुक्त अछि, जे महाकाव्यक जीर्ण परिपाटी छल। एहि अलंकार सभसँ हटि, 'राजतरंगिणी'क अधिकांश भागमे प्रत्यक्ष ओ सरल शैली दृष्टिगोचर होइछ। कल्हण ई स्पष्ट कए दैत छथि जे ओ सर्वमान्य साहित्यिक परम्पराक तिरस्कार नहि कएल आ नहि ओ 'काव्य - विस्तार'क कौशलसँ विहीन रहथि। हम देखि चुकल छी जे ओ पारम्परिक अलंकार सभक प्रयोग निक्षिप्त रूपेँ कयने छथि। ई स्मरणीय अछि जे कल्हण अपन विषयकेँ ओकर अन्तर्वर्ती मूल्य लेल ओतेक नहि, जतेक पारम्परिक काव्य-लेखन हेतु ओकरा द्वारा प्रदत्त अवसर हेतु मूल्यवान बुझलनि। ''आख्यानकेँ दृष्टिमे रखैत विषयान्तर द्वारा विविधता प्राप्त नहि कएल जाए सकैत छलैक, तथापि एहिमे किछु एहन छैक जे बुझनिहारकेँ प्रसन्न करय।'' तथापि 'हर्षचरित' आओर 'विक्रमांकदेवचरित'क अपेक्षा एहि मे विषयान्तर कम छैक कारण जे कल्हणकेँ 'आख्यानक दीर्घता'क विषयमे चिन्ता रहनि। एच. एच. विल्सन 'राजतरंगिणी'क विषयमे कहैत छथि–''समस्त विषय पर लिखल गेल अनेक हिन्दू प्रबन्ध सभ सदृश, इहो पद्यमे अछि आ कविताक रूपमे एकर अन्तर्गत भाव वा शैलीक अनेक प्रशंसनीय अंश अछि।'' विल्सन, जनिक ई प्रशंसा बहुत पहिनहि १८२५ ई. मे 'एशियाटिक रिसर्चेज' मे प्रकाशित भेल छल, अपन प्रस्तावना मे कहैत छथि–

"जकरा किछु औचित्य धरि इतिहासक नाम देल जाए सकैत अछि, एहन, अद्यपर्यन्त अन्वेषित संस्कृत - प्रबन्ध एकहि अछि - 'राजतरंगिणी', कश्मीरक इतिहास ।"

कल्हण ई स्वीकार करैत छथि जे आख्यानक विषयवस्तु हिनक काव्यकृतिकेँ प्रभावित कएलक । अलंकारशास्त्रक नियमानुसार ई अनिवार्य अछि जे सम्पूर्ण 'काव्य' वा एकर प्रमुख अंश सभमे एकटा प्रधान रसक परिपाक होइक । 'काव्यप्रकाश'क लेखक, कश्मीरी अलंकारशास्त्री मम्मट कहैत छथि जे काव्यक एक उद्देश्य जीवनक कला (व्यवहारविद्या) सिखायब अछि । काव्यक एक परिभाषा छैक 'ओ भाषा जकर आत्मा 'रस' हो । रस आठ प्रकारक अछि—श्रृंगार, हास्य, करूण, रौद्र, वीर, भय, वीभत्स आ अद्भुत । एकरा काव्यक सार कहल गेल अछि । जतय धरि एहि रस सभक प्रश्न अछि, कल्हण मम्मटक अनुसरण कएल ; किन्तु ओ एक आओर नवम रस शान्तरस जोड़ि देलनि । कल्हण अपन कृतिक प्रमुख, एहि ररसक विषयमे कहैत छथि --"यदि कोनहु कवि अपन प्रतिभासँ एहन वस्तु बूझि सकैत छथि जे प्रत्येक व्यक्ति नहि जानि सकैछ, त एकर अतिरिक्त आओर कोन संकेत सिद्ध करत जे हुनका भीतर दिव्य ज्योति विद्यमान छनि ।" ओ पाठकसँ धैर्य राखय कहैत छथि, शीघ्र निर्णय देवासँ परहेज करऽकहैत छथि ।

कल्हण द्वारा चूनल गेल काव्यक रूप 'राजतरंगिणी'क शैली निर्धारित करैछ । कदिक कलाके व्यक्त करएबला अलंकार जेना, उपमा उत्प्रेक्षा, श्लेष, आदि 'राजतरंगिणी' मे पर्याप्त रूपेँ छिड़िआएल अछि । बदलैत दृश्यक अनुरूप सर्गक आदि आ अन्तमे छन्द बदलि जाइछ । युधिष्ठिरक निष्क्रमण, चक्रवर्मा वा सुस्सलक राजधानीमे विजयप्रवेश, भिक्षाचरक अन्तिम युद्ध आ हर्षक मृत्यु सदृश वर्णनमे कल्हणक अलंकार-कलाक कौशल द्रष्टव्य अछि । हिनक *एस्किलस* आ *होमर* सँ तुलना करैत आर.एस पण्डितक ई प्रशंसा उचिते अछिजे ओ 'सत्य आ सार्वजनिकताक कवि' रहथि । कल्हणक लेखनी द्वारा काढल चित्रमे कश्मीरक अतीत ज्वलन्तरूपेँ सजीव आ मूर्त्तिमान भए गेल अछि । हिनक प्रबन्धक असाधारण गुण - हिनक काव्यकौश्ल, कश्मीरक प्राचीन इतिहासकेँ विस्मृत होएबासँ बचा लेलक अछि ।

वर्णन करबाक अप्रतिम कौशलक उदाहरणस्वरूप उपर्युक्त नाटकीय घटनासँ सम्बन्धित उद्धण 'राजतरंगिणी' सँ देखल जाय ।[1]

युधिष्ठिर केँ जनिका हुनक मंत्रीसभ राजगद्दी छोड़बाक लेल बाध्य केलकनि, देश छोड़ि बाहर जयबाक अनुमति देलकनि । प्रथम तरंगमे राजा आ हिनक परिजन सभक पलायनक एहि तरहेँ वर्णन अछि - "मनोरम पहाड़ी मार्ग सभसँ जाइत काल थाकि गेला पर राजा वृक्ष सभक छाँह तर किछु क्षण रूकि विश्राम करथि, तखन पुनः आगाँ बढ़ैत

---

१. एहि पृष्ठ पर ओ अन्यत्र देल उद्धरण रणजित सीताराम पण्डित कृत 'राजतरंगिणी'क गद्यानुवादसँ अछि

अपन अनेक गम्भीर दुख आ पीड़ाकेँ बिसरि जाथि; कखनहुँ केँ दूरसँ अपन कानमे पड़एबला अशिष्ट जनक हल्लासँ जागि ओ निराश भए जाइत छलाह आ हुनक मन जलप्रपातक धारा जकाँ अतल गहीर खाधि मे डूबि जाइत छलनि । (३६९)

"अनेको प्रकारक लता आ भेषजक सुवाससँ सुगन्धित जंगल क्षेत्र तथा कदइ लागल पिछड़ाह शिलाखण्डसँ आक्रान्त पहाड़ी झरना सभकेँ पार करैत कमल-नालसन देह-यष्टि सदृश शरीर रखनिहारि रानी थाकिकए हुनक (राजाक) कोरा मे अपन माथ राखि बेहोश भए जाइत छलीह ।(३७०)"

जखन सीमान्त पर्वत शिखर लग आबि राजमहलक स्त्रीगणसभ पुष्पान्जलि दए बिदा लेलनि तखन पहाड़ीक खोहसभ मे लगाओल अपन खौंता सभसँ चिड़इ-चुनमुनी पर्यन्त भावावेश मे उड़ि कऽ बाहर आवि गेल आ पाँखि पसारि चौंचकेँ पृथ्वी दिस निक्षेपित कए निहारऽ लागल ।(३७१)

"माथसँ पिछड़ि जाए बला अपन आँचरकेँ अपन छाती पर वान्हि राजमहलक स्त्रीगण सभ दूर होइत अपन मातृभूमिकेँ निहारि अपन माथ पर हाथ राखि लेलनि आ हुनका लोकनिक आँखिसँ निर्झरनी जकाँ नोर झहर' लागल । (–३७२)"

मूल पद्यक मधुरता आ गेयताक अनेक मुणक सौन्दर्य यद्यपि गद्यानुवाद 'सँ न्यून भ' गेलैक अछि तथापि हुनक करूण रसक चित्रणकेँ हम महान संस्कृत लेखक (कवि वा नाटककार) वा शेक्सपियरक चित्रणसँ तुलना कए सकैत छी । ओएह अतिशय मुखर भाव विद्यमान अछि राजा हर्षक मृत्युक वर्णन मे (तरंग ७), जनिका *डमार* सभ एक झोपड़ीमे आश्रय लेबाक काल विश्वासघातकपूर्वक मारि देल --

प्रहार करएबला राजाक हथियार सँ बचि ओ शस्त्रधारी राजाक छाती पर छूरार्स दूबेर घात कयलक । (१७११)

'हे महेश्वर एहि शब्दक दू बेर उच्चरण कए, प्राणान्त भए गेलासँ ओ जड़ि काटल गाछ सदृश पृथ्वी पर खसि पड़लाह । (१७७२) चोर सदृश भागि कए आश्रय लेबाक काल ओ व्यक्ति जे एक समय एकटा शक्तिशाली राजा रहथि, एकटा घरमे मारल गेलाह। (१७१३)

पूर्ण वैभवशाली कोनहु राजा हुनका जकाँ एहि तरहक दुर्दशामे नहि देखल गेल छलाह आ कोनहु दोसर व्यक्तिक अएहि तरहक अपमानजनक अन्तिम संस्कार नहि भेल छल । (१७१४)

अथवा कदाचित् एकर एकहि कारण छल - युद्धसँ अरूचि - जकर कारण ओहि उदात्त राजाक सभ तरहें रमणीय उच्च स्थिति नष्ट-भ्रष्ट भए गेल । (१७१५)

जकरा नौकर सभ छोड़ि देलक आ जकर वंश नष्ट भए गेल छल, एहन जे राजा तनिक वस्त्रविहीन शव केँ लकड़ी टालक गौरक नामक अधिकारी अति दरिद्र कोनो व्यक्तिक शव जकाँ जरा देलक । (१७२७)

ई उल्लेख करैत जे 'हर्षक प्रेमिका सभमेसँ केओ हुनका लेल विलाप नहि कएल आओर ने हुनक कोनो अनुयायी' मृत्युमे हुनक संग देल वा सन्यास लेल', तरंगक उपान्त पद्यमे मानवीय अनुभूति सभक चपलताक विषयमे कल्हण अपन दार्शनिक मत व्यक्त करैत छथि – "आरम्भमे शून्य रहैत अछि आ तकर बाद कालान्तेँ सेहो निश्चित रूपेँ शून्य रहैछ। बीचमे संयोगक बात जे मनुष्य सुख - दु:खक नियामक दशासँ अत्यन्त शीघ्र प्रभावित भए जाइछ। बिनु माथ आ पएरक अभिनेता सदृश बेर-बेर अपन भूमिकाक निर्वाह कए मनुष्य जीवनक पर्दाक पाछाँ अदृश्य भए जाइछ-ई नहि ज्ञात होइछ जे कतय चल जाइत अछि। (१७३१)

भाड़ाक तांत्रिन सैनिक सभकेँ परास्त कयलाक पश्चात राजधानी श्रीनगर मे चक्रवर्माक विजय - प्रवेश तथा धूर्तता सँ एकटा चापलूस द्वारा एकटा राजकुमारक हत्या सभक वीर - रसमे वर्णन (तरंग५) कल्हणक काव्य - कलाकेँ चित्रित करैत अछि–

दोसर दिन जखन शक्तिशाली शम्भुबर्धन छिन्न-भिन्न मेल तंत्रिन सैनिक सभक संघटन मे लागल छल ओही समय अधिनायक मंत्री, एकाङ्ग आ दरबारी सभ आ पुनः विभिन्न मार्गसँ क्षितिज केँ आच्छादित करैत आ संगहि जयघोष करैत सैनिक दल सभ ओतऽ पहुँच गेल। एम्हर अश्वारोही सुरक्षा सैनिकक घेराक मध्य ओ अपन घोड़ा केँ नचा रहल छलाह;किछु माथ परसँ ससरल जाइत शिरत्राणकेँ ओ लगामबला नाम-हाथ सँ सम्हारलनि, दोसर हाथमे छलनि खड्ग जकर मूठक चमक हुनक कानक कुण्डलकेँ उद्भासित कऽ रहल छल, शरीर परहक कठोर कवच गर्दनिकेँ दावि रहल छलनि आ ताहिसँ कछमद्दीक कारणे दूदू भहुँ जूटल छलनि आ से मुखमण्डल केँ भयानक बना देने छलनि; तथापि ओ दोकान सभक लूटऽवला लुटेरा दलकेँ अत्यन्त क्रोधसँ डाँटि रहल छलाह आ ओही क्षण भयाक्रान्त नागरिक सभकेँ इशारासँ आश्वस्त सेहो कऽ रहल छलाह; ढोल-ढाकक जयनादक संग नागरिक सभक आशीर्वचन हल्लाक कारणे हिनका कर्णगोचर नहि भऽ रहल छलनि; एहने छल सामारिक विजयसँ देदिप्यमान राजा (चक्रवर्मन)क नगर प्रवेशक दृश्य। (३४१-३४७)

विजयोन्मत्त भए जखन ओ सिंहासन पर बैसलाह तखन भूभट शंभुवर्धनकेँ हथकड़ी पहिराय कतहुसँ हुनका समक्ष उपस्थित कयलक।

राजाक प्रति अपन आस्था आ भक्ति प्रदर्शित करबाक नियतिसँ ई पापी, कोनो चान्डाल जकाँ, ओहि शम्भुवर्धनक बध केलक जे मृत्युभय सँ अपन आंखि मूनि लेने छल। (३४९)

भिक्षाचरक अन्तिम युद्ध (तरंग-७) क अत्युत्तम वर्णन करूण आ वीर रसक परिपाक अछि। निम्नलिखित किछु पद्य प्राच्य वा पाश्चात्य वीररसक पद्य सँ सहजहिँ तुलनीयः–

जखन सिंह सदृश भिक्षाचर वाणक पिंजराकेँ तोड़ि निकलैत छल, तखन खस सभ ऊपर सँ पाथर खसाएब शुरू कएलक। (१७६२)

पाछाँ हटबाक काल पाथरक भयंकर प्रहार हुनक शरीर के क्षत-विक्षत कए देलक आ कातसँ एकटा वाण हुनक यकृतकेँ वेधि देलकनि ।(१७६३)

तीन डेग चललाक बाद ओ धराशायी भऽगेलाह आ पृथ्वी काँपि उठल आ एकरा संगहि बहुत काल सँ चल अवैत हुनक शत्रुक कँपकपी बन्द भऽ गेलैक । (१७६४)

उच्चवंशीय पुरूषक संग मृत भिक्षाचर ओहि प्रफुल्ल तरु सँ भरल पर्वत समान दीप्त रहथि, जाहि पर विद्युत्-लता खसल हो । (१७६७)

विशाल राजमण्डली मध्य हर्षक ई वंशज - भिक्षु तिरस्कार नहि, अपितु उच्चतम सम्मान-प्राप्त केलनि । (१७६८)

भाग्य हुनक सतत विरूद्ध रहल, तथापि अन्ततः हुनका द्वारा आराधित भए हारि मानल । (१७६९)

विशाल समृद्धि वला पूर्ववर्त्ती राजागणक तुलना मे ओ गरीब छलाह, मुदा हुनक अनेक वीरतापूर्ण कार्यक समक्ष कोनो समृद्धि तुच्छ छल । (१७७०)

हुनक आँखि आ भहुँमे अनेको नालिक धरि कम्पन आ ठोर पर मुस्कान छलनि। लगैत छलैक जेना शिर मे एखनहुँ प्राण हो । (१७७७)

ओकर एक भाग अप्सरा सभक संगतिमे स्वर्ग पहुँचि गेल ; आ पृथ्वी पर स्थित दोसर भाग, अर्थात शरीर थल ओ जलकेँ शीतल बूझि अग्निकेँ वरण कयल । (१७७८)

एकर पूर्व राजा भिक्षाचर, अपन दलबदलू सामन्त , मंत्री आ सैनिक सभ द्वारा परित्यागित रहितहुँ, समय व्यतीत करबाक लेल पासा खेलाइत रहलाह आ संघर्ष लेल सदैव उत्सुक बधिक द्वारा विलम्ब करबाक कारणें अधीर छलाह। एहि निडर वीर योद्धाक,– जे जनैत रहय जे ओ हारि गेल अछि - स्मरणीय अछि :–

हुनक माथक कारी केश चिन्ताक दीर्घताक कारणे झड़ि गेल छलनि, सैन्य-परिधानक कोर परिचय रूपक ध्वजा जकाँ फरफड़ा रहल छलनि, जाल पर झूलैत कुंडलक खुरचनसँ आभा फूटि रहल छलैक, चाननक रेखा सभ गर्वित मुस्कान सन दीप्त छलनि,–एहि रूपेँ, जीवनक विस्मयकारी अन्तमे, ओ लगैत छलाह जेना पराजय केँ पयरक ठोकर मारि जीति लेने होथि; पयर खड्ग, आँखि आ केसरिया रंगक अधोवस्त्र आगिक लपट समान दमकि रहल छलनि, कठोरता सँ बन्द पीयर भेल ठोरक अधोभागोमे कम्पन छलनि, चालिमे अयाल युक्त केहरिक गर्वयुक्त चपलता छलनि जे हुनक उत्साहक संग मेल खा रहल छल । एहि रूपेँ हुनक स्वरूप शुद्ध अभिजात व्यक्तित्वक प्रतीक छल जे, सम्मानकेँ सभसँ पैध धन बुझनिहारक लेल, आत्म-विश्वासक आभूषण जकाँ छल। (१७४४-१७५०)''

११२१ ई.मे कश्मीरक राजगद्दी पुनः पौनिहार सुस्सल "अपन प्रति-द्वन्द्वी सभसँ बिना कोनो प्रतिरोध केँ अचानक राजधानीमे आगमन कएल'' (तरंग ८.४९७) । विजयीक रूपमे हुनक प्रवेशक वीररसपूर्ण चित्रण एहि रूपेँ अछि –

"सूर्य्यक तीक्ष्णतासँ कारी भेल बर्ण, झबरल दाढ़ी तर झाँपल मुखमण्डल ललाट पर क्रोधक बल टेढ़ आ विस्फारित नेत्र आ फड़कैत नाशापुट - इएह छल सुस्सलक आकृति, जे क्रोध सँ काल जकाँ उफनि रहल छलाह। ओ, श्रीनगरक गली आ बाजारमे, शत्रुक अश्वारोही सैनिकक नेतृत्व मे आयल सैन्यदलकेँ खुलेआम धमकौलनि आ पराजित सैनिक सबकेँ कटु शब्दें प्रताड़ित केलनि। ओ, तत्काल फल बरसबैत आ जयजयकार करैत ओहि नागरिकक अनेक समूह दिस तिरस्कार सँ तकलनि जे पूर्व मे हिनक विरोध कयने छल। युद्ध-कवच कान्ह पर लटपटायन अवस्थामे राखल छलनि। शिरत्राणक अन्दरसँ बाहर निकलि आयल हुनक केशराशि आ आँखिक पपनी धूल धूसरित छलनि। अपन तरूआरि म्याने मे छलनि मुदा नाङ्गट तरूआरि हाथ मे लेने अश्वारोही सैनिकक अनेक पँक्तिक घेरावन्दीक बीच ओ एकटा उछलैत युद्ध-अश्व पर सवार छलाह। सुस्सल द्वारा श्रीनगर मे प्रवेश करबाक काल आकाश विजय-उद्घोष आ सैनिक द्वारा विजयोन्मादमे पीटल जाइत ढोल आ ताशाक तुमुल नाद सँ गुंजायमाम छल (९४७-९५३)।

कल्हण एक दोसर प्रकारक वीरताक सेहो प्रशंसा करैत छथि-- ललितादित्यक आज्ञासँ मारल गेल गौड़ राजाक स्वामिभक्त सैनिक गौड़ वीर सभक प्रसङ्ग कल्हण चतुर्थ तरंग मे कहलनि अछि जे राजाक ई अनुयायी सभ 'एकत्र भेल आ भगवानक मन्दिरकेँ बन्धकक रूपेँ घेरि ठाढ़ भए गेल छल' मुदा पुरोहित सभ ओकरा सभकेँ रोकल –

वीरोन्मादसँ उन्मत्त भए ओ सभ *रमास्वामीक* चाँदीक मूर्त्तिकेँ परिहासवेशवक बूझि ओकरा उठाए आ पटकि चूर-चूर कए देल। (३२७)

चूर-चूर कए ओकरा चारू दिशामे छिड़िआए देलक जखन कि श्रीनगरसँ आयल सैनिक डेग-डेग पर ओकरा मारि रहल छलैक (३२८)

शोणितसँ लथपथ ओकरा सभक शव लाल रंगसँ रंगल काजरक पहाड़क प्रस्तर खण्ड जकाँ पृथ्वी पर पड़ल रहैक। (३२९)

स्वमीक प्रति असाधारण भक्ति केँ प्रदर्शित करऽवला शोणितक धार ओकरा सभक यश-कीर्तिकेँ उद्भाषित करैत पृथ्वी केँ धन्य कऽ रहल छल। (३३०)

अपन स्वामीक हत्याक बदला लेबाक हेतु सुदूर बंगलासँ कश्मीर आबएबला एहिं स्वमीभक्त अनुयायी सभक वीरतापूर्ण बलिदानक प्रसंगमे कल्हणक टिप्पणी एक दीर्घ श्लोकमे अछि जे वस्तुतः सटीक रूपकालंकारसँ युक्त अछि--

हीराक कारण वज्र - संकट दूर भए जाइछ, माणिक्यसँ समृद्धि भेटैछ, मरकतसँ सभ तरहक विषक प्रभाव दूर होइछ, एहि तरहें प्रत्येक रत्न अपन गुप्त शक्तिसँ वस्तुकेँ प्रभावित करैत अछि; किन्तु अतुलनीय महानतासँ युक्त रत्न - तुल्य पुरूष एहन कोन वस्तु छैक जे ओ प्राप्त नहि कऽ सकैछ ? (३३१)

'एकाएक आबयवला विपत्ति दुःख उत्पन्न कए दैत अछि, परन्तु जखन केओ विपत्ति सभसँ घेरल रहय, तखन ओकरा किछु प्रतीत नहि होइछ ; पानि ओतेक ठंढा नहि लगैछ, जतेक हाथ पर देला पर' - ई अछि ओहि राजा सुस्सलक प्रसंगमे एक गम्भीर टिप्पणी (८.१०९७) , जे युद्ध सभक बीचमे सेहो शांत रहलाह । एकर पहिनेक पद्य मे ओ लिखैत छथि (१०९५) 'विभिन्न संग्राम सभमे राजा स्वयं ओहिना निरूद्विग्न घुमैत छलाह जाहि तरहे उत्सवमे ब्राह्मण गृहस्थ एक धरसँ दोसर घरमे जाइत अछि'–एहि प्रकारक टिप्पणी आधुनिक समयमे सेहो कोनहु चिंताग्रस्त राज्याध्यक्षक लेल एक शिक्षाप्रद उदाहरण अछि।

इतिहासकारक रूपमे कल्हण

कल्हण ओहि ब्राह्मण पण्डित वा कविगणक श्रेणीमे नहि रहथि जे गरीबी वा महत्वकांक्षासँ बाध्य भए अपन प्रतिभा घमण्डी राजा सभक पएर पर राखि दैत छथि। रीति वा साहित्यिक परम्पराक अनुसरण कए, भारतीय लेखक लोकनि विशेषतः दरबारी कविगण अपन राजकीय संरक्षक पर स्तुति वा चाटूक्ति सभक वर्षा कएल; एहि विषयमे 'राजतरंगिणी'क प्रमाण नकारात्मक अछि। फिरदौसीक *शाहनामा* सदृश, कल्हणक 'राजतरंगिणी' प्राचीन आख्यान ओ पौराणिक कथा सभक एक संग्रह मात्र नहि अछि।

इतिहासकारक भूमिकाक प्रसंग मे कल्हण कहैत छथि "मात्र ओएह गुणवान् व्यक्ति प्रशंसनीय छथि, जे अतीतक घटना सभक वर्णन करैत काल अपन भाषाकेँ न्यायाधीशक समान पक्षपात आ पूर्वाग्रहसँ मुक्त रखैत छथि। एही मानदण्ड पर चलैत इतिहासकारर रूपमे कल्हण एक पक्षपातरहित पुरालेख लिखनिहारक दृष्टिकोण अपनौलनि अछि।

"पत्रकारिताक प्रसङ्ग चिन्तन करबाक क्रम मे ख्यातिप्राप्त पत्र मेनचेस्टर गार्जियनक सी.पी. स्काट एकठाम लिखने छथि : तथ्यक पवित्रता अक्षुण्ण होइछ"। पत्रकारिता, अपन सर्वोत्तम रूपमे, वर्तमानक इतिहास होइछ; किन्तु उपर्युक्त सूक्तिकेँ इतिहाससँ आओर बेसी गहींर सम्बन्ध छैक। कल्हणक ई कथन तथ्यक प्रति हुनक सम्मानकेँ सूचित करैछ, "मात्र ओएह सद्गुणी कवि प्रशंसनीय छथि, जे प्रेम वा घृणासँ अस्पृश्य रहि, तथ्य सभकेँ प्रकट करबामे अपन भाषापर सेहो अंकुश रखैत छथि।"

प्रायः २३३३ वर्ष पुरान इतिहासक उपलब्ध सामग्रीक विषयमे ओ की सोचैत रहथि, ई कल्हणक प्रास्ताविक पद्य सभमे उत्कृष्ट रूपेँ व्यक्त अछि, जकरा रणजित् सीताराम पण्डित एहि रूपेँ गद्यानुवाद कयने छथि -"राजकीय पुरालेखक प्राचीनतम विस्तृत कृति सुव्रतक रचनाक फलस्वरूप लुप्त भए गेल; ओ अपन रचनामे ओकर सारांश देल; जाहिसँ ओकर विषय-वस्तु स्मरण रहय। सुव्रतक काव्य यद्यपि सुप्रसिद्ध अछि, तथापि पाण्डित्य प्रदर्शनक कारणे बुझबामे कठिन अछि।

' आश्चर्यजनक लापरवाहीक कारणें क्षेमेन्द्रक कृति राजाक इतिहासक एकहु भाग एहन नहि अछि, जे अशुद्धिमुक्त हो यद्यपि एहिमे काव्यमुण विद्यमान छैक। परन्तु दू तथ्यक कारणें हुनकर लेखनक विश्वास कयल जा सकैछ - प्रथम, ओ कश्मीरक प्राचीन इतिहाससँ सम्बन्धित अनेक कृति सभक परीक्षण आ तुलनात्मक अध्ययन कएल; दोसर, ओ पूर्ववर्ती

राजा सभक शिलालेख, वंशवृक्ष आ प्रसिद्ध व्यक्ति सभक स्मरणिका सभक उपयोग सेहो कएल ।

'हम पूर्ववर्ती विद्वान सभक ग्यारह गोट कृतिक परीक्षण कएने छी, जाहिमे राजागणक पुरालेख सभ अछि आ संगहि सन्त नीलकेर, नीलमत-पुराण सेहो ।'

'पूर्ववर्ती राजा सभक राज्याभिषेकक समय कएल गेल घोषणा, जकरासँ ओहि राजा सभक सम्बन्ध रहय, ओहि पुरातन विषयक शिलालेख, वंशवृक्ष-युक्त प्रशस्ति-पत्र आ प्रसिद्ध व्यक्ति सभक स्मरणिकाक परीक्षण भए गेल अछि आ हम सभ अशुद्धिकेँ सुधारि लेने छी ।''

एहि तरहें कल्हण पूर्ववर्ती पुरालेख सभक उल्लेख ओ समीक्षण कएल । कश्मीरक राजा सभक इतिहासक प्राचीन दीर्घ रचना सभ सम्पूर्ण रूपेँ अस्तित्वमे नहि छल । कल्हण एहि हानिक किछु दोष *सुव्रतक* रचनाकेँ दैत छथि, जे एक पुस्तिकामे एहि पूर्ववर्ती पुरालेख सभक संक्षेप देलनि । यदि कश्मीरक प्राचीन राजागणक प्रसंगमे एगारह गोट वा ताहू सँ बेसी रचना लिखल गेल छल, त 'राजतरंगिणी'क रचनाक की हेतु रहय.? एकर उत्तर हमरा लोकनिकेँ कल्हणसँ भेटैत अछि जे गोनन्द द्वितीयक समयसँ कोनहु अखण्ड सम्पूर्ण पुरालेख नहि छल, आओर ओ 'अनेक प्रकारसँ जतय बीतल घटना सभक आख्या टूटल छल, ओतय सम्बद्ध विवरणें देबाक प्रयास केलनि अछि । ई सुविदित अछि जे भारतमे कान तरहेँ संक्षेप कएने कोनहु विषयक पूर्ववर्ती रचना सभ विलुप्त भए जाइत छल । राजा आओर सामान्य नागरिक दुनूक लेल कल्हण एहि काव्याख्यानक अनेक घटना सभसँ नीति शिक्षा इंगित करए चाहैत रहथि; 'तेँ रसक स्वच्छ निर्झर सन रमणीय ई राजतरंगिणी अपनेक शुक्ति सदृश्य कर्ण सँ निपीत हो ।'

'राजतरंगिणी'मे संस्कृत पद्य सभक आठ सर्ग (तरंग)मे प्राचीन कालसँ लए कल्हणक समय धरि कश्मीर पर शासन करएबला विभिन्न राजवंशक इतिहास अछि । प्रथम तीन तंगक घटना सभक आख्यानात्मक स्वरूपकेँ छोड़ि-वस्तुतः कल्हण प्रामाणिक रूपेँ कश्मीरक प्राचीन परमपरा सभक उल्लेख करैत रहथि–१८३५ ई. मे प्रकाशित कल्हणक रचना समय आ ऐतिहासिक समीक्षात्मक कसौटी पर खरा उतरल अछि । कल्हणक समयक ऐतिहासिक घटना सभक विशद विवरण, मुख्य रूपसँ समकालीन प्रमुख व्यक्ति सभसँ हुनक व्यक्तिगत सम्पर्क पर आधारित अछि । ई तथ्य आठम तरंगक दीर्घ वर्णनकेँ इतिहासक विद्यार्थी लेल बेसी मूल्यवान् बनाए दैत अछि ।

पुरातत्वज्ञ होएबाक कारणे, कल्हण राजकीय दानपत्र ओ घोषणापत्र सहित, अनेक मूल दस्तावेजक सेहो उपयोग कएल, जे कश्मीरमे उपलब्ध रहय । मन्दिर सभक प्रस्तर-लेखसँ ओ मन्दिरक स्थापनाक विषयमे आओर, विशिष्ट पवित्र प्रतिमा सभक मूलक विषयमे, उपयुक्त विवरण प्राप्त कएल ।

प्रसिद्ध इतिहासकार आर.सी. मजूमदार[1] ऐतिहासिक गवेषणाक आधुनिक समीक्षात्मक पद्धतिक पूर्वकल्पना करबाक लेल कल्हणक प्रशंसा करैत छथि; 'प्राचीन भारतीय साहित्यमे इएह एक कृति अछि, जकरा हम वास्तविक अर्थमे ऐतिहासिक ग्रंथ मानि सकैत छी। लेखक मात्र विद्यमान पुरालेख आ दोसर स्रोत सभसँ अपन सामग्री एकत्र करबाक प्रयास नहि कएल, अपितु अपन रचनाक प्रारम्भमे इतिहास - लेखनक किछु सामान्य सिद्धान्त सेहो प्रस्तुत कएल, जे हिनक समयकेँ देखैत अत्यधिक अग्रगामी अछि। वस्तुतः एकरा ऐतिहासिक गवेषणाक समीक्षात्मक पद्धतिक पूर्वकल्पना मानल जा सकैछ ओ पद्धति जे १९म शताब्दी धरि पूर्ण विकसित नहि भेल छल।"

'राजतरंगिणी' किछु भागमे दोष रहितहुँ एकटा ऐतिहासिक कृति अछि, निश्चित रूपेँ कश्मीर ओ शेष भारतक सन्दर्भमे महत्वपूर्ण। हम लेखक स्टीन द्वारा 'राजतरंगिणी'क अनुवादक प्रस्तावनासँ उद्धरण दए सकैत छी; भारतीय इतिहास हेतु कल्हणक 'राजतरंगिणीक महत्व सामान्यतः एहि लऽकऽ अछि जे ई संस्कृत प्रबन्धक ओहि वर्गक प्रतिनिधित्व करैछ जे मध्ययुगीन यूरोप आ प्राच्य-मुस्लिम पुरालेख सभसँ अत्यन्त निकट अछि। कश्मीर पर उत्तरवर्ती इतिहासकार लोकनिक पुरालेख सभकेँ परिगणित करितहुँ- जाहि मे कल्हणक विवरणी समाहित अछि - निर्विवाद जे ई कृति अपन कोटिक एकमात्र रचना अछि - कल्हण कतहु एहि कृतिक स्वरूप आ आयोजनक मौलिकताक श्रेय अपना ऊपर नहि लैत छथि। एकर विपरीत कश्मीरक राजा सभक इतिहाससँ सम्बन्धित विभिन्न पूर्ववर्ती प्रबन्ध सभक ओ उल्लेख करैत छथि, जकर ई उपयोग कएलनि। परन्तु एहि प्राचीन कृति सभमेसँ कोनहु उपलब्ध नहि अछि। भारतक कोनहु भागमे संस्कृत साहित्य 'राजतरंगिणी' सदृश पुरालेख सभक अवशेष सुरक्षित नहि रखने अछि, यद्यपि एकर पूर्व - अस्तित्वक विषयमे विभिन्न दिशासँ सूचना प्रकाशमे आएल अछि।

---

१. मजूमदार, आर. सी. : सं., दि वैदिक एज, पृ. ४९

कालगणनाक पद्धति

कालगणनाक दृष्टिएँ 'राजतरंगिणी' मे एक गम्भीर दोष अछि। पहिल तीन तरंग सभमे यद्यपि पृथक् - पृथक् शासकक अवधिक उल्लेख अछि, हुनका लोकनिक उपयुक्त तिथि सभ नहि देल गेल अछि। जखन कल्हण प्रत्येक शासकक संभावित शासनकालक वर्षकेँ जोड़ैत छथि, तखन संख्या सभक जोड़ ठीक सँ नहि मिलैछ।

तरंग ४क पद्य ७०३ सँ प्रारम्भ कए कल्हण - चिपत-जयापीड (८१३ ई.)क मृत्युक बादसँ ठीक-ठीक समय दैत छथि। ई. तिथि सभ लौकिक संवतमे व्यक्त कयल गेल अछि, जे कश्मीरमे प्राचीन कालसँ परम्परामे रहय। (लौकिक संवतकेँ ई. सन् मे ठीक-ठीक बदलि सकैत छी)। 'राजतरंगिणी'क अपन अनुवादक 'आमंत्रण'मे रणजित् सीताराम पण्डित लिखैत छथि - ''सभसँ पहिल तिथि लौकिक संवत् (८१३-८२४ई.)क वर्ष ३८८९ अछि। एहिमे सन्देह नहि जे एहि तिथिक बादक कल्हणक इतिहास प्रामाणिक ओ शुद्ध अछि तथा प्राचीनकालक दोषपूर्ण कालगणना पूर्ववर्ती पुरालेखकक भ्रमक कारणे अछि।''

पाँचम तरंगमे, उत्पल वंशक प्रारम्भक बाद प्रत्येक शासनक प्रारम्भ आ अन्त स्पष्ट करबाक लेल वर्ष, मास ओ दिनक निर्देश सेहो अछि। एहि तिथि सभकेँ हम सभ मोटामोटी, विश्वसनीय मानि सकैत छी; सम्भवतः एकरा कोनहु समकालीन अभिलेखनसँ उद्धृत कयल गेल अछि। किन्तु स्वतन्त्र रूपक विवरण सभसँ एकर यथार्थता जँचबाक लेल इतिहासकार लोकनिकेँ कोनहु साधन उपलब्ध नहि रहैत छैक।

कल्हण द्वारा १८म शताब्दीक उत्तरार्द्धमे पहुँचबा धरि राजा सभक सिंहासनारूढ़ होयबाक ठीक-ठीक तिथिक संकेत नहि भेटैत अछि। जखन कल्हण अपन समयक प्रसंगमे लिखैत छथि, तखनहु ठीक-ठीक तिथि नहि देल गेल अछि। जाहि घटना सभकेँ कल्हण महत्वपूर्ण मानैत छथि आ विस्तारसँ वर्णन करैत छथि; तकर विषयमे सेहो यथार्थ तिथि तिरोहित अछि। कखनहुँ-कखनहँ ओ मात्र महीनाक उल्लेख करैत छथि, वर्षक अनुमान पाठक लगबैत रहथु।

कश्मीरक भूचरनासँ पूर्णतः परिचित होएबाक कारणें कल्हणक स्थानीय उल्लेख यथावत ओ स्पष्ट अछि। ''ई. मुख्यतः कल्हणक योग्यताक प्रमाण अछि जे तत्सम कोनहु दोसर भारतीय क्षेत्रक अपेक्षा हम कश्मीरक प्राचीन भूरचनाकेँ बेसी विस्तारसँ पुनःस्थापित कए सकैत छी'' (स्टीन)। एहि तरहेँ 'राजतरंगिणी'क अध्ययन ओ कश्मीर घाटीक प्राचीन भूगोलक बीच निकट सम्बन्ध स्थापित भए जाइत अछि।

वंशावली सभ दिस ध्यान देबामे कल्हण अति सावधान छथि । स्पष्टतः अपन-अपन समयक घटना सभकेँ सर्वाधिक प्रभावित करएबला प्रत्येक महत्वपूर्ण व्यक्तिक (पुरूष वा महिला) वंशक मूलक उल्लेखक महत्वक प्रति ओ जागरूक रहथि । ई विषय अन्तिम दुइ तरंगक जटिल घटना सभकेँ सुगमता सँ बुझबामे बेसी सहायक भेल अछि । अधिक महत्वपूर्ण महापुरूष सभक विषयमे नियमित वंशवृक्ष देल गेल अछि ।

भारतक विभिन्न भाग सभमे एकक बाद दोसर राज्यकेँ जीति लेनिहार कर्कोट वंशक यशस्वी सम्राट ललितादित्यक वंशावली भेटैछ । यद्यपि ललितादित्य शासनकाल अवधि (७२४-७६१ ई.) जे कल्हण देल, ओहिना ठीक मानल गेल अछि किन्तु किछु विद्वान तिथि ठीक होएबाक विषयमे आश्वस्त नहि छथि । वस्तुतः तिथि कल्हण द्वारा निर्देशित नहि अछि अपितु गणनाक फलस्वरूप निश्चित भेल अछि । गणना मे अंक-दोष अछि, जेनाकि ओहि सामग्रीसँ स्पष्ट अछि जाहि परर कालगणना अनुमानित अछि । ई सामग्री सभ अछि - कल्हणक अपन स्वयं केर तिथि शाके १०७० (११४८ ई.) ; गोणद तृतीयक तिथि, जे शाके १०७० सँ २३३० वर्ष पूर्व राज्य कएल ; आओर अन्ततः एहि दुनू तिथि सभक बीच शासन करएबला राजागणक नाम ओ हिनक शासन-काल । कल्हणक अप्पन तिथि (अर्थात् 'राजतरंगिणी' लिखबाक तिथि) ठीक मानल जाए सकैछ ; परन्तु गोणद तृतीय आ' कल्हणक बीचक समयकेँ एवं ललितादित्यक समय धरिक राजा सभक शासनावधिकेँ ओतेक ठीक नहि मानल जा सकैछ ।

ललितादित्य आ दोसर कर्कोट शासनाध्यक्ष सभक कालक्रमकेँ, काज चलएबाक लेल स्वीकृत्त कए लेल गेल अछि, यद्यपि तंग वंशक चीनी वृत्तान्त सभक प्रविष्टि एकर प्रतिकूल अछि । कम-सँ-कम २५ वर्षक अन्तर अछि एवं स्टीन ई निष्कर्ष देल जे एहि वंशक शासकक कालावधिकेँ एतेक वर्षसँ आगाँ बढ़ाकऽ बुझवाक चाही । एहि सँ मुदा एकटा दोसर दोष आबि जाइत अछि । कर्कोट वंशक शासन ८८० ई. धरि आगाँ बढ़ि जायत, जाहि समय निश्चित रूपेँ कश्मीरमे अवन्तिवर्माक शासन छल । एहि सँ एकटि टा निष्कर्ष बहराइछ जे कल्हण कर्कोट वंशक किछु राजा सभक शासनकाल बेसी दीर्घ कऽकऽ देखौलनि अछि-तेँ ई जटिल समस्या छैक ।

तथापि इतिहासकार लोकनिमे ई मतैक्य अछि जे 'राजतरंगिणी'मे कर्कोट वंशसँ पूर्वक विवरण किछु अंशमे विश्वसनीय नहि अछि । एहन शासनकाल अछि, जकर अवधि (यथा, रणादित्यक, ३०० वर्ष पर्यन्त) स्पष्टतः अस्वीकार्य अछि । आश्चर्यजनक घटना सभक वर्णन अछि, जे संक्षेपमे कहब जे असम्भव अछि । परन्तु रणजित् सीताराम पण्डित[1] कहैत छथि - ''एखन धरि एहन कोनहु शिलालेख सिक्का, पुरालेख वा कोनहु प्रकारक

१. पण्डित रणजित् सीतारामः अनु० 'राजतरंगिणी', 'साहित्य अकादेमी, १९६८ संस्करण, परिशिष्ट-क, पृ० ७२०-२१

स्वतन्त्र साक्ष्य नहि भेटैत अछि, जे निःसंशय ई सिद्ध कए दिअय जे कल्हणक आख्यानक कोनहु भाग, अनेक संभावित दोष सभसँ युक्त होइतहुँ अशुद्ध अछि.....एहन कोनहु प्रमाण प्रस्तुत नहि कएल गेल अछि जे ई त्रुटि सभ पूर्ववर्ती कालक उपलब्ध अभिलेख सभ तथा अन्य सामग्रीक कल्हण द्वारा उपयोगक फलस्वरूप भेल अछि।''

अतएव ई तर्क प्रस्तुत कएल जाइत अछि जे सभ राजागणक तिथिकेँ अशुद्ध नहि बुझबाक चाही; किएक त' हम निश्चित रूपेँ जनैत छी जे कल्हण अपन पूर्ववर्ती लेखक सभक पुरालेखक विवेकपूर्ण उपयोग कयलनि अछि। ई सम्भव अछि जे जकर प्रसंगमे विस्तृत उपलब्ध नहि रहय, एहन एक वा अनेक अल्पज्ञात राजा सभक तिथिक प्रसंगमे कल्हण स्वयं अनुमान लगाओल। स्वतंत्र साक्ष्य ई स्थापित कए देलक अछि उत्तरवर्ती तरंग सभमे— विशेषतः पाँचम, छठम, सातम आ आठमक— तिथि सभ प्रामाणिक अछि; जखन कि पूर्ववर्ती राजा सभक शासनक प्रसंगमे कल्हण कश्मीरक प्राचीन परम्परा सभक यथावत अनुसरण कयलनि अछि तथा, पूर्ववर्ती पुरालेख सभ आ तात्कालिक शिलालेख ओ मुद्रा सभक सहायता सेहो लेलनि अछि। हिनक ई कथन जे गोणंदक शासनक बाद ५९६ ई.मे कर्कोट सभ शासन मे आयल, ह्यून सांग द्वारा सेहो अनुमोदित अछि (जे ६३१ ई. मे कश्मीर आएल, जेना कि कनिंधम स्थापित कयने छथि) जकर अनुसार कतेको सदी धरिक गोणंदक शासनक बाद, घाटी मे कि - लि - टोक (जाहि नामसँ चीनी सभ कर्कोट-केँ जनैत रहय) केर शासन छल, ओ विशेष रूपेँ इहो कहलनि अछि जे एहि राजाक बौद्धमतमे विशेष विश्वास नहि छल।

तेँ रणजित् सीताराम पण्डित विख्यात प्राच्य विद्याक विद्वान प्रोफेसर बूहलरक मतकेँ जे कल्हणक पाण्डुलिपि सन्तोषजनक दशा मे नहि छल विवादक विषय मानलनि अछि। पण्डित[२] क टिप्पणी कल्हणक कालगणनाक विवादक निर्णय करैत अछि आ ने उद्धरण योग्य अछि ''कम सँ कम, जखन धरि ओहि सर्वस्वीकार्य मूल्यवान कृतिक पाठ-कोनहु संकेतसँ एखन धरि प्रकाशमे आएल एकाकी ऐतिहासिक संकलन - कोनो योग्य आ धैर्यवान हाथ द्वारा सावधानीसँ सम्पादित कए अपन मूल शुद्धतामे नहि पहुँचा देल जाइछ; तखन धरि ई आशा तर्कसंगत होएत जे ओकर विषयमे कतिपय विद्वान द्वारा किछु लिखितहुँ, हम ओकर ऐतिहासिक मूल्यक प्रसंगमे अपन निर्णय निलम्बित कए दी (ओकर प्रारम्भिक भागक प्रसंगमे सेहो); एवं, स्वतंत्र साक्ष्यक अभावमे, यद्यपि हम किछु अंशमे ओकर यथार्थता स्वीकार करबामे विचलित भए सकैत छी, एतेक धरि जे मात्र पौराणिक कहि कथा सभक उपेक्षा कए सकैत छी; तथापि जे किछु ओहिमे (एतेक धरि जे ओकर प्रारम्भिक भाग सभमे सेहो) कहल गेल अछि, ओकरा अस्वीकार करबामे हमरा तखन धरि तैयार

२. पण्डित रणजित सीताराम पण्डित, अनु; 'राजतरंगिणी,' साहित्य अकादेमी, १९६८ संस्करण, परिशिष्ट-क, पृ० ७२०-७२१

नहि होएबाक चाही जखन धरि स्वतंत्र साक्ष्य ई सिद्ध कए दैछ जे ओकर भीतर सभ किछु अशुद्ध अछि ।'' कल्हण स्वयं असंदिग्ध संकेत देलनि अछि जे जेना-जेना आख्यान पुराकालमे पाछाँ जाइत अछि, तेना-तेना कथा प्रायः पुराख्यानक रूप लऽ लेने अछि । परन्तु हुनक जे आधुनिक काल, ताहिमे ओ वास्तविक ऐतिहासिक रूप धारण कए लैत अछि ।

वर्णनकर्त्ताक रूपमे कल्हण

इतिहास दू तत्वसँ उत्पन्न होइछ–अतीत वा ओकर अवशेष (मूर्त्त आ अमूर्त्त रूप मे) एवं ओकर पुनर्निर्माण हेतु लिखबाक समय-कल्पना कौशल। (बनावट वा धाँधली कएने बिनु) इतिहासकारकेँ उपलब्ध स्रोत आवश्यक रूपेँ बाह्य होइछ। एहिमे ने किछु जोड़ि सकैत छी, ने बदलि सकैत छी। 'राजतरंगिणी'क अपन प्रस्तावना मे, जतयसँ हम ओकर स्रोतसभक प्रसंग जनैत छी, कल्हण सापेक्ष गुणवत्ताक विषयमे अपन धारणा अभिव्यक्त नहि कएल। कल्हण द्वारा उपयोग कएल गेल कोनहु पूर्ववर्ती पुरालेख तुलना करबाक लेल उपलब्ध नहि अछि। तेँ वर्णनकर्ताक रूपमे कल्हणक मूल्यांकन करबाक लेल आओर हिनक इतिहास-विषयक धारणाक मूल्य-निर्धारण हेतु हमरा लोकनिकेँ आन्तरिक साक्ष्य पर निर्भर रहय पड़त।

तत्कालीन अद्भुद परम्परागत आख्यान आ उपाख्यान सभक वर्णन जाहि तरहेँ कएल गेल अछि, ताहिसँ ई ज्ञात होइछ जे कल्हण ओहि सहज विश्वासमे भागीदार रहथि, जाहिसँ एकर उत्पत्ति भेल छल। "स्पष्टतः असंभव घटना, अतिशयोक्ति आ अन्धविश्वास-जकरा लोक -परम्पराक ऐतिहासिक संस्मरण सभमे मिश्रण कए लैत छल ओसभ कोनहु, शंका वा समीक्षात्मक सन्देहक बिना व्यक्त कयल गेल अछि।" स्टीनक ई निर्धारण ठीक भए सकैत अछि, किन्तु एहि विषयमे कल्हणक प्रशंसा करबाक चाही जे ओ ओहि शंका करऽबला व्यक्ति सभक सेहो उल्लेख करैत छथि, जनिका मनमे मेघवाहन आ दोसर प्राचीन राजा सभक (७.११३७) अद्भुत कार्यक सभक प्रति संदेह छलनि। यद्यपि कल्हण स्वयंकेँ अंधविश्वासी सभसँ भिन्न प्रदर्शित करैत छथि, तथापि ऐतिहासिकताक हिनक धारणा ओहि समीक्षात्मक दृष्टिक अभावकेँ देखार कए दैछ जे आधुनिक कालमे इतिहासकारक संग सम्बद्ध अछि। पश्चिमी लेखक सभ इंगित कयने छथि जे भारतीय मानसिकता पौराणिक आख्यान - परम्परा आ इतिहासक बीच रेखा नहि खींचलनि।

वास्तविक इतिहासक परम्परागत भारतीय धारणा विशिष्ट रूपेँ प्राच्य छल। पौराणिक कथा अन्य वीरयुगीन आख्यान पढ़बाक काल मध्ययुगीन भारतीय इतिहासकार एक क्षणक लेल अपन अविश्वास केँ निलम्बित कय लैछ। ओकरा ई आख्यान सभ ओतबहिँ सत्य प्रतीत होइछ जतेक निकट अतीतक घटना। फलस्वरूप भारतवर्षमे इतिहास, पश्चिमी अर्थमे, राजनीतिक इतिहासक रूपमे नहि लिखल गेल, ओ धार्मिक कल्पनाशीलता, पौराणिक तथ्य आ गल्पक मिश्रण भऽ गेल।

पौराणिक आख्यान परम्पराकेँ ऐतिहासिक सत्यसँ पृथक करबाक कम प्रयास कएल गेल। अतीतक अचरज भरल घटना आ पुराख्यानक प्रति कल्हणक सहज विश्वासक एहिसँ स्पष्टीकरण भए जाइछ - भनहि ओ प्रारम्भिक गोणंद राजा सभक *महाभारत* युद्ध सँ सन्दिग्ध सम्बन्ध जोड़थि अथवा ललितादित्य वा जयपीडक आख्यानत्मक वीरकर्मक चित्रवत् विशद वर्णन करथि, जनिक शासनकाल हिनक समयक अपेक्षाकृत निकट रहय।

कश्मीरक हिमवन्त घाटीक ऐतिहासिक पृथकता पर सेहो विशेष रूपेँ विचार करय पड़त। विशाल पर्वत प्राचीर सभ एहि भूखण्ड केँ विदेशी आक्रमणसँ निरन्तर मुक्त रखलक, संगहि एकर विशिष्ट ऐतिहासिक अस्तित्व केँ सेहो बचौने रखलक। कश्मीरक इतिहासक सुस्पष्ट स्थानीय स्वरूप कल्हणक 'राजतरंगिणी' मे यथावत् प्रतिबिम्बित अछि। प्रकृति - प्रदत्त सुनिश्चित सीमा युक्त छोट पहाड़ी प्रदेश होएबाक कारणें, भूमि-रचना, मनुष्य आ व्यवहारक पूर्ण ज्ञान प्राप्त करब कल्हण लेल अपेक्षाकृत सरल छल; जाहिसँ ई ग्रंथ आओर बेसी मूल्यवान भए गेल अछि–संकीर्ण सीमा सभसँ उत्पन्न दोषकेँ छोड़ि।

पुरालेखक रचनाकारक रूपमे, कल्हण निर्णयक स्वतंत्रता सुरक्षित रखलनि। जाहि राजा सभक अधीन ओ लिखलनि, तनिका सभक दोष आ कमजोरीकेँ स्पष्ट करबा मे विचलित नहि भेलाह! कोनो लक्ष्यक लेल नर - नारीक साधन आसाध्य दूनू पक्षक हुनक सूक्ष्मदर्शी अन्वेषण हुनका आधुनिक रूपमे प्रस्तुत करैत अछि। राजा हर्षक त्रासद अन्तक मर्मस्पर्शी वर्णनमे, सेहो जतय भावुकता अपन चररम बिन्दु पर अछि कल्हण देखबैत छथि जे नियतिक न्याय कश्मीरी इतिहासक नीरों केँ कोना परास्त करैछ। ऐतिहासिक व्यक्ति सभ जेना तुंग, सुस्सल आ अनन्त; अपन - अपन पृथक् चारित्रिक लक्षण संग प्रस्तुत कएल गेल छथि, सामान्य रूपेँ नहि। इतिहासक नाटकक अनेक गौण पात्रक सजीव पार्श्व-चित्र प्रस्तुत अछि। काव्य आ ऐतिहासिक चरित सभमे निर्जीव तथा अमूर्त्त चरित्र - चित्रणक व्याप्तिक विपरीत 'राजतरंगिणी'क यथार्थवादी चित्रण सभ, तीक्ष्णताक कारणे अविस्मरणीय अछि।

ऐतिहासिक सत्यताक जे गुण एहि चरित्र सभमे यथार्थक आभास दैछ एहि 'राजतरंगिणी'क आनो भागक घटना सभक वर्णनमे सर्वत्र परिलक्षित अछि। 'वास्तविक इतिहास' (महत्वपूर्ण इतिहास) लिखल जयबाक सम्बन्ध आधुनिक इतिहासकारक दृष्टिकोणसँ, 'राजतरंगिणी'क उत्तरवर्त्ती भाग सभमे कल्हण द्वारा विशिष्ट घटनाक अननुपात दीर्घ वर्णनकेँ समालोचक दोष कहैत छथि, किन्तु कल्हणक दृष्टिकोणसँ ई दीर्घ वर्णन 'राजतरंगिणी'क ऐतिहासिक अन्तस्थल रूपमे एकर परिपूरक अछि। कखनहुकेँ एहन लगैत अछि जे साक्ष्यक विवरण द्वारा कल्हण घटना सभक निकट सम्पर्कमे रहथि; सुस्सलक हत्या, रानी सूर्यमतीक सती होएब, कलशक मृत्यु जकाँ करूणाजनक घटना सभक वर्णन एकर उदाहरण अछि। तै प्रायः एहि घटना सभक; वर्णन दीर्घ भऽ गेल छैक। स्टीनक

शब्दमे "यदि राजा हर्षक अन्तिम संघर्ष, हुनक पलायन आ अन्त, भिक्षाचारक दुःखद मृत्यु आ लोहारक पतन सदृश घटनाक विवरण हमरा सत्य लगैछ अछि; तऽ एकर कारण वर्णनमे यथावत् विस्तारक आधिक्य मात्र नहि अछि।" काव्यगत अतिशयोक्ति आ अलंकार-रहित वर्णनक प्रभावोत्पादक सरलता ओकर प्रामाणिकता बढ़बैछ। रामायण वा महाभारतक अनेक घटनाक उल्लेख करैत कल्हण कश्मीरी इतिहासक महत्वपूर्ण घटना सभसँ ओकर समानता पर जोर देलनि अछि। संगहि प्रकृतिक रहस्यमयी मोहकतासँ परिपूर्ण कश्मीरी घाटीक *ग्राम्यस्वर्गक* प्रति हिनक प्रेम अनेक अन्तःस्फूर्त पद्य परिच्छेद सभमे प्रस्फुटित अछि। एहूसँ बेसी, कल्हण हमरा लोकनिकेँ ओ सभ किछु कहय चाहैत छथि, जे हम सभ जान' चाहैत छी जेना समकालीन स्त्री-पुरूष दखबामे केहन रहय, की पहिरैत रहय आ भोजन कोना करैत रहय तथा ओकरा सभक मान्यता सभ की रहैक एवं स्त्री-पुरूष सम्बन्धक शास्वत समस्याक प्रति ओकर सभक की रूखि रहैक। एहि तरहें हम कल्हणक समय केर राजनीतिक आ सामाजिक परिस्थितिक जाहि शुद्ध रूपक विवरण एतऽ पबैत छी से अन्य भारतीय लेखकक कृतिमे हमरा उपलब्ध नहि अछि।

कल्हण मे – कश्मीरी लोकक एक प्रमुख गुण - हास्य वृत्ति आओर मानवीय कमजोरीकें शीघ्र बूझब यथेष्ट रूपेँ विद्यमान रहनि।

रेखाचित्र सभमे हिनक कौशल सर्वाधिक दृष्टिगोचर होइछ - विशेषतः ओहि निम्न नवधनाढ्यक रेखाचित्रमे जे - कपट द्वारा समाज मे अपन स्थान बनौलक; ओ एहि रेखाचित्र सभमे हास्यक पुट दैत छथि, जे कखनहुँके व्यङ्ग-विनोदक कारणे *रेबी लैसक* स्मरण दिअबैछ। हास्यपूर्ण, परन्तु तीक्ष्या व्यंग्य द्वारा ओ कश्मीरी सैनिकक बोली, आत्मश्लाघा आ जन्मजात कायरताक भेद खोलैत छथि। ओ एहन सैन्य-दल सभक वर्णन करैत छथि जे भय उत्पन्न कर'बला शत्रुक समक्षसँ अथवा ओकर आगमनक उड़न्ती खबरि मात्र सँ युद्धस्थल सँ नाङ्गरि सुटकाक' पड़ा जाइत छल। हम एहन प्रतिस्पर्धी सेना सभक विषयमे पढ़ैत छी, जे एक - दोसरक भयसँ कँपैत छल। कल्हण अपन देशवासी सभक 'वीरता'क तुलना ओहि 'राजपुत्र' आ तराईक भाड़ाक सैनिकक वीरतासँ करैत छथि, जे कल्हणक समयमे स्पष्ट रूपेँ राजागणक प्रधान अवलम्ब छल। राजागण आ पुरोहितक चरित्र आ क्रियाकलाप पर अनेक निन्दा तथा हास्यजनक चित्र एहि कृति मे उपलब्ध अछि।

कल्हण ओहि पुरोहित वर्गक प्रति अपन घृणाकेँ नहि नुकबैत छथि, जे जेहने अज्ञानी तेहने अभिमानी छल; राजकार्य पर एकर घातक प्रभावक ओ कटु टीका करैत छथि। हास्यपूर्ण वर्णन सभमे, कल्हण एहि समुदायक आत्मश्लाघा आ भीरूताक मिलल-जुलल अवगुणक हँसी करैत छथि एवं ओकर सभक पवित्र पदक प्रति स्वल्प आदर प्रदर्शित करैत छथि।

यद्यपि उपहासपूर्ण टीका सभ लिखबामे कल्हण प्रवीण छथि, ओ ऐतिहासिक घटना सभक वर्णनकर्ताक रूपमे सर्वाधिक सफल छथि। राजा हर्षक दुःखद मृत्युक वर्णन करैत समय वा राजा अनन्तक दाहसंस्कार आ हिनक रानी सूर्यमतीक सती होएबाक विवरणमे ओ काव्यकलापक शिखर पर पहुँचि जाइत छथि। विश्वासघाती सेवक - द्वारा तिरस्कृत आ अनेक दुःसाध्य विपत्तिसँ आवेष्टित राजा हर्षक असहाय स्थिति आ उत्कर्ष बिन्दु पर, सम्मान रक्षार्थ हुनक अन्तिम संघर्षक वर्णनमे कल्हण उच्चकोटिक नाट्यक स्तरकेँ प्रदर्शित करैत छथि। एही तरहेँ, ओ करूणाजनक प्रसंग, जाहिमे आहत ब्राह्मण सभक दारूण शापक चरम परिणति जयापीडक मृत्युमे होइत छैक, प्रभावोत्पादक अछि, उत्प्रेक्षा आ भाषा-शैलीक प्रत्यक्ष सरलतासँ नाटकीयता बढ़ि गेल अछि।

भारतवर्षक अनेक भाग मे महग विजय अभियानक कारणे राजा जयपीडक (तरंग-४) बुद्धि पर 'लोभक पर्दा' पडि गेल छल आ ओ मन्दिर सभक सभ सम्पत्ति आ खेतक फसिलक सोलहन्नी जप्ती क' 'लेने छलाह जाहि कारणे एक दिससँ सभ ब्राह्मण' विरोध मे हुनक मृत्युक मांग कऽ रहल छल। जाहिमे कल्हणक सरलताक तुलना एसकिलससँ कयल जा सकैछ –

"ब्राह्मण सभमे कतेक अद्भुत साहस छल ? अनेक तऽ विदेश पड़ा गेल मुदा जे बचल छल सेहो विरोधमे (ओकर) मृत्यु मँगबासँ संकोच नहि कयने छल (६३२)

"यदि एक दिनमे १०० सँ एकोटा कम ब्राह्मण मरय तँ हमरा सूचना देल जाय," ई छल राजाक उक्ति जे क्रूरतामे सभकेँ जितने छल।"(६३३)

ओकरा (ब्रह्मतेजक सागर इत्तिल नामक द्विज) सँ राजा हँसेत कहल –"विश्वामित्र आदिक क्रोधसँ हरिश्चन्द्र आदि नष्ट भए गेल। तोरा तम सयने की सभ होयत से बाजऽ? (६५०)

धरती पर हाथ पटकैत क्रुद्ध ब्राह्मण उत्तर देल - "हमरा क्रुद्ध भेला पर ब्राह्मणक अभिशाप क्षण-मात्रहिमे तोरा ऊपर किएक नहि खसत ? (६५१)

ई सूनि धृष्टतापूर्वक अट्टाहस करैत राजा ब्राह्मण सँ कहल,"त ब्राह्मणक अभिशाप खसय, ओ विलम्ब किएक लगाए रहल अछि ?" (६५२)

"वस्तुतः देख ओ खसैत छौक,रे पापी", जखनहि ब्राह्मण ई कहल, तखनहि राजाक शरीरपर तम्बूसँ बिच्छिन्न भय सोनाक एकटा खाम्ह खसि पड़लैक।"(६५३)

एहिसँ ओकर शरीरमे एक घाओ भए गेल, आ अंग फूलि गेल। घाव पीजसँ भरि

---

१. कश्मीर प्राचीन कालहिसँ विद्वत्स्थली रहल अछि; जकरा सत्यापित करएवलामे ह्यूनसांग सेहो छथि, जे कल्हणसँ पाँच सदी पूर्व कश्मीरक यात्रा कएने रहथि। अन्य विषय सभक बीच ओ लिखलनि, "कश्मीरी व्यक्ति विद्याप्रेमी आ संस्कृत छथि। अनेको शताब्दीसँ कश्मीरमे विद्याकेँ अत्यधिक आदर देल जाइत रहल अछि।"

गेलैक आ ओहि मे असंख्य कीड़ा लागि गेल, जकरा कमचीसँ निकालबाक आवश्यकता पड़ल ।(६५४)

कतेको राति धरि पीड़ा भोगि, जे नरकक कष्टक पूर्व-सूचना दैत छल, शरीर छोड़बाक लेल आफन तोड़ैत ओकर प्राण एकदिन निकलि गेलैक (६५५)

निम्नलिखित पद्यमे उपर्युक्त कथाक शिक्षा सन्निहित अछि – "राजा एवं मत्स्य, जे क्रमशः धन आ गन्दा पानिक आवश्यकतामे अपन स्थान छोड़ि दैछ, गलत मार्ग पर चलैत अछि; फलस्वरूप नियतिवश विपर्यय आ मलाह क्रमशः ओकरा नरक आ जालमे लोभाए फँसबैत छैक (६५८)"

जखन ललितादित्य अपन विजय-यात्राकेँ विना पूरा कएने कश्मीर वापस नहि अयलाह, तखन ओ अपन मंत्री (तरंग ४) केँ किछु नीति - निर्देश लिखि पठौलनि, जकरा कल्हण एहि तरहें अलंकृत पद्य मे व्यक्त केलनि अछि :-

"बेर - बेर एहन व्यवस्था कएल जाय, जाहिसँ गामक व्यक्ति लग खेतक रकबाक अनुसार अपन आ बड़दक बुतातक लेल अन्न वार्षिक आवश्यकतासँ बेसी नहि बचैक ।(३४७)

कारणजे यदि ओकरा लग बेसी धन रहतैक, तँ' ओ एक सालमे राजाक अधिकारकेँ नहि माननिहार भयानक डमार भए जाएत (३४८)

जखन ग्रामीण जनताकेँ अन्न-वस्त्र, स्त्री, कम्बल, आभूषण, घोड़ा आ राजसी आवास उपलब्ध भऽ जाइछ आ जखन राजा उद्दण्डतावश, आवश्यक कोटिक दुर्ग-प्राचीरक सुरक्षा नहि करैछ ; जखन राजकर्मचारीक चरित्रक आवधिक समीक्षा नहि होइछ आ जखन सेनाक खर्चा एकहिँ जिलासँ उगाहत जाय लगैछ ; जखन राजकीय अधिकारी सभ आपसमे वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित क' एकटा गुट बना लैछ आ राजा प्रशासनकेँ केवल अधिकारिएक आँखिसँ देखऽ लगैछ तखन बूझि लेबाक थिक जे प्रजाक दुर्दिन आबि गेलैक (३४९-५२)

अध्यायक समाप्ति पर हम आनन्द ली कल्हणक किछु अर्थगम्भीर सूक्ति सभक (जकर शिक्षा एखनहु ओतबए सत्य अछि जतेक ओहि समय छल), जाहिसँ स्थान-स्थान पर आख्यान अलंकृत अछि –

"केहन आश्चर्य अछि जे यशक निर्झरमे अपनाकेँ स्वच्छ कयलाक पश्चात राजासभ दुर्गुणक कादो सँ अपनाकेँ मलिन कए लैत अछि; ओही रूपेँ जेना स्नान " बाद हाथी अपना ऊपर गर्दा उझिल लैत अछि । (५.१६४)

ककरहुँ पर विश्वास नहि केनिहार कौआ दोसराक बच्चा केँ अपन बूझि लैत अछि; दूध वा पानिके पृथक् करबामे निपुण हंस रिक्त मेघक प्रति कंपित भए जाइत अछि; जनताक अधीक्षण कए जकर बुद्धि तीक्ष्ण भए गेल, ओ राजा सेहो धूर्त्तक शब्दकें सत्य

मानि लैत अछि। सोचबाक चाही भाग्यक व्यवस्था, जाहिमे चतुरता आ मूर्खताक सम्मिश्रण अछि। (६.२७५)

वीर व्यक्ति सोचैत अछि जे अपन लक्ष्य वीरतासँ प्राप्त करी आ कायर युक्तिसँ से जँ नहि त एहि दुनूमे कोनहु अन्तर नहि रहत। (६.३६३)

जहिना ज्वलनशील नहिओँ रहने गाछ सभक लकड़ी बानरकेँ ठंडा आ वर्षासँ बचाए सकैछ आ हवा बरसिंहाक देहकेँ शुद्ध करबामे समर्थ छैक तहिना दृढ़ - निश्चयी व्यक्ति द्वारा लक्ष्यक प्राप्ति ओकर तत्परता पर निर्भर रहैछ; वस्तु सभमे सहज तात्विकता नहि होइत छैक। (६.३६४)

साँप मात्र हवा पीबि जीवित रहैत अछि, अन्हार बिलमे सुतैत अछि, नाङट रहबाक कारणे प्रेमक्रीड़ाक काल माँगले-चाङ्गले आवरण सँ काज चलवैछ, आ एहि रूपक कंजूसी करितहुँ ओ दोसराक लेल खजानाक रक्षा करैत अछि। परोपकार करबामे कंजूससँ बढ़ि की क्यो अछि ? (७.५०२)

नदी-नालाक अनेक स्रोत यथेष्ट रूपेँ पृथ्वीकेँ अन्दरसँ सम्पोषित करैछ; वर्षाक जल आकाशसँ खसि नाला - बाहाक माध्यमे सुखायल नदीक पाट सभकेँ भरैछ। एहिना माग्योदय भेला पर सभदिससँ धनक वर्षा होमऽ लगैत छैक; कोन एहन दिशा जे ओकर आगमनक मार्ग प्रशस्त नहि करैछ ? (७.५०५)

दूइए - चारि टा खऽढ़क जरने खढ़होरि जरि जाइछ आ पुनः सम्पूर्ण दिनक संचित अग्नितप सँ वर्षा भऽ जेबाक कारणे ओएह भू-खण्ड हरियर-कन्च भऽ जाइछ; ते प्रारबधक अनेक आश्चर्यजनक क्रिया-कलाप पर निर्भर होयब कठिन किएक तऽ एकर कोनो नियम नहि छैक। (८.१९७०)

शान्तिक परमानन्द प्राप्त करबाक लेल महान आत्मा होएब आवश्यक अछि; अन्यथा मनक वृत्ति कोमल वा कठोर भए सकैछ। पदाघातसँ मानहानिक बोध होइत छैक, किन्तु आश्चर्यक विषय जे चन्द्रकान्तमणि, पाथर रहितहुँ अमृत - ज्योतियुक्त शीतांशु (चन्द्रमा)क पदसँ आहत भए सस्नेह पिघलए लगैत अछि। (८.३०३०)

नृत्यशालामे विदूषक, प्रहसनमे चुटुक्का कहएबला, गोशालाक कुकूर अपन घरक अंगनामे पहाड़ी मूस पहाड़क अपन बिलमे आओर प्रसन्न वीर सदृश लगनिहार चापलूस राजमहलमे, अपन-अपन शूरता देखबैत अछि; दोसर ठाम ई सभ झीलसँ बाहर निकालल गेल काछु जकाँ भ' जाइछ। (८.३१३९)

अन्ततः, 'राजतरंगिणी'क अध्ययन सरल नहि अछि। आठम तरंग (३४४९) श्लोक सभसँ युक्त सर्वाधिक पैघ तरंग), जाहिमे अनेक प्रकारक समकालीन घटनाक यथार्थ-विषम वर्णन छैक कल्हणक भ्रामक वाक्य-विन्यास, वक्रोक्ति आ अन्य काव्यदोषसँ युक्त अछि। आधुनिक इतिहासकार लेल एकटा आओर कठिनता छैक, स्पष्ट बुझाइछ जे कल्हण

ओहि समकालीन पाठक वर्गक लेल ई लिखलनि जे ओहि समयक कश्मीर सँ नीक जकाँ परिचित छल। ओ ई मानि लैत छथि जे पाठक तत्कालीन छोट - छोट पात्र सभक व्यक्तिगत पृष्ठभूमिसँ परिचित अछि ओ कतेको बेर व्यक्ति सभकेँ पदनामसँ उल्लेख कए देने छथि। ई दोषसभ अनभिप्रेत रहितहुँ, कल्हणक आख्यानक सर्वाधिक प्रामाणिक ओ विशद अंशक महत्व घटाए दैछ।

निस्सन्देह, एहि पुरालेखक बेसी भाग जाहि मे सामान्य घटना सभक वर्णन वा प्रासाद-षड्यंत्र सभक बेर-बेर आबएबला प्रसंग युद्ध-नायक वा गद्दी पर मिथ्या अधिकार करयबला विद्रोहक वर्णन अथवा प्रजाजनक निरन्तर असुविधाक विवरण छैक एकटा अधिकांशतः नाटकीय नहि बनबैत छैक, तथा एकर रचना अनिवार्यतः पद्यमय गद्यमे छैक। पाठकके उबि जएबासँ बचएबाक लेल कल्हण उपमा, विरोधाभास आ श्लेष, आदि अलंकार सभक प्रयोग करैत छथि; किन्तु ओ प्रायः कखनहुँ आलंकारिक प्रभावक उत्पत्ति लेल प्रयास नहि केने छथि। गद्यात्मक वर्णनक एकरसताकेँ दूर करबाक लेल संक्षिप्त आ प्रभावोत्पादक भाषण एवं मनोरंजक वार्तालाप सेहो समाविष्ट कएल गेल अछि। फलस्वरूप, पात्र सभक अभिप्राय आ प्रेक्षकक पृथक् - पृथक् प्रतिक्रियाकेँ पाठक नीक जकाँ बूझि सकैछ। एही लक्ष्यक प्राप्ति लेल, आख्यानक बीच-बीच एहन - पद्य राखल गेल अछि जाहिमे शिक्षा वा नीतिमूलक सूक्ति सभ अछि एवं जकरा बेसी विस्तृत छन्दमे लिखल गेल अछि; जाहिसँ ओ 'राजतरंगिणी'क सामान्य श्लोक सभसँ भिन्न लगैक। सर्वसाधारण दैनन्दिन प्रकरण सभक आलेखनमे सेहो कल्हण तीक्ष्ण कवि-कल्पनाक प्रदर्शन कएल आओर एतहु हिनक भाषा ललित ओ शालीन अछि। अतएव भारतीय आ विदेशी, प्राचीन आ नवीन साहित्य - संकलन सभ मे कल्हंकेँ अत्युच्च स्थान प्रदान कएल गेल अछि, जे वर्णनकर्ताक रूपमे हिनक अप्रतिम कौशलक प्रमाण अछि। कल्हण द्वारा उद्धृत अनेक 'कहबी' एखनहु कश्मीरमे प्रचलित अछि।

प्रागैतिहासिक ओ प्रारंभिक काल

कल्हण कहैत छथि जे ओ अपन रचना शक - संवत् १०७० तदनुसार लौकिक संवत् ४२२४, (ईस्वी सन् ११४८)मे प्रारम्भ कएल आओर संवत्४२२५ (ईस्वी सन् ११५०) मे समाप्त कएल। पहिल तीन तरंग सभमे ३०५० वर्षक एकत्र कालक विवरण अछि। विवरणक अधिकांहा भागमे, प्रायः आख्यान-परक परम्परा सभ आ किंवदन्तीक बीच-बीचमे, ५२ गौट शासनक वंशावली मात्र अछि।

भगवान शिवक स्तुतिसँ अपन ग्रंथकेँ आरम्भ करैत, कल्हण पाठककेँ 'सहृदय सखा' कहि सम्बोधित करैत 'राजाक नद'सँ प्रवाहित स्थायी भावक आनन्द रसकेँ स्वच्छन्दतासँ पीवाक निमंत्रण दैत छथि। तखन ओ कश्मीर घाटीक उद्भवक विषयमे कहैत छथि जे कोना ई प्रारम्भमे 'सती-सर' (सतीक झील) छल आ जलोद्भव राक्षसकेँ मारएबला प्रजापति कश्यपक प्रादुर्भावक कारण कश्मीर राज्य अस्तित्वमे आएल। समस्त नाग जाति सभक अधिराज नील द्वारा संरक्षित ई प्रदेश 'आत्मिक शक्ति द्वारा जेय अछि, सैनिक शक्ति द्वारा नहि' आओर 'तीक्ष्ण किरणबला सूर्य गर्मीमे सेहो कोमल बनि एकर सम्मान करैत अछि। 'कल्हण एहि घाटीक विशेषता सभ एहि तरहेँ कहलनि - 'विद्वत्ता,' अट्टालिका, केसर, हिमजल, अंगूर, आदि 'जे स्वर्गो मे दुर्लभ से एत' सर्वसुलभ छैक।

'राजतरंगिणी'क प्रारम्भमे वर्णित आख्यान आ किवंदन्ती सभ कल्हण अपन समकालीन जनश्रुतिसँ लेलन्हि। 'किछु स्थान पर,'स्टीन लिखैत छथि, "हम कल्हणकेँ लोकप्रिय परम्परा सभक स्पष्टतः विशेषोल्लेख करैत पबैत छी; जे हिनक द्वारा स्वीकृत वा अनुसृत अधिकारीसँ प्राप्त विवरणसँ भिन्न अछि।"

कल्हणक अनुसार, प्राचीनतम समयमे ५२टा राजा कश्मीर पर शासन कएलनि। एहिमेसँ मात्र चारि - गोणंद हुनक पुत्र दामोदरक पत्नी यशोवती हुनक पुत्र आ गोणंद २ - क नीलमत-पुराणमे उल्लेख अछि। तत्कालीन जनश्रुतिक आधार पर कल्हण एहि राजा सभक *महाभारतक* किछु आख्यानसँ सम्बन्ध जोड़ैत छथि। कल्हण **ई विवरण** दैत

---

१. कश्मीर प्राचीन कालहिसँ विद्वत्स्थली रहल अछि: जकरा सत्यापित करएबलामे ह्यूनसांग सेहो छथि, जे कल्हणसँ पाँच सदी पूर्व कश्मीरक यात्रा कएने रहथि। अन्य विषय सभक बीच ओ लिखलनि, "कश्मीरी व्यक्ति विद्याप्रेमी आ सुसंस्कृत छथि। अनको शताब्दीसँ कश्मीरमे विद्याकेँ अत्यधिक आदर देल जाइत रहल अछि।"

छथि जे गोणंद[१]-मगधराज जरासन्धक सम्बन्धी छल आ जखन जरासंध कृष्णसँ लड़ैत छल, तखन गोणंद -१ जरासंधक सहायतार्थ गेल छल। युद्धमे गोणंद–१ मारल गेल। ओकर पुत्र, दामोदर १, जे उत्तराधिकारी बनल, अपन पिताक अपमानजनक बदला लेबए चाहैत छल। ओही कृष्णसँ लड़ैत ओहो *गांधार* मे मारल गेल। कृष्णक सलाह पर शिष्टजन सभ ओकर पत्नी गर्भवती यशोवती केँ रानी बनाओल। ओकर पुत्र गोणंद-२ शैशवे कालमे राजा अभिषिक्त भेल। महाभारतक युद्धक समय ओ नेना छल – सम्भवतः तेँ महाभारतमे कश्मीर वा ओकर शासकक उल्लेख नहि अछि।

तखन कल्हण (१.८३) एकाएक कहैत छथि जे गोणंद द्वितीयक बाद 'अनुवर्ती ३५ राजाक विवरण विस्मृतिक सागरमे डूबि गेल, ओहिसँ सम्बन्धित अभिलेख सभक नष्ट भए जएबाक कारणे हुनक सभक नाम आ काज सेहो विनष्ट भए गेल।

भारतक सभसँ पैघ पीठ पानिक झील, ऊलर झील मे एक नगरक डूबि जएबाक' आख्यान एखनहुँ प्रचलित अछि, संगहि एहि अन्तिम राजा सभसँ सम्बन्धित लोलर, बोँबुर, नागरे आ *हिमालक* लोक-कथा सभ सेहो।

कश्मीरी सभमे ई विश्वास प्रचलित अछि जे पाण्डववंशी[२] राजा सभ सेहो एक समय घाटीमे राज्य कएने रहथि आओर उपर्युक्त विस्मृत राजागणमेसँ कम-सँ-कम २३ पाण्डववंशी रहथि। एहन कहल जाइछ जे अर्जुनक एक प्रपौत्र *हरणदेव* एहि राजा सभमेसँ पहिल छल, जे षडयंत्र द्वारा गोणंद द्वितीयक हत्या करबाक बाद पाण्डववंशक स्थापना कएल।

एहि राजा सभक बाद आठ टा राजा भेलाह-लव, कुश, खगेंद्र, सुरेंद्र, गोधर, सुवर्ण, जनक एवं शनीचर। एहिमेसँ पहिल चारि एकहि वंशक रहथि तथा बाँकी दोसर वंशक। एहि शासक सभ द्वारा संस्थापित किछु नगरक चिह्न ताकि लेल गेल अछि, परन्तु एकर ऐतिहासिकताक प्रसंगमे निश्चित रूपेँ किछु नहि ज्ञात भेल अछि।

'राजतरंगिणी' मे पहिल ऐतिहासिक नाम *अशोकक* अछि। कल्हणक अनुसार अशोक जिनमत (अर्थात् बौद्धधर्म) अंगीकार कएने रहथि तथा ओ अनेक स्तूप ओ विहार बनएबाक अतिरिक्त श्रीनगरी नामक एक नगरी सेहो बसौलनि। ओ *अशोकेश्वर* नामक एक शैव-मन्दिर सेहो स्थापित केलनि। कल्हण अशोकक उल्लेख एक स्थानीय शासकक रूपमे करैत छथि, किन्तु (तिथिक समयक्रममे अन्तर रहितहुँ) इतिहासकार ई मानैत छथि जे ई ओएह मगध-सम्राट अशोक छथि, जनिक आधिपत्य पूर्वमे बंगाल धरि आ पश्चिममे हिन्दूकुश धरि छल।

---

१. किछु मुस्लिम पुरालेखक द्वारा प्रदत्त सूचना विश्वासक योग्य नहि अछि

२. विख्यात मार्त्तण्ड आ दोसर पुरान मन्दिर सभक ध्वंसावशेष सामान्य व्यक्तिक भाषामे पाण्डवलारी-*पाण्डवक भवन* कहल जाइछ।

कल्हण कहैत छथि जे अशोक कश्मीर मे हरमुकुट-गंगाक तीर्थस्थलमे शिवभूतेशक पूजा कएल आओर "तपस्या द्वारा भगवानकेँ प्रसन्न कए एक पुत्र प्राप्त कएल।" ओ पुत्र, जलौक, अशोकक उत्तराधिकारी बनल आओर एक स्वतन्त्र सम्राट भेल। कल्हण द्वारा उल्लिखित अनेक परंपरा सभक ओ नायक छथि। ओ प्रत्येक दिन भूतेश आ विजयेश्वरक मन्दिरमे पूजा करए जाइत छल। महान योद्धा जलोक 'म्लेच्छ' सभकेँ देशसँ बाहर निकालि देल, जे सभ सम्भवतः कश्मीरक सीमान्त प्रदेशकेँ जितबाक प्रयास करएबला इंडो - ग्रीक आक्रमणकारी छल। ६० वर्षक शासनक बाद जलौक अपन रानीक संग अन्तिम दिन ध्यानमे व्यतीत करबाक लेल राज्यकार्यसँ निवृत्त भए शिरमोचन चल गेलाह।

दामोदर द्वितीय जे, सम्भवतः अशोकक वंशज छल, जलौकक उत्तराधिकारी बनल। ओ पठारक ऊपर दामोदर उदर नामक एक नगर बसौलक; जे वर्त्तमानमे श्रीनगरक हवाई अड्डा अछि आ ओ एखनहुँ एही नाम सँ जानल जाइत अछि।

मौर्य साम्राज्यक अस्त भेला पर पश्चिमोत्तर भारतमे लगातार विदेशी आक्रमण होइत रहल। कश्मीर घाटी सेहो एहि आक्रमण सभसँ बचल नहि होएत। किन्तु दामोदर द्वितीयक मृत्यु आ कुषाण (तुसष्क) सम्राट सभक आगमनक बीच 'राजतरंगिणी'मे प्रायः दू शताब्दीक अन्तर अछि। *हुष्क*, *जुष्क* एवं *कनिष्क* नामक तीन *कुषाण* राजा सभक क्रमशः हुविष्क (शिलालेख सभक साक्ष्यक आधार पर), वशिष्क एवं कनिष्क प्रथम वा द्वितीय (बेसी ठीक रूपमे पहिले) क संग तादात्म्य स्थापित भए जएबाक कारणे-हम एक बेर पुनः, कल्हणक सहायतासँ, प्रामाणिक इतिहासक ठोस धरतीपर पएर रखैत छी। प्रायः एकहि समय शासन करएबला एहिमेसँ प्रत्येक शासक एक - एक नगर बसाओल। ई एखनहुँ हिनक नामसँ जानल जाइत अछि - हुष्कपुर, जुष्कपुर एवं कनिष्कपुर।

कल्हण द्वारा देल गेल *तुसष्क* शासक सभक विवरण कश्मीर घाटी मे कुषाण शासनक रहब सिद्ध करैछ। (ई तथ्य जे ई लोकनि कश्मीरमे बौद्ध धर्मक स्थापना कयलनि अन्य स्रोत सभसँ सेहो पुष्ट होइत अछि, विशेषतः ह्यूनसांग ओ अल्बेरूनी) बौद्ध परम्पराक अनुसार, कनिष्क कश्मीर मे तृतीय बौद्ध सभा बजाओल। कुषाण अनेकानेक*मठ* आ *चैत्य* बनबौलनि से निश्चित अछि, यद्यपि एहिमेसँ कोनहु बचल नहि अछि। ऐतिहासिक बौद्ध सभा बौद्ध - धर्मक इतिहासमे एक महत्वपूर्ण घटना अछि। एहि सभा द्वारा महायान मतकेँ श्रेष्ठता प्रदान कएल गेल; ई (मत) कश्मीर मे कल्पित आ विकसित कएल गेल।

अश्वघोषक उपरान्त द्वितीय स्थविर मानल जाएबला आ *महायानक* महत्तम व्याख्याकार *नागार्जुन*[२] कल्हणक अनुसारेँ, अपन जीवनक अधिकांश भाग, *शरदार्दवन*

---

१. तुलनीय, पृ. २१, पाद-टिप्पणी

२. जापानी विद्वान सभक अधुनातन टीकासभ द्वारा नागार्जुनक समीक्षात्मक ओ सूक्ष्म दर्शनमे अभिरूचि पुनः जागृत भए गेल अछि

(आधुनिक हरवन, जतय बौद्ध ध्वंसावशेष खोधि निकालल गेल अछि)क विद्यापीठमे बितौलनि ।

एहन प्रतीत होइत अछि जै महान् कुषाण सभक पतनक बाद, स्थानीय शासक, जेना अभिमन्यु प्रथम सत्तामे अयलाह, किन्तु अपन कुषाणवंशीय रहितहु ओ बौद्ध-धर्म-विरोधी लहरि कें रोकि नहि सकलाह। अगिम राजा गोणंद तृतीय आ बादक चारि राजामेसँ प्रत्येक कश्मीरक परम्परागत धर्म *शैव हिन्दू* धर्मकें प्रश्रय देलनि । एकर पछातिक कड़ी-मे पाँच आओर राजा सभक उल्लेख अछि ।

कल्हण द्वारा उल्लिखित दोसर विशिष्ट राजा छथि *मिहिरकुल* जे *वंकुलक* पुत्र आ उत्तराधिकारी छलाह । ओ निःसन्देह गुप्त साम्राज्यक पतनक बाद उत्तर भारतक एक विशाल क्षेत्रपर शासन करएबला *श्वेत हूण* शासक छल । कश्मीर घाटी मे ओकर अधिकारकें ह्यूनसांग[1] आ शिलालेख आदिक साक्ष्य सेहो पुष्ट करैत अछि । कल्हणक अनुसार मिहिरकुल एक निर्दयी शासक छल, जकरा बौद्ध आ ओकर स्तूप ओ विहार सभक विनाश करबामे राक्षसी आनन्द अबैत छलैक। एहन कहल जाइत अछि जे ओ सिलोनक राजाकें नीक जकाँ हरौने छल। कल्हण कहैत छथि जे ओ श्रीनगरक समीप एकटा शिव[2]-मन्दिर बनौलक आ अपन नामसँ *मिहिरपुर* नामक नगर बसौलक। पछाति कोनहुँ मानसिक रोगसँ पीड़ित भए ओ आत्महत्या कए लेलक ।

मिहिरकुलक निधनक बाद सय वर्ष धरि कश्मीरक इतिहास पुनः विस्मृत भऽ जाइछ। ओकर उत्तराधिकारी सभमे एक गोपादित्य छल, जे 'राजतरंगिणी' मे उल्लिखित अन्य व्यक्तिक अपेक्षा ऐतिहासिक यथार्थताक बेसी निकट अछि, कारण जे ओ गोप - पर्वत पर ज्येष्ठेश्वर नामक मन्दिर बनबौने छल, जकरा एखन श्रीनगर मे शंकराचार्य पर्वत कहैत छी । एकर प्रपौत्र खिंखिल वएह *हूण* शासक अछि, जे अपन मुद्रा सभमे स्वयंकें *देवशाही किहिंगिल* कहैछ ।

'राजतरंगिणी'क दोसर तरंगमे जाहि छओटा राजाक शासनक उल्लेख अछि, ओ सभ भिन्न-भिन्न वंशक छथि। कश्मीरक जे गण्य-मान्य व्यक्ति लोकनि युधिष्ठिर प्रथमकें पदच्युत कए निष्कासित केलनि, ओएह सभ राजा विक्रमादित्यक एक सम्बन्धीकें आमंत्रित कय ओकरा *प्रतापादित्य प्रथमक* नामसँ कश्मीरक राजा बनौलनि । आन्तरिक कलहसँ विच्छिन्न कश्मीर किछु समयक लेल 'हर्ष ओ अन्य विदेशी राजा सभक' अधीन भऽगेल। एहन अनुमान कएल गेल अछि जे कल्हण उज्जैनक हर्ष विक्रमादित्यक उल्लेख करैत छथि *खृष्टाब्दक उत्तरार्द्धमे राज्य करैत छलाह*, किन्तु कल्हणकें कालगणनामे सम्भवतः भ्रम

१. सि - यु - कि (बील द्वारा अनूवादित) ? पृष्ठ-१६७

२. 'कैटलाग् आफ क्वाइन्स इन् दि इण्डियन म्यूजियम' मे शिवक उपासकक रूपमे मिहिरकुलक कल्हण कृत वर्णनकें वि. स्मिथ एहि राजाक मुद्रा द्वारा सत्य सिद्ध करैत छथि

भेलनि अछि। प्रतापादित्य प्रथम आ हुनक पुत्र ओ उत्तराधिकारी जलौकक विषयमे कल्हण कहैत छथि जे एहिमेसँ प्रत्येक ३२ वर्ष धरि नीक जकाँ राज्य केलनि।

अग्रिम शासक तुनजिन निष्कासित राजा युधिष्ठिरक वंशज छल। तुनजिनक शासनकालमे असंख्य प्राणक बलि लेमयबला दारूण अकालक कल्हण विषद वर्णन कयने छथि। तुनजिनक पुण्यात्मा पत्नी वकपुस्त कटिमूष (आधुनिक कँमूह) आ रामूष (आधुनिक रामूह) नामक दूटा-नगर बसौलनि। 'राजतरंगिणी'क दोसर तरंगमे अन्तिम राजा छथि आर्यराज, जनिक सिंहासन छोड़ने गोणंद वंशक पुनः कश्मीर पर शासन भए गेल।

पहिल राजा मेघवाहन गोपादित्यक पुत्र छल। ओ असमक राजाक पुत्रीक स्वयंवरमे गेल छल आ अमृतप्रभा ओकरा अपन पति रूपमे चयन कएल। ओ एक प्रतिभाशाली आ पुण्यात्मा शासक छल आ सिंहल (सिलोन) द्वीप धरि विजय-यात्रा कएल। ओ मेघवन नामक नगर बसौलक आ ओकर रानी एक विहार (अपन नामे अमृत-भवन नामक), विदेशी भिक्षु सभके रहबाक लेल बनबाओल।

दोसर उल्लेखनीय राजा कवि मातगुप्त[1] रहय, जे उज्जैनक राजा विक्रमादित्य द्वारा मनोनीत छल। ई कवि राजा शिक्षाक संरक्षक छल। कल्हण कहैत छथि जे ओ हयग्रीववधक लेखक महान कवि भतृमेन्थ जनिका 'मेन्थ' नामसँ सेहो जानल जाइत छनि अपन संरक्षण देलनि। वैष्णव मतक अनुसरण करैत ओ विष्णु मातृगुप्तस्वामीक मन्दिर बनबाओल। विक्रमादित्यक मृत्युक कारणें ओकर स्थिति अत्यन्त कमजोर भए गेल, तें मातृगुप्त प्रवरसेन द्वितीयक[2] पक्षमे स्वेच्छासँ सिंहासन त्यागि देल। एहन कहल जाइछ जे साहसी योद्धा प्रवरसेन घाटीक बाहर सेहो विजय-यात्रा कएल आओर गंगा-यमुनाक 'कछार' सौराष्ट्र तथा त्रिगर्त - देशकेँ जीतल। एहि कार्य सभसँ ओ उज्जैनक एकाधिपत्यकें झटकि देल। ओ प्रवरपुर नामक नगर बसाओल - ओही ठाम, जतय एखन श्रीनगर अछि।

प्रवरसेनक बादक चारिम राजा रणादित्य विशेष उल्लेखनीय छथि, कारण हिनका द्वारा ३०० वर्ष धरि शासन करबाक जनश्रुतिक कल्हण उल्लेख कयने छथि।

---

१. किछु विद्वान महान संस्कृत कवि ओ नाटककार कालिदासक संग मातृगुप्तक तादात्म्य स्थापित करबाक प्रयत्न कयने छथि। कालिदास "यद्यपि उज्जैनक निवासी रहथि.... सम्भवतः कश्मीरी रहथि।" ओ अपन चित्रणक लेल मुख्यतः उत्तर भारत, विशेषतः हिमालयक प्राकृतिक इतिहास आ भूगोलकेँ आधार बनबैत छथि" डा. भाऊदाजीक एहि शोधक डा. एल. डी. कल्ला सेहो अनुसरण कएल एवं कश्मीरकें कालिदासक जन्म-स्थली मानल

२. प्रवरसेनक सिक्का ओकर ऐतिहासिकताके सिद्ध करैत अछि आ कुषाण ओ एफ्थेलाइट राजा सभसँ सम्बन्ध व्यक्त करैत अछि। सातम सदीक अन्त धरि कश्मीरक राजा किदर कुषाण (छोट कुषाण) शाखामेसँ छलाह

मजूमदार[1] क ई दृष्टिकोण अछि जे "कोनहु राजाक एहि तरहें असाधारण काल धरि शासन करबाक उल्लेख निःसन्देह एहि कालावधिक वास्तविक इतिहासक लुप्त होएबाक प्रमाण अछि।" त्रिदेव[2] कहैत छथि जे एतेक दीर्घ अवधि कोनहु यौगिक शक्तिक कारण छल आ पुनः ई जोड़ैत छथि "बीचक काल मे कोनहु प्रजातंत्रक अस्तित्वक अनेक विद्वान कल्पना करैत छथि।" कहल जाइछ जे रणादित्य राजा रतिसेक पुत्री चोल राजकुमारी रणरंभासँ विवाह कएल। कल्हण हुनक शिव-मन्दिर आ दोसर निर्माण सभक विषयमे विस्तारसँ लिखैत छथि।

रणादित्यक पुत्र विक्रमादित्य ४१ वर्ष धरि राज्य कएल। हुनका द्वारा किछु पवित्र निर्माण-कार्य करबाक कल्हण उल्लेख करैत छथि। 'राजतरंगिणी'क तृतीय तरंगक अन्तमे उल्लिखित अन्तिम राजा दुर्लभवर्धन छथि, जे एक चतुर आ बुद्धिमान राजा छलाह एवं जे अपन मंत्री (खंख) संग अपन पत्नीक चरित्रहीनताकेँ क्षमा कए देलनि। हुनक मृत्युक संगहि गोणंद-वंश समाप्त भए जाइछ।

---

१. मजूमदार, आर. सी. : 'क्लासिकल एज' पृ. १३२

२. त्रिदेव डी. एस. : 'दि जर्नल आफ दि बिहार एण्ड उड़ीसा रिसर्च सोसायटी', १९३८, 'पोलिटिकल हिस्ट्री आफ कश्मीर', १९७४ मे डा. के. एस. सक्सेना द्वारा उद्धृत

कर्कोट आ हुनक बाद

कश्मीरमे कर्कोट सभक उदय महत्वपूर्ण अछि, कारण जे एहि राजवंश द्वारा कतेको शताब्दी धरि कश्मीर घाटीकेँ ओहि कालखण्ड मे सुस्थिर शासन भेटलैक, जखन शेष भारतमे अनेको राजपूत राज्यक उत्थान आ पतन भए रहल छल ।

'कर्कोट' वंशनामक उद्‌भव दुर्लभवर्धन सँ अछि जकर उत्पत्ति कर्कोट नाग (३.५२९-३०), सर्वाधिक पूज्य सर्पदेवता, सँ मानल गेल अछि । स्पष्टतः, अज्ञात पृष्ठभूमिबला दुर्लभवर्धन केँ एक कीर्तिधवल वंशवृक्ष प्रदान करबाक ध्येयसँ आख्यानपरक नाग (कर्कोट) सँ हुनक उद्‌गम जोड़ि देल गेल ।

ह्यूनसांग दुर्लभवर्धनक शासनकाल (६२५-६६१ ई.) मे कश्मीर - घाटीक यात्रा कएल । ओकर अनुसार तत्कालीन कश्मीर राज्यमे कश्मीर-घाटीक अतिरिक्त तक्षशिला (सिन्धुपूर्व), उरस (हजारा) आ सिंहपुर (राजपुरी ओ पून्चक छोट पर्वतराज तथा नोनक पहाड़) छल । अपन प्रसिद्ध समकालीन कान्यकुब्जेश्वर हर्षवर्धन समान दुर्लभवर्धन सेहो बौद्ध छल । दुर्लभवर्धन पुत्र प्रतापादित्य द्वितीय दुर्लभक (६६१-७११ ई.) अपन पिताक मृत्युक बाद राजा बनल । दुर्लभक बाद ओकर ज्येष्ठ पुत्र चन्द्रपीड़ उत्तराधिकारी बनल। किछु लेखक ओकर तादात्म्य चीनी वृत्तान्त सभमे उल्लिखित त - चेन - तो - लो - पि - लि सँ स्थापित करैत छथि, जे ७१५ ओ ७२० ई.क बीच कश्मीर पर शासन करैत छल । ओ अपन पुण्याचरण ओ न्याय लेल प्रसिद्ध छल, जे कल्हणक अनेक कथाक प्रसंग अछि ।

कर्कोट राजागणमे मुक्तपीड़ ललितादित्य (६९९ - ७३६ ई.) एकटा बलशाली सम्राट छल, जकर आधिपत्य कश्मीरसँ दूर-दूर समीपवर्दी प्रदेश सभ पर सेहो छलैक। ओ सदैव विजय-अभियानक लेल उत्सुक रहैत छल तथा ओकर अधिकांश जीवन विजय-यात्रा सभमे व्यतीत भेलैक । ओकर सामन्त सभ जलन्धर ओ लोहार (आधुनिक कांगड़ा आ पून्च) पर राज्य करैत छल; आओर कहल जाइछ जे ओ कन्नौज[1], बंगाल, उड़ीसा आ 'कंबोज' (पूर्वी अफगानिसतान) पर आक्रमण कएने छल । कल्हण स्पष्टतः कहैत छथि जे ललितादित्य उड़ीसाक तटसँ पश्चिम दिस आगाँ बढ़ल आओर रट्ट रानीक सहायतासँ

---

१. ललितादित्य सिक्का कन्नौज वांदा, फैजाबाद, वाराणसी (राजघाट आ सारनाथ), नालबन्दा आ मुंगेरमे भेटल अछि । स्पष्टतः ललितादित्य अपन विजय अभियानक क्रममे एहि सभ मार्ग देने गेल

विन्ध्याचलकेँ पार कएल । ललितादित्यक विजय-मार्गकेँ भौगोलिक क्रमसँ सही मानल गेल अछि । किन्तु एकर सर्वाधिक महत्वपूर्ण अभियान यशोवर्माक विरूद्ध छल; एहि विजय द्वारा ललितादित्य मात्र कन्नौजक स्वामी नहि, अपितु एक विशाल क्षेत्रक आधिपति भए गेल । एहन प्रतीत होइछ जे ओ मालवा तथा *गुजरात* पर सेहो विजय प्राप्त कएल एवं सिंधक अरबकेँ हरोलक ।

कश्मीरी अपन राजा द्वारा तुर्क[1] पर विजयक गाथा गबैत अछि । एहन कहल जाइछ जे ललितादित्य तुखारस देशसँ चनकुणकेँ अनने छल आओर ओकरा अपन मंत्री बनाओल। कल्हणक अनुसार चनकुण एक स्तूप आ दू विहार[2] बनौने छल । एहि विस्तृत विजय[3] अभियान सभसँ ललितादित्यक समय मे कश्मीर राज्य गुप्तकालक बादक भारतक सर्वाधिक शक्तिशाली साम्राज्य बनि गेल छल । राजा द्वारा बनाओल गेल मार्त्तण्ड मन्दिरक ध्वंसावशेष एखनहुँ कश्मीरक सर्वाधिक प्रभावोत्पादक प्राचीन अवशेष अछि । "हुनक शासनकाल मे निर्मित किछु *स्तूप*, *विहार*, आ *चैत्य* खोधि निकालल गेल अछि आ एक निर्माताक रूपमे सम्राटक कीर्त्तिकेँ ई अवशेष सभ उचित सिद्ध करैछ ।"[4] ललितादित्यक द्वारा बसाओल गेल *परिहासपुर नगरमे बौद्ध विहार* आ हिन्दू मन्दिर एक दोसरक समीप छल आ दुनूक अवशेष ललितादित्य धार्मिक सहिष्णुताकेँ प्रदर्शित करैछ । ई योग्य सम्राट, जे भारतीय इतिहासमे योद्धा ओ सुयोग्य शासकक रूपमे अमर भए गेल, अपन एक विजय-यात्राक अभ्यन्तर मरि गेल । ओ पहिनहिसँ अपन मंत्रीके ई निर्देश दए देने छल जे मनु आ दोसर स्मृतिकार द्वारा विज्ञापित राज्यक *सप्तांग* सिद्धान्तक आलोकमे एहि प्रकारक आपात-स्थिति मे की करबाक छैक ।

ललितादित्य मात्र एक महान सैनिक ओ महान् योद्धा नहि छल, अपितु एक सुयोग्य शासक तथा कला ओ साहित्यक संरक्षक सेहो छल । कल्हणक अनुसार ओ यशोवर्माकेँ पराजित कएलाक बाद ओकर राजकवि वाक्पतिराज आ भवभूतिकेँ अपन संरक्षणमे लए लेल । विदेशी विद्वान कश्मीरकेँ पूजास्थली मानैत छल, अनेक विदेशी सांस्कृतिक मण्डलक ससम्मान स्वागत होइत छलैक । ललितादित्य कलाक कश्मीरी शैलीक स्थापना कएल, जाहिमे ग्रीक गांधार आ स्वदेशी (गुप्त) शैली सभ सेहो अन्तर्भूत अछि ।

कश्मीरी लोकनि कैक शताब्दी धरि ललितादित्यक विजयक गीत गबैत रहय एवं क्षम्य अतिश्योक्ति पूर्वक, हुनका विश्वविजयी सम्राट कहैत रहल । तथापि ललितदित्यमे

---

१. अल्बेरूनीक विवरणमे, स्थानीय परम्परानुसार, कश्मीरी राजा मुक्तइ (मुक्तापीड) तुर्क पर विजय प्राप्त कएल

२. चीनी यात्री आऊ - काग एहिमेसँ एकटा यात्रा कएल । कल्हणक समय, चनकुणक विहारके सुस्सल, एक मंत्रीक पुण्यात्मा पत्नी, सुधार कराए देने छल

३. भोट्ट वा तिब्बती पर ललितादित्यक बादक विजयकेँ चीनी (तंग) वृत्तान्त सेहो प्रमाणित करैत अछि

४. राय, एस. सी., अर्ली हिस्ट्री एण्ड कल्चर आफ कश्मीर , पृष्ठ - ४९

दोष सेहो रहनि, जे कल्हण नुकवैत नहि छथि । 'राजतरंगिणी'मे ई स्पष्ट अछि जे ललितादित्य महिला आ मदिराक प्रेमी छलाह । ३१ वर्षक शासनक उपरान्त, ललितादित्य लगभग ७३६ ई. मे स्वर्गवासी भेलाह । हिनक उत्तराधिकारी सभ निर्बल आ निष्क्रिय छलाह; ओ लोकनि कर्कोट वंशक शक्ति ओ ख्यातिकेँ स्थिर नहि राखि सकलाह ।

तथापि ललितादित्यक पाँचम वंशज आ प्रपौत्र जयपीड़ (७५१-७८२ ई.) कश्मीरक हटाएल प्रभुता पुनः प्राप्त करबाक गहन प्रयास कएल । कल्हण विस्तारसहित ८०,०००क विशाल सेनाक नेतृत्व करएबला जयापीडक प्रयाग, कन्नौज आ नेपाल धरिक विजय-यात्राक वर्णन करैत छथि । अपन अद्‌भुत साहसिक अभियानक क्रममे ओ बंगाल धरि गेलाह आ जयन्त नामक राजाक पुत्रीसँ विवाह केलनि । ललितादित्य सदृश जयपीड़[1] सेहो दिग्विजय करय निकललाह । ओ बूलर झीलक समीप जयपुर नामक एक नगर बसौलनि (जकरा आइकाल्हि *अन्दरकोट* कहैत छी) आ अनेक विद्वानकेँ अपना लग रखलनि, जाहिमे दामोदर गुप्त, मनोरथ आ शंखदत्त प्रमुख छलाह। मंत्री सभमे *वामन* सेहो छलाह, जे पाणिनीय व्याकरणक सुप्रसिद्ध टीका *काशिकावृत्तिक* सहलेखक छलाह । प्रपितामह सदृश इहो मुदा अनेक वीरगाथाक नायक छथि ।

शासनक अन्तिम दिनमे अत्युच्च महत्वाकांक्षी विजय अभियानक कारणे ने जखन 'खजाना' खाली भए गेलैक तखन जयापीड कें लोभ भए गेलनि आ ओ प्रजासँ अत्यधिक कर उगाहय लगलाह । बूलर झीलक नाग-देवताक निर्देश पर समीप स्थित तांबाक 'खान तक हुनक पहुँचवाक कथा राजाक धनक स्रोतमे वृद्धिक इच्छा व्यक्त करैछ । सेनाक वेतन बाकी छलैक आ प्रशासन कमजोर बनि गेल छलैक । अपन वित्त सलाहकार शिवदासक सहायतासँ राजा लगातार तीन साल धरि करक अतिरिक्त उपजा खेतिहरोक हिस्सा हथिया लेलनि । ब्राह्मण विशेषतः हुनक शोषणक शिकार बनल आ विशाल संख्या मे ओ सभ देश छोड़ि चल गेल । राजाक हृदय परिवर्तनआ शोषणक रीतिकेँ बदलबाक लेल ब्राह्मण लोकनि *प्रायोपवेश* (आमरण अनशन) सेहो कएल - जे भारतमे राजनीतिक संधर्षक अहिंसात्मक पद्धतिक एक प्राचीनतम उदाहरण अछि । कल्हण ओहि दृश्यक सशक्त नाटकीय वर्णन करैत छथि, जाहिमे उत्तेजित ब्राह्मणक क्रोधक कारणे एक दुर्घटनाक उल्लेख अछि जाहिमे हठी राजाक मृत्यु भ'गेल । एकरा चित्रित करएबला किछु पद्य 'वर्णनकर्त्ताक रूपमे 'कल्हण' (पृ० ४९-५०) नामक अध्यायमे देल जाए चुकल अछि।

जयपीडक पुत्र ललितपीड महिला आ मदिराक प्रेमी छल आ तेँ अपन राजकीय कर्त्तव्यक उपेक्षा करैत रहल । कल्हणक शब्दमे, राज्य 'अनैतिकतासँ विभाजित' भय गेल ।

---

१. कर्कोट वंशीय जयपीड़क उपनाम "विणादित्य" नामक छापबला, मिश्रित धातुक, अनेक सिक्का भेटलैक अछि मुदा, हुनक अनेक विराट विजय अभियानक प्रसङ्ग, जकर वर्णन कवि इतिहासकार केलनि अछि –कोनो समकालीन साक्ष्य उपलब्ध नहि अछि

ललितपीडक बाद ओकर भाइ संग्रामपीड द्वितीय राजा बनल, जे सात महत्वहीन वर्ष धरि राज्य कै लक तथा ओकर बाद गद्दी पर मिथ्या अधिकार करयबला ठग सभक उदय भऽ गेलैक। युद्ध होइत रहल आ प्रतिस्पर्धी दलक 'कठपुतली' राजासभ गद्दी पर वैसैत रहल।

ललितादित्यक दीप्तिमान शासनक संगहि कर्कोट कीर्ति अपन चरम शिखर पर पहुँचि गेल छलैक जखन कश्मीर एक छोट 'रियासत'सँ बढ़ि एक विस्तृत साम्राज्य बनि गेल छल। तथापि सभ मिलाए, कर्कोट शासनकालकें कश्मीरी इतिहासक सर्वाधिक यशस्वी काल मानल जएबाक चाही। प्रारम्भिक कर्कोट सभक विजय-यात्राक विषयमे कल्हणक अतिशयोक्तिपूर्ण कथन रहितहुँ, ओकरा सभक द्वारा समीपवर्ती क्षेत्र पर आधिपत्य आ उत्तर भारतक अधिकांश भागक अधिग्रहणक विषयमे विवाद नहि अछि। किन्तु जाहि समय संग्रामपीड द्वितीयक पुत्र अनंगपीड गद्दी पर बैसल, ओहि समय धरि एहि कार्तिमान वंशक प्रशासन निर्बल आ अराजक भए गेल छल। षड्यंत्रक फलस्वरूप, ओकरा हँटा कए उत्पलपीड राजा बनि गेल। कर्कोटक गौरव हतश्री भए रहल छल - कश्मीरक राजा सभ भारतीय इतिहासक पृष्ठभूमिमे पाछाँ चल गेल छल।

सुर नामक बुद्धिमान *उत्पलपीडकें* हटाए *उत्पलकक* पौत्र अवंतिवर्माकें राजा बनाए देलक। अवंतिबर्मा (८५५/६-८८३ ई.)क राज्यारोहणसँ कश्मीरी इतिहासक ओ अध्याय प्रारम्भ होइछ, जकर 'राजतरंगिणी' तथ्यमूलक ऐतिहासिक विवरण दैत अछि। अवंतिवर्माक स्मरण एखनहुँ हुनका द्वारा स्थापित नगर अवंतिपुरक (अवंतीश्वर एवं अवंतिस्वामी) मन्दिर सभक अवशेष देखि जीवित भए जाइछ - जे "ललितादित्यक निर्माणक तुल्य तँ नहि अछि, तथापि प्राचीन कश्मीरी वास्तुशिल्पक सर्वाधिक प्रभावोत्पादक स्मारक सभक पाँतीमे अबैत अछि।" हुनक मंत्री सुर बहुत शक्तिशाली छल, कारण ओ अवन्तिवर्माकें राजा बनएबामे प्रमुख भूमिकाक निर्वाह कयने छल। अनेक पुण्यकार्य आ महत्वपूर्ण-निर्माण कार्यक आधारशिला रखबामे सुर राजासँ पाछाँ नहि छल। ओ बिद्वान सभकें राज-दरबारमे आसन दए सम्मान करैत रहल। राजा द्वारा संरक्षित विद्वानं सभमे सुविख्यात *मुक्ताकर्ण,* कविद्वय *शिवस्वामी* आ *रत्नाकर* तथा प्रतिभाशाली दार्शनिक *भट्ट कलन्त* छलाह।

मन्दिरक सम्पत्ति पर बलजोरी कब्जा कए लेनिहार धन्वक नेतृत्व मे डमार सभकें सुर 'फौलादी' हाथें दबौलनि। एहि विघ्नकारी घटनाक अतिरिक्त अवंतिवर्माक शासन प्रायः शान्तिमय छल आओर राजा आर्थिक पुनरूत्थानकें उच्च प्राथमिकता प्रदान कएल। ओ बाढ़ि आ अकालसँ मुक्ति चाहैत छल जे, बेसीकाल, घाटीकें अपन चपेट मे लऽ लैत छलैक। ओ ई काज अपन दोसर योग्य मंत्री *सुय्यकें* सौंपल, जे एक विख्यात इंजीनियर छल। *सुय्य* नदी सभ पर पैघ-पैघ कार्य करबाओल। घाटीमे जलक निकासी तथा भूमिक

विस्तृत क्षेत्रमे सिंचाइक लेल ओ बारामूलाक नीचाँ *वितस्ता* (झेलम)क मार्ग बदलि देलनि। देशकेँ विनाशकारी बाढ़िसँ बचाए लेने जनताकेँ अत्यधिक लाभ भेलैक । सुय्य एहि निदानक संगहि पटौनीक व्यवस्थाकें सुधारबाक ओतबे महत्वपूर्ण डेग उठाओल जे कश्मीरी सभक मुख्य भोजन चाउरक व्यवस्थाक लेल धानक खेती करबाक लेल वरदान सिद्ध भेलैक। सुय्यक स्मृति झेलमक समीप स्थापित नगर सुय्यपुर द्वारा सुरक्षित अछि - जे आब सोपुर कहबैछ ।

त्रिपुरेश्वर (आधुनिक त्रिफर) पर्वत पर अवंतिवर्माक देहावसान हुनक जीवनक अनुरूप छल । वैष्णव-मतमे विश्वास रखितहुँ अपन मंत्रीक भावनाक आदर करैत ओ शिवक पूजा करैत छलाह । ई रहस्य ओ मृत्युशय्या पर सुरसँ कहलनि । कल्हणक अनुसार (५.१२५) - "अन्तमे, भगवत्गीताकें सुनैत एवं विष्णुक ज्योतिक ध्यान करैत ओ परमात्माक दर्शनलाभ करैत, जीवनसँ मुक्त भए गेलाह ।[1]"

यद्यपि अवंतिवर्माक शासनमे प्रादेशिक विजयक विवरण नहि अछि ; ओ एक योग्य राजा आ प्रशासक रूपमे उत्पल वंशक कीर्त्तिस्तम्भ छलाह ।

अवंतिवर्माक पुत्र आ उत्तराधिकारी शंकरवर्मा (८८३-९०२ ई.) सँ ओहिक राजागणक श्रेणी प्रारम्भ होइछ, जाहिसँ राज्यक सिक्काक निरन्तर शृंखला दृश्यमान अछि आ एहिसँ ऐतिहासिक कृतिक रूपमे 'राजतरंगिणी'क मूल्य अत्यधिक बढ़ि गेल अछि । शंकरवर्मा प्रवरसेन, ललितादित्य आ जयपीडक शौर्य्यसँ प्रभावित भय अपन विजय यात्रा प्रारम्भ कएल ; हुनक विशाल सेनाक संग (कल्हण द्वारा देल गेल नओ लाखक संख्या अतिशयोक्तिपूर्ण बूझि पड़ैत अछि), सामन्त सभक अनेक दल संग जुटि गेल । ओ कश्मीरक दक्षिणी पहाड़ी क्षेत्रके पुनः जीति लेल, जे कर्कोट वंशक अन्तिम दिनमे राज्य सँ विच्छिन्न भ' हुनक महानतम विजय पंजाबमे (झेलम आओर चिनाबक बीच) गुर्जरनरेश अलखंग पर भेल, जाहिसँ ओहि दिशामे हुनक राज्यविस्तार भेल ।

सिन्धु नदी दिसक एक अभियानमे, जतय शंकरवर्माके अनेक राजा सभ सम्मान देने रहथि उरस - आधुनिक हजारा जिला - दने घुरैत काल हुनका प्राणघातक चोट लगलनि। यद्यपि शंकरवर्माक विजययात्रा कश्मीरक समीपवर्ती प्रदेश धरि सीमित रहय, ओ राजकीय कोषकें लगभग खाली कए देलनि । तेँ शंकरवर्मा "बहुत धूर्त्ततासँ वनाओल गेले धन - वसूलीक योजना सभ वनौलनि आ जनता केँ पीड़ित केलनि । (मुख्य रूपें माल ढोबाक मजदूर) बेगार[2] के संगठित रूपे प्रारम्भ करबाक लेल शंकरवर्मा स्मरण कयल जाइत छथि ।

---

१. गीताक धार्मिक पाठग्रंथक रूपमे प्रयोग कएल जएबाक ई लिखित इतिहासमे पहिल उदाहरण मानल गेल अछि

२. एहि शताब्दीक प्रारम्भ धरि बेगार कश्मीरी प्रशासनक एक विशिष्ट अंग छल

कल्हण एहि शासनक दुखद परिणाम पर कटु टीका करैत छथि, जे मात्र लोभी राज-कर्मचारीक अनुकूल छल तथा जाहिमे विद्वान लोक सभक अर्थोपार्जनक लेल कोनो व्यवस्था नहि छलैक ।

शंकरवर्मा शासनक बाद उत्तराधिकार लेल जे संघर्ष भेल, ताहिमे जनताक असुविधा बहुत बढ़ि गेलैक । ओकर पुत्र गोपालवर्मा (९०२-९०४ ई.), जे एखन नेना छल,अपन माय सुगंधाक संरक्षकत्वमे गद्दी पर बैसल । ई बालक राजा एक मंत्रीक जादू टोनाक शिकार भए गेल आ ९०४ ई. मे सुगंधा स्वयं गद्दी पर बेसलीह । अधम चरित्रक रहबाक कारणें तिरस्कृत सुगंधाकेँ दू वर्षक संक्षिप्त शासनक बाद तान्त्रिन सभ गद्दी सँ हटा देलक । ओ अपना द्वारा स्थापित नगर सुगंधपुरक कारणें स्मरणीय छथि ।

दसम सदीक प्रथम पच्चीस वर्षमे अज्ञात कुल-शीलक सैनिक जातिक तंत्रीन सभ व्यवहारतः कश्मीरक अंगरक्षक बनि गेल । ९१७ - १८ ई. मे बाढ़ि सँ शारदीय धानक फसिल नष्ट भए जएबाक फलस्वरूप घाटीमे एक भयंकर अकाल पड़ल - लोकक यातना-केँ गम्भीर बनयवामे ई प्राकृतिक विपत्ति पूर्ण सहायक भेलैक । तंत्रिन सभक-संग एकांग नामक एक दोसर सैन्यजाति मिलिक'-इच्छानुसार राजाकेँ गद्दी पर बैसबैत आ उतारैत रहल । राजदरबारमे भ्रष्टता आ दुराचार छलैक । तंत्रिन सभकेँ चक्रवर्मा हराय देल, आ तेसर बेर पुनः राज्य प्राप्त कएल । ओ हंसी नामक एक डोमिनसँ विवाह कएल आ ओकरा अपन पटसानी बनाए लेल । ओकर दरबार ओकरहि जकाँ दुराचारी छल । किछु असन्तुष्ट डमार सभ, जे राजगद्दी प्राप्त करबामे ओकर सहायता कएने छल, ९३७ ई.मे *हंसीक* कक्षमे ओकर हत्या कऽ देल ।

अग्रिम राजा उन्मत्तवंति (पागल अवंति) सेहो किछु कम दुराचारी आ निरंकुश नहि छल । ओ अपन वैमात्रेय भाइके भूखल राखि मारि देलक आ अपन पिता पार्थक हत्या करबाय देलक । वृद्ध पार्थकेँ अपन पत्नीक लगसँ खींचि रास्ता पर केश पकड़ि घिसिआओल गेल; कल्हणक शब्दमे (५.४३२-३४) "निरस्त्र, बुभुक्षित, नग्न आ कनैत पार्थकेँ हत्यारा सभ मारि देलक । पार्थक शवकेँ एक अधिकारी द्वारा पीटल जयबाक दृश्य पर राजा अवन्ति हँसल । दुइ वर्षक संक्षिप्त आ उपद्रवपूर्ण शासनक बाद ९३९ ई.मे उन्मत्तवन्ति क्षयरोग सँ मरि गेल ।

गद्दी पर बलपूर्वक अधिकार कएनिहारक विरूद्ध सेनापति कमलवर्धनक विद्रोहक फलस्वरूप ब्राह्मणक सभा एक विद्वान परन्तु निर्धन यशस्कर नामक कश्मीरीकेँ सिंहासन पर बैसाओल । यशस्करक जनहितैषी शासन (९३४ - ९४८ ई.) कश्मीरी सभक लेल अनेको वर्षक कष्टक बाद वरदान सिद्ध भेल । ओ झेलमक निकट ५५ गाम विद्वान ब्राह्मणकेँ *अग्रहारक* रूपमे देल आ संगहि अपन आनुवंशिक स्थान*परिहासपुर* मे 'आर्यदेश' (उत्तर भारत)क छात्रक लेल एकटा मठ[1] बनबाओल । यशस्करक मरणोपरान्त

---

१. मठ ई सूचित करैत अछि जे दसम सदीमे सेहो कश्मीर आ उत्तर भारतीय क्षेत्रक बीच सांस्कृतिक सम्बन्ध जारी छल

ओकर बालक - पुत्र ९४८ ई. मे राजा बनल, किन्तु मंत्री *पर्वगुप्त* ओकरा मरबाए देल तथा ९४९ ई. मे गद्दी पर कब्जा कए लेल। ९५० ई. मे पर्वगुप्तक मृत्यु भए गेल आ ओकर पुत्र क्षेमगुप्त उत्तराधिकारी बनल। एक बेर पुनः कश्मीर एकटा लोभी आ दुराचारी राजाक शासनक अन्तर्गत आबि गेल। ओ दिद्दासँ विवाह कएल, जे लोहराक अधिनायक सिंहराजक बेटी आ यशस्वी शाही राजा भीमपालक नातिन छल आओर एहि तरहें ओ कश्मीरक इतिहासक दिशा बदलि देलक। दिद्दासँ क्षेमगुप्तक विवाह भए गेला पर कश्मीर लोहार-परिवारक शासनमे आबि गेल , जाहिसँ कल्हणक समय धरि आ तकर बादहु कश्मीरक संग-संग अपन मूल गृह - राज्य पर एही वंशक अधिकार रहलैक। राजा अपन पत्नी पर एतेक आसक्त छल, जे हास्यमे लोक सभ ओकरा *दिद्दाक्षेम* कहैत छलैक।[1]

क्षेमगुप्तक मृत्युक बाद दिद्दा पहिने कार्यवाहक रानीक रूपमे आ पुनः रानी बनि शासन कएल। शक्तिक लिप्तासँ प्रेरित भए ओ २३ वर्ष धरि कश्मीर पर कठोरतासँ शासन कएल। निर्दयी, अविश्वासी आ दुराचारी रहनहु ओकरामे राजनीतिज्ञ - बला चतुरता तथा प्रशासनकीय क्षमता छलैक, प्रायः सौन्दर्यक संग बुद्धिक संयोग छलैक। दिद्दाक प्रेमी मंत्री तुंगकेँ जे ओकर पहिल प्रेमी नहि छलैक, हटएबाक लेल ब्राह्मण सभ प्रायोपवेश कएल ;मुदा धूर्त्ततापूर्ण नीतिज्ञता आ घूसक बलेँ आ पुनः तुंगक साहसक वलेँ जीत ओकरहि भेलैक। तुंग राजपुरीक नरेश पृथ्वीपालकें, अश्मीरक सत्ताक उल्लंघन करबाक अपराधक लेल पराजित कएल। आ ओकरा कर देबाक लेल बाध्य कएल। तुंग दिद्दाक शासनक अन्तिम वर्षमे डमार रूपक महामारीके समाप्त कए देल।

१००३ ई.मे मृत्युसँ पूर्व दिद्दा अपन राज्य लोहराक शासक अपन भाइ उदयराजक पुत्र संग्रामराजकें दए देल। एहि प्रकारे कश्मीरक शासन शान्तिपूर्वक एक नव वंशक हाथमे आबि गेल।

संग्रामराजक शासनकाले, आनन्दपालक पुत्र शाहीनरेश त्रिलोचनपालक सहायता लेल प्रधानमंत्री तुंग गजनीक सुल्तान महमूदक विरूद्ध अभियानक नेतृत्व कएल। तुंगके किछु छोटछीन सफलता भेटलैक मुदा अन्तमे ओ हारि गेल। तुंग पर निर्भर रहबाक बात राजाकेँ नीक नहि लगैत छलनि आ तेँ ओ ओकर हत्या करबा देलनि। डमार एवं दरद सभक छोटछीन विद्रोहक बाद ओ अपनहुँ बेसी दिन धरि जीवित नहि रहलाह तथा २६ वर्षक बाद १०२५ ई.मे स्वर्गवासी भए गेलाह।

अपन ज्येष्ठ भाइ हरिराजक २२ दिनक बाद जकरा महत्वाकांक्षिणी आ व्यभिचाणिी राजमाता श्रीलेख द्वारा मरबाए देने छल, संग्रामराजक छोटका पुत्र अनंत १०२८ ई.मे गद्दी पर बैसल। ओ सामंत सभक विद्रोहकेँ शान्त करबाक अतिरिक्त दरद आ मुसलमान सभक आक्रमणके सेहो सफलतापूर्वक शान्त केलक। ओकर पुण्यात्मा रानी सूर्यमती राजकार्यमे प्रमुख रूपेँ भाग लैत छलीह। ओकर प्रशासन कठोर आ सक्षम सिद्ध भेल।

---

१. क्षेमगुप्त सिक्का, जाहिमे किछु पर 'दि' अक्षर, एहि तथ्यकेँ मुद्रा - प्रमाण द्वारा पुष्ट करैत अछि

पत्नीसँ अभिभूत अनन्त अपन अधिकांश समय ध्यानमे वितबैत छल । सूर्यमती राजाके एहि विषय लेल मनाए लेल जे ओ अपन पुत्र कलश (१०६३ ई.) कें राजगद्दी पर बैसा देथु । राज्यमे शान्ति आ सम्पन्नता रहबाक स्थितिमे कलश समीपवर्ती क्षेत्र सभमे विजय अभियान कए - राजपुरी आ उरूस पर अधिकार कए लेलनि । यद्यपि ओ कश्मीरक राज्यकें विस्तृत कए ओकरा शक्तिशाली बनौलनि, हुनक अन्तिम किछु वर्ष अपन ज्येष्ठ राजकुमार हर्ष आ स्वयं केर बीच सन्देहक स्थितिक कारणे कटुतापूर्ण छलनि । अपन छोट पुत्र उत्कर्षके कश्मीरक शासक बनएबाक इच्छासँ हर्षके बन्दी बनओलाक बाद १०८९ ई.मे ओ स्वर्गवासी भेलाह।

हर्ष बन्दीगृहसँ भागि जएबामे सफल भेल आ सिंहासन पर अधिकार कए लेल, जे न्यायपूर्वक ओकरहि छलैक । राजा हर्षक शासनक (१०८९-११०१ई.) कल्हण विशद वर्णन केलनि अछि । असाधारण शूरवीर युवा हर्ष अनेक शास्त्र सभमे प्रवीण छलाह। ओ अनेको भाषक ज्ञाता आ कवि सेहो छलाह । ओ अपन राज-दरबारमे नव विधान सभ शुरू कएल तथा सहस्त्र - दीपशिखा सँ आलोकित राजसभामे विद्वान आ कवि सभक गोष्ठीमे उपस्थित भए विद्याके प्रोत्साहन देल । हुनक राजसभा समीप आ दूरक अनेक संगीतज्ञ, कवि ओ विद्वानक मण्डली सभके आकृष्ट करैत छल । कल्हण कर्णाटक[1] धुन आ संगीतवाद्यक कश्मीरमे प्रचलित होयबाक उल्लेख करैत छथि । विद्वान आ कवि लोकनिक प्रति हर्षक दानशीलतासँ प्रभावित भए, एहन कहल जाइछ जे चालुक्यराज परमादिक प्रसिद्ध राजकवि विल्हण एहि विषय पर पश्चाताप कएल जे ओ कलशक समय कश्मीर छोड़ि देल ।

एक चतुर ओ योग्य प्रशासक, संगहि एक उदार हृदय विद्या - संरक्षक हर्ष अपन शासन शुभ समय मे प्रारम्भ केने छलाह । अपन कर्मचारी सभमे अनुशासनक भावना भरैत ओ स्वयं समय पर राजकाज कें पूरा करबामे आ ब्राह्मण सभक संरक्षकत्वक नियमपूर्वक पालन करबामे व्यक्तिगत उदाहरण प्रस्तुत कएल । हुनक पटरानी वसन्तलेखा उदारतापूर्वक दान करबामे हुनक सहभागिनी छलीह ।

हर्षक अनेक सद्गुणक प्रशंसा करैत, कल्हण हुनक अवगुण आ कमजोरी पर सेहो ध्यान दैत छथि । अद्भुत विरोधाभाससँ संयुक्त हर्षक जीवनक एहि तरहें तीक्ष्णता सँ वर्णन कएल - "निर्दयता ओ सहृदयता, उदारता ओ लोभ, भयंकर हठ आ प्रमत्त उदासीनता, चालाकी आ विचारहीनता - ई आओर दोसर अनेक बेमेल गुण हर्षक बहुरंगी जीवनमे यथाक्रम प्रकट होइत रहैत छल ।"

रजौरीक अधिपतिकें दबएबाक लेल हर्ष एक योग्य सेनापति कन्दर्पकें पठाओल। कन्दर्प अधिपति संग्रामपालकें अपन अधीन केललनि आ कर वसूललनि । ईर्ष्यासँ प्रेरित भए धूर्त्त सभासद सभ कन्दर्पकें निष्कासित करबाए देल । राजमहल आ प्रशासनमे विश्वासघातक राज्य छल । राजगद्दी पर मिथ्या अधिकार जताबऽबला समीपक व्यक्ति

---

१. हर्षक अनेक उपलब्ध हस्ति-रूपांकित सिक्का समकालीन कर्णाटक - मुद्रा दिस इंगित करैछ

सभ हर्षक विरूद्ध षड्यंत्र रचय लागल, किन्तु हर्ष ओकरा सभकेँ मार्गसँ हटौलनि। सेना आ सैनिक अभियान पर कएल गेल अतिशय व्यय तथा विलासिता पर अपव्ययक कारणे (अन्तः पुरमे सभ जातिक ३६० स्त्री छलि, डोम आ चांडाल छोड़ि) ओ आर्थिक संकटमे छलाह। फलस्वरूप यातनादायक नव-नव कर सभ लगाओल गेलैक। कल्हणक व्यंग्योक्ति अछि - "विष्ठा पर सेहो विशेष कर लगाओल गेल।" हर्ष मन्दिरमे संचित धन पर सेहो नीक जकाँ हाथ साफ केलनि। हर्षक पूर्वक उदारता आब लोभमे बदलि गेल छल आ ओ सम्पूर्ण घाटीमे मन्दिर सभक सोना आ चानीक प्रतिमा सभकेँ गलबाबऽ लगलाह। "मूर्त्तिक अतिशय विनाश आ पिताक विधवाक संग व्यभिचार सन दुराचार करब हुनक मस्तिष्क विकृतिक परिचायक अछि।" १०९९ ई० मे दुःखी आ असन्तुष्ट प्रजा पर प्लेग ओ भयंकर बाढ़िक रूपमे नव विपत्ति आएल। प्रजाक ध्यान हँटएबाक लेल हर्ष शक्तिशाली डमार जमीन्दार पर आक्रमण कए देल ;-कल्हण एहि आक्रमणक क्रममे वीभत्स नृशंसताक वर्णन कएलनि अछि।

लोहार वंशक एक उपशाखासँ उद्भूत *उच्चल* आ *सुस्सल* नामक दू भाईक रूपमे बदलाक न्याय मंच पर अवतीर्ण भेल। बताह राजाके हँटएबाक लेल डमार आ दोसर विद्रोही शक्ति हिनक संग देल। निराशापूर्ण प्रतिकारक बाद हर्ष मारल गेल। हुनक काटल शिर उच्चलक समक्ष आनल गेल, जे ओकरा जराय देल; जखन कि भिखमंगा जकाँ नग्न हुनक शरीरकेँ एक दयालु लकड़हारा अग्नि संस्कार केलक। (एकर चित्रण करएबला किछु पद्य 'कविक रूपमे कल्हण' नामक अध्यायमे देल गेल अछि।

'राजतरंगिणी'क सातम तरंगक अन्तिम घटना हर्षक मृत्युक प्रसङ्ग अछि। कल्हणक समय धरिक शेष घटना एकर पहिनेक अध्याय 'कल्हण ओ हिनक समय' मे सन्निविष्ट कएल जाए चुकल अछि)।

'राजतरंगिणी'क लगभग अर्ध-भाग, आठम ओ अन्तिम तरंगमे कल्हण बारहम सदीक अर्धांशक ओहि घटना सभक वर्णन करैत छथि; जे हर्षक पतन तथा 'राजतरंगिणी'क रचनातिथिक बीच घटल। ई दीर्घ वर्णन ;जे कतहु - कतहु भ्रान्ति उत्पन्न करैछ, एहि लाभसँ युक्त अछि जे एहिमे कश्मीरक सामाजिक, राजनीतिक आ आर्थिक स्थितिक प्रामाणिक समकालीन चित्र प्रस्तुत कएल गेल अछि।

विद्रोही डमार सभ देशक शान्तिकेँ भंग करैत छल। गद्दी पर मिथ्या अधिकार जतौनिहारक उत्थान आ पतन होइत रहलैक, उठैत आ खसैत छल। श्रीनगरक जनता एकटा भयंकर घेराबंदी मे फँसल। सुस्सलक पुत्र जयसिंह कश्मीर पर 'धूर्त्ततापूर्ण राजनीति आ गर्हित षड्यंत्रक' बलेँ राज्य केलक। 'राजतरंगिणी'क अन्तिम पद्य सभमे जयसिंहक रानी ओ हुनक सन्ततिक प्रशंसा अछि। एहि रूपेँ हम सभ ११४९-५० ई०, जयसिंहक शासनक बाईसम वर्षमे पहुंचि जाइत छी। 'राजाक सरिता' नामक एहि पुरालेखक अंतिम पदमे कल्हण एहि ग्रन्थक तुलना दक्षिण भारतक वेगवती गोदावरी नदीसँ करैत छथि।

राजतरंगिणीसँ शिक्षा

एकटा विषय, जकरा हम बेर - बेर कहि सकैत छी ; ओ ई अछि जे सम्पूर्ण भारतीय इतिहासक दृष्टिकोणसँ सेहो कल्हणक 'राजतरंगिणी' महत्वहीन नहि अछि । भारतीय इतिहासक अधिकांश भाग एक अनेक राज्यक इतिहाससँ बनल अछि । भारतक कोनहु दोसर प्रान्तक इतिहासक अत्यल्प विवरण उपलब्ध रहबाक कारणें कल्हणक इतिहास, कोनो राज्यक ; विशद विवरणवला इतिहासक नमूनाक रूपमे एकटा दृष्टान्त प्रस्तुत करैछ ।

कल्हणक अनुसार, इतिहास सिखवाक वस्तु नहि ; अपितु मनुष्यक लेल जीवनकेँ बुझबाक वस्तु छल, कारणजे ई मानवीय सम्बन्धक बहुविध जटिल रूपसँ सम्बद्ध अछि। वैदिक युगक आरम्भिक कालमे राजाक चयन होइत छल । बादमे ओ आनुवंशिक भए गेल, वर्त्तमान आ भविष्य मुख्यरूपेँ सम्राटक व्यक्तित्व पर निर्भर भऽ गेल । प्रायः एहन कोनहु राजनीतिक जनसभा नहि छल, जे राज्यक प्रशासनकेँ दिशा दऽ सकथ । स्वेच्छाचारी राजागणक कार्यकेँ सामान्य जन धैर्य धारण कए देखैत रहैत छल । सामन्ती स्वार्थक कारणें विप्लव होइत छल आ इएह जनविद्रोहक रूप धऽ लैत छल । ललितादित्य आ ओकर समान शक्तिशाली सम्राटक अधीन सामान्य जनक जीवन दासताक जीवनसँ भिन्न छलैक से कहब कठिन । धनी व्यक्ति मांसक पकवान आ पुष्पसुरभित शीतल मदिराक सेवन करैत छल ; सामान्य-जन बहुत भाग्यशाली छल, यदि ओकरा प्रतिदिन दू बेर भात आ तरकारी खएबाक लेल भेटि जाइत छलैक । कल्हणक 'राजतरंगिणी' सँ एहन अनेक उल्लेखनीय शिक्षा भेटि सकैछ, 'जाहिमे प्राचीन कालक अनन्त व्यापार सन्निहित अछि।''

राजनीतिक सूत्र आ कूटनीतिक सिद्धान्तकेँ स्पष्ट करबाक लेल ऐतिहासिक घटना सभ प्रस्तुत कएल गेल अछि । वर्णनक ओ अंश विशेष उल्लेखनीय अछि जाहिमे कल्हण कश्मीर मे व्यवहृत प्रशासनक सिद्धान्तकेँ संक्षेपमे वर्णन करैत छथि । एकरा ओ राजा 'ललितादित्यक कश्मीरी प्रशासन-संहिताक' रूपमे प्रस्तुत केलनि अछि । एहि सिद्धान्तक *मैकियावेलियन* रंग भारतीय *नीति-शास्त्र* सभ जकाँ अछि । तथापि कल्हणक सूत्र-वाक्य सभमे एकटा विशिष्ट स्थानीय स्वाद छैक, जे एकरा इतिहासक दृष्टिएँ मूल्यवान बनाए दैत छैक ।

पहिले सूत्र विशिष्ट रूपेँ कश्मीरी अछि । अपन संकीर्ण भौगोलिक सीमाक कारणें कश्मीरक कोनहु विदेशी शत्रु नहि छल मुदा आन्तरिक विग्रह रोकबाक दिशामे निश्चित डेग उठएबाक हेतु शासककें सचेत कएल गेल छैक । घाटीकें घेरयबला पहाड़क निवासी

सभकेँ 'अपराध नहिओँ केने दण्ड देबाक चाही' । कल्हण 'खस' आ दोसर पहाड़ी 'कबीला'क प्रसंगमे सोचैत रहथि जे निर्बल प्रशासनक समय कश्मीरी घाटीमे लूट-पाट मचबैत छल । एही तरहें ओ राजाकें ई विचार देल जे ग्रामीण सभ लग एक वर्षसँ बेसीक अन्न - भण्डार नहि छोड़ल जाय, जाहिसँ डमार प्रमुख जमीन्दारक शक्ति कुण्ठित रहय । एहि जमीन्दार सभक बेर-बेर होमयबला विद्रोहक कारणे कल्हणक समय आ हिनक पूर्व सेहो गृहयुद्ध होइत छल । ओ एकरा सभक प्रति निश्चित रूपेँ अरूचि व्यक्त करैत ओकरा सभकेँ बेर-बेर दस्यु कहैत छथि । कल्हण अनेको बेर मनुष्यक राजनीतिक असंगतिक उल्लेख करैत छथि, जे पैघ वा छोट - प्रत्येक ददलएबला शासनक संग अपन रंग बदलि लैत छल। कल्हण आलसी, अप्रभावित शहरी भीड़क विशद विवरण दैत छथि ; जे शासनमे राजवंशीय परिवर्त्तनक प्रति उदासीन रहैत छल । अपन देशवासीक प्रति कल्हणक रोषपूर्ण टिप्पणी एहि तरहें अछि जे तीक्ष्ण, सूक्ष्मदर्शी आ समीक्षात्मक प्रतिभा-सम्पन्न व्यक्ति सएह कए सकैछ । 'राजतरंगिणी'मे जतय - तंतय व्याप्त एहि टिप्पणी सभसँ बहुत किछु सीखल जाए सकैत अछि ।

कल्हण ऐतिहासिक घटनासभक एहि तरहें मूल्यांकन केलनि अछि, जाहिसँ भावी पीढ़ीकें शिक्षा भेटि सकैछ । जखन ऊपरी *विशनगंगा* घाटी पर जयसिंह आक्रमण केलनि, तखन कल्हण ई टिप्पणी करैत छथि जे शत्रुक शक्तिकें नीक जकाँ बिनु बुझने योजना बनएबामे असफलता अपरिहार्य अछि । जयसिंहक विरोधी विद्रोही द्वारा अपनाओल नीतिक त्रुटिक सेहो ओ समीक्षा करैत छथि, आओर ई कहैत छथि जे एही त्रुटिक कारणे राजा जयसिंहकेँ सफलता भेटलनि ।

कश्मीरक इतिहाससँ एक आओर उल्लेखनीय शिक्षा भेटैत अछि, ओ अछि दरबारी षड्यंत्र आ रानी सभक परस्पर ईर्ष्यासँ सम्राट तथा जनसाधारण पर पड़यबला दूषित प्रभाव । एहन लगैत अछि जेना कल्हण दरबारक क्रिया-कलापक गहन निरीक्षण करैत रहथि आ जे किछु देखैत रहथि, तकरा लिखि लैत रहथि, जाहि सँ पीढ़ी एकरासँ किछु सीखि सकय । आर.सी. मजूमदार[1]क शब्द मे, "कश्मीरक राजा आ रानीक अविश्वसनीय विलासिता–जकर कारण राज्य पर अकथनीय विपत्ति सभ आएल-ओहि युगक रहन-सहन आ रीति-रिवाजक गर्हित पक्षकेँ नीक जकाँ देखार करैत प्राचीन पर अस्वाभाविक प्रकाश पड़ैत अछि एवं हमर कालक निरंकुश राजा सभक प्रजा-हितैषी हेबाक मिथ्या भ्रमकेँ बलात खण्डित कऽ दैत छैक ।

ओएह लेखक ईहो कहैत छथि - "कश्मीरी राजा सभक कोनो कार्यसँ ई परिलक्षित नहि होइछ जे ओ लोकनि भारतवर्षकेँ मातृभूमि बुझैत छलाह ।" ई दृष्टिकोण मुदा

---

१. एन्सिएंट इंडिया, पृ. ३८६

विवादास्पद अछि। कश्मीरक पृथक रूपक भौगोलिक स्थितिक कारणे एहि ठामक प्रशासन आ रहन-सहनक रूप 'क्षेत्रीय' भऽ गेलैक अछि। ई सिद्ध करबाक लेल कल्हणक 'राजतरंगिणी' मे बहुत किछु अछि जे कश्मीरी सभ देशक (भारतक) जीवन-प्रवाहक अंग छल। उदाहरणार्थ, कल्हणक इतिहास शोधकर्त्ताकेँ ओहि सती-प्रथाक उद्‌भव आ विकाशक विषयमे गवेषणा करबामे सहायता करैत अछि, जे शेष भारतक समान दीर्घ समय धरि, कश्मीरमे प्रचलित रहय। ई प्रथा 'साइथो - तातार' सभक एकटा रिवाजसँ शुरू भेल। 'साइथो - तातार' अधिनायकक अधीनस्थ स्त्री-पुरूष ओकर मृत्युक बाद आत्म-हत्या कए लैत छल। वीर-युग मे ई प्रथा कश्मीरमे, आ भारतक शेष भागमे बनल रहल आओर ई मात्र राजपरिवार धरि सीमित नहि छल। कल्हणक प्रमाण पर एस. सी. राय[1] कहैत छथि। "कश्मीर घाटीमे सती-प्रथा एतेक बद्धमूल छल, जे माय, बहिनि आ दोसर समीपस्थ सम्बन्धी धरि अपन प्रिय वियुक्तक संग ओकर चितामे जरि जाइत छल।"

सभ मिलाक 'भारतक आनो राज्यसभक विषादपूर्ण छवि तथा एतुक्का राजनीति आदिम ढंगक रहितहुँ एकटा हर्षक बात ई जे एहि ठामक नीक वा बेजाय शासक संगीत आ नृत्य सन ललित कला सभक विकासमे साधक छलाह। ललित आ वास्तुकला सेहो अपन सर्वोत्तम रूपमे एतऽ विकसित भेल। एकर अतिरिक्त धर्म, दर्शन आ विज्ञानक अनेक शाखामे सेहो एतऽ उल्लेखनीय प्रगति भेल। मुदा कल्हणक मन्तव्य सभसँ ई अभिव्यंजित होइछ जे महान व्यक्तिक उपलब्धि समाजक किछु प्राणभूत आवश्यकताक पूर्त्ति केलक। विभिन्न क्षेत्रमे मानवीय प्रयासकेँ उच्च सफलता जे भेटलैक तकर कारण समयक अनुकूलता छलैक।

वाक्पुष्टा, दिद्‌दा, सुगमला आ सूर्यमती तथा अनेको छोट-मोट रानी सभक जीवन-क्रम ई प्रदर्शित करैछ जे सार्वजनिक जीवनमे स्त्री लोकनिकेँ समान अवसर प्राप्त छल। कल्हण (आओर दोसर इतिहासकार) प्राचीन भारतीय स्त्रीगणक पाण्डित्य ओ विद्वत्ताक प्रचुर शब्दमे संकेत देल अछि। स्त्रीगणकेँ पर्दामे रखबाक अथवा पृथक्करण केर प्रथा नहि छल; कारण जे स्त्रीगण घरैया पृष्ठभूमिसँ राजनीतिक मंच पर आबि गेल छलि। रणजित सीताराम पण्डितकृत 'राजतरंगिणी'क अनुवादक प्रस्तावना मे जवाहरलाल नेहरूक अनुसार-"कल्हणक ग्रंथमे स्त्री लोकनि एक महत्वपूर्ण भूमिकाक निर्वाह करैत प्रतीत होइछ; मात्र पर्दाक पाछाँ नहि, अपितु सभा आ क्षेत्रमे नेता ओ सैनिकक रूपमे सेहो।" रानी सभक अपन स्वयं कोष छल आओर ओ लोकनि प्रशासनमे सक्रिय भाग लैत छलीह। कोनहु नागरिक वा सैनिक-पद पर कार्य करबाक लेल लिंग वा जाति (अथवा जन्म)क कोनहु रूकाबटि नहि छल। 'नर्त्तकी' पर्यन्त राजनीतिमे आक्रामक भाग लैत रहय।

१.'अर्ली हिस्ट्री एण्ड कल्चर आफ कश्मीर,' १९६९; पृ०११६

"कश्मीर एक एहन भूमि अछि जतऽ लोककेँ विप्लवमे आनन्द अबैत छैक," कल्हण लिखैत छथि, "एहि देशमे देवदासी (नर्त्तकी) सभ सेहो राजाक विरूद्ध विद्रोहमे भाग लैत छलि।"

कर्कोट प्रशासनक बाद भूमिक महत्त्व बढ़ि गेल छलैक। मुदा जमीन जोतनिहारक ठीक-ठीक जीवन-दशाक विषयमे 'राजतरंगिणी' मौन अछि। एहि विषय मे हम मात्र जमीन्दार डमार द्वारा लेल गेल 'लगान'सँ किछु अनुमान लगाए सकैत छी। सैन्य-जातिक तंत्रिनआ डमारक प्रति - जेसभ अशांतिक समय स्वयं राजा बनाबय बला बनि जाइत छल - कल्हण अपन घृणा कठिनतासँ नुकबैत छथि।

अस्पृश्यता कश्मीरमे अज्ञात छल - ओ सम्भवतः बौद्ध - प्रभावक समय अस्तित्वहीन भए गेल छल। राजा चक्रवर्मा एक 'अछूत' डोमिनसँ विवाह कएने रहथि। किन्तु डोम वास्तवमे अछूत नहि छल, जेनाकि भारतक दोसर भागमे ओ मानल जाइछ। कल्हण लिखैत छथि जे डोम सभ नीक संगीतज्ञ होइत छल। एक दोसर उल्लिखित निम्न जाति चाण्डाल छल - एहिमेसँ किछु शाही अंगरक्षक छल। 'राजतरंगिणी' सँ ईहो व्यक्त होइत अछि जे शूरतम सेनापति सभमे सँ किछु ब्राह्मण छल - पछाति मराठाक समय ई अवस्था फेर आएल। ई विषय ध्यान देबा योग्य अछि जे शेष भारतमे सर्वसामान्य, ब्राह्मण आ निम्न जातिक बीचक अनेक दोसर जाति सभ कश्मीरमे अज्ञात छल।

'राजतरंगिणी' कश्मीरक राजागणक शासनक विवरण मात्र नहि बूझल जाय। कल्हण समकालीन सामाजिक ओ राजनीतिक जीवनक एक प्रामाणिक चित्र प्रस्तुत करैत अछि। कश्मीर आ समीपवर्ती क्षेत्रक अतीतक विषय मे 'राजतरंगिणी'' एक वृहद् सूचना-कोष अछि। कल्हणक बादक कश्मीरक इतिहासक चित्र-विचित्र धाराकेँ बुझबामे सेहो एहिसँ सहायता भेटैछ। 'राजतरंगिणी'क उत्तरांश मे वर्णित ऐतिहासिक परिस्थिति ओ प्रवृत्ति ई स्पष्ट करैछ जे कल्हणक बाद तथा कश्मीर पर मुगल अधिकारक (१५८८ ई.) बीचक घटनाक्रममे एकटा निरन्तरता छैक।

'राजतरंगिणी'क उपदेशात्मक आओर वर्णनात्मक पद्य कल्हणक काव्यशैलीक एक विशिष्ट अंग थिक। सूचना-स्रोतक विश्वसनीयता संदिग्ध रहितहुँ कल्हण अपन विषयमे जे किछु कहय चाहैत छथि, तकरा ओ विनम्र शब्दमे एहि पद्य सभमे व्यक्त करैत छथि-

"यद्यपि हम अन्य पुरालेख सामग्रीकेँ एतऽ दोहराओल अछि तथापि आशा - अछि जे गुणीजन कारण सुनबाक एहि विषयमे हमरहुँ तर्क सुनताह।"

ओतय केहन प्रतिभा प्रदर्शित भए सकैत अछि, जतय आधुनिक व्यक्ति अपन ग्रंथ सभमे ओहि विवरणकेँ संगृहीत करैछ, जे दिवंगत व्यक्ति अपन समकालीन राजा सभक इतिहासक विषय मे लिखने रहथि। तेँ सभ तरहेँ उपेक्षित विषय - अतीतक तथ्यक एहि वर्णनमे हमर प्रयास मात्र संग्रहकर्त्ताक रूपमे बूझल जाय।"

हिनक ग्रंथक नीतिपरक उपदेश अछि "सम्पूर्ण सांसारिक समृद्धि क्षणस्थायी अछि, नीति-नियमकेँ उल्लंघन करऽ बलाकेँ अन्त मे दण्ड भेटितहिँ छैक।" ग्रंथक आठ तरंगमेसँ चारिक अन्त एही तरहक उक्ति सभसँ होइत छैक। 'राजतरंगिणी'क अन्तिम तरंगमे हिनक गहन विचार अछि, "छायाक मार्ग अनियंत्रित होइत अछि, जखनकि प्रकृतिक अद्‌भुत वस्तु सूर्य्यक प्रकाशकेँ लोक अनेक रूपेँ वरण करैछ। एहि प्रकारेँ दुःख सुखसँ पृथक अछि, मुदा सुखक सीमा अनन्त दुःखक प्रहार ओ दर्दसँ प्रतिबद्ध रहैछ।

कल्हण भाग्यवादी नहि छथि, ओ टामस हार्डीक समान, 'परिस्थितिक पैचाशिकता मे विश्वास नहि करैत छथि। बौद्धमतक अनुरूप ओ कर्ममे दृढ़ विश्वास रखैत छथि आ ई बात सम्पूर्ण 'राजतरंगिणी' मे अग्रगामी अछि। ई एक उल्लेखनीय विशेषता अछि, कारणजे हिनक कश्मीरमे बौद्धमतक स्थान शैवमत लऽ लेने छल। कल्हण जनैत छलाह जे प्रत्येक वस्तु कालक चोट सँ मलिन भए जाइछ आ समयानुसार नष्ट भए जाइत अछि; कलाकार मात्र वस्तुक चंचल रूपकेँ पकड़ि सकैत अछि आ अमरताक साँचा मे ओकरा ढालि सकैछ।

कल्हण चाहैत छथि जे पाठक हिनका धैर्यपूर्वक पढ़थि। ओ ई स्पष्ट कए दैत छथि जे ओ कोनहु समकालीन महाराजक मुहलगुआ नहि छलाह। ओ जे किछु संकलित केलनि वा लिखलनि, ताहिमे तुलनात्मक वस्तुनिष्ठताक गुण छैक आ तेँ इतिहाससँ जे शिक्षा ओ ग्रहण करैत छथि ताहिसँ पाठकोँ लाभ उठाय सकैत अछि। पश्चात कालक संस्कृत पुरालेख लिखनिहारक स्वल्प ऐतिहासिक विवरण बेसी नीक स्पष्टीकरण हेतु हमरा लोकनिकेँ कल्हणक 'राजतरंगिणी'क सामान्यतः ठीक - ठीक सूचनाकेँ धन्यवाद देबाक चाही। एहि तरहेँ महान् कवि - इतिहासकार कल्हण मात्र कश्मीरक प्राचीन संस्कृति आ इतिहासकेँ विस्मृत होएबासँ नहि बचौलनि; अपितु इतिहासक विद्यार्थी केँ पुरालेख सभक विशृंखलित विवरणकेँ सोझरयवामे सेहो सहायता प्रदान कएल। अन्ततः ई कहल जा सकैछ जे कश्मीरक विद्यार्थी एहि राज्यक अतीतक संग बेसी सन्तोषजनक रूपेँ बौद्धिक वार्त्तालाप कए सकैत अछि आओर ओहि कालसँ नैतिक तथा वास्तविक शिक्षा लए सकैत अछि, जे कि भारतक कोनहु अन्य राज्यक विषयमे सम्भव नहि अछि।

अन्य पुरालेखक

कल्हणक 'राजतरंगिणी' कश्मीर आओर समीपवर्ती क्षेत्रक अतीतसँ सम्बन्धित सूचनाक एक खान अछि। ई कल्हणक समयक बादक कश्मीरी इतिहासक चित्र-विचित्र धाराकेँ बुझबामे सेहो सहायता प्रदान करैत अछि। कवि - इतिहासकार कल्हण एक दृष्टान्त तैयार कएल, जकर अनुकरण उत्तरवर्ती इतिहासकार सेहो कएल। एहिमे अधिकांश हिनकहिँ जकाँ कवि ओ विद्वान छलाह।

पण्डित जोनराज कल्हणक 'राजतरंगिणी'केँ अपन समय धरि आनल। एक सम्मानित इतिहासकार, जनिक जन्म सम्भवतः १३८३ ई. मे भेल छल, जोनराज (मूल नाम ज्योत्स्नाकर) एहि पुरालेखकेँ १४५९ ई. धरि संस्कृत पद्यमे पूरा कएल। उदार मुस्लिम सम्राट सुल्तान जैनुल - अबीदीन (१४२० - १४७०ई.)क ध्यान हिनका दिस विद्वत्ताक कारण गेल। सुल्तान हिनका कल्हणक 'राजतरंगिणी'क हिनक समय धरि आनय कहल। एहि नवीन कृतिकेँ 'द्वितीय राजतरंगिणी' कहल गेल।

जोनराजक 'राजतरंगिणी'क अधिकांश भाग उत्तरवर्ती हिन्दू शासक (अर्थात् कल्हणक बादक) जयसिंहसँ रानी *कोटा* धरिक शासनसँ सम्बन्धित अछि। एहन प्रतीत होइत अछि जे जोनराज विद्वत्ता - ओ तीन विद्वत्तापूर्ण भाष्यक लेखक छलाह - एक इतिहासकारक रूपमे हिनक कुशलता आ उपलब्धिकेँ दाब देने अछि। श्रीकण्ठ कौल सेहो इंगित केलनि अछि-"शैलीक दुरूहता एक एहन मुख्य दोष अछि, जे ऐतिहासिक वर्णन केँ क्षीण कए दैत अछि। पुरालेखकक भाषा कखनहु ओहि ठीक-ठीक सूचनाकेँ अभिव्यक्त नहि करैछ, जे उचित ऐतिहासिक निष्कर्ष निकालबाक लेल आवश्यक अछि।" कवि - इतिहासकारक शैलीक प्रसङ्ग कौलक समालोचनाक अन्तिम टिप्पणी विकट अछि, "जोनराजक संकुचित कथन बुझौअलि जकाँ अस्पष्ट अछि।" एक अधिशासी सम्राटक आज्ञासँ लिखल गेल इतिहास कतेको स्थानपर दरबारक पुरालेख जकाँ लगैत अछि। सम्भवतः स्रोत सभसँ कम सूचना उपलब्ध रहबाक कारणें पूर्व राजाक शासनक विषय वड संक्षेपमे लिखि देल गेल छैक - महत्वपूर्ण घटना सभक विवरण कखनहु मात्र एकहिँ श्लोकमे कहि देल गेल छैक, एवं अन्य केर पूर्णतः उपेक्षा कए देल गेल छैक। तथापि

एतेक दोष रहितहुँ जोनराजक 'राजतरंगिणी'[1] अपन महत्व बनौने अछि। ११५० ई. सँ १४५९ ई. (जोनराजक मृत्युवर्ष) धरिक सूचनाक ई पूर्वतम उपलब्ध स्रोत थिक। कालगणना, जतय कतहु देल गेल अछि, ठीक आओर स्थान-परिचय सभ मिलाय, विश्वसनीय अछि। सामान्यतः ई कमोवेश वस्तुनिष्ठ ऐतिहासिक पुरालेख अछि, जे कल्हणक पुरालेख जकाँ विशिष्ट काव्यात्मक रूपमे प्रस्तुत कएल गेल अछि।

जोनराजक शिष्य श्रीवर (जे स्वयं सुल्तान जैनुल - अबीदीनक विश्वासपात्र छलाह) पुरालेखकेँ आगाँ बढ़ाओल, जे 'जैन राजतरंगिणी'नामे जानल गेल एवं जकर चारि अध्यायमे १४५९ ई. सँ १४८६ ई. धरिक घटना सभ वर्णित अछि। इहो जोनराजे जकाँ विद्वान - कवि रहबाक अतिरिक्त संगीतज्ञ सेहो छलाह। अपन गुरूक शैलीक अनुकरण करबाक अपेक्षा श्रीवर नीक जकाँ कल्हणक अनुकरण कएल, एतेक धरि जे हिनका द्वारा कएल गेल जोनराजक पुरालेखक विस्तार मूल 'राजतरंगिणी' जकाँ लगैत अछि। समकालीन जीवनक विषयमे मूल्यवान् विवरण रहबाक कारणेँ हिनक चारि अध्याय महत्त्वपूर्ण अछि। हिनक इतिहाससँ हमरा सभकेँ नीक लाभ ई भेटैत अछि जे महत्त्वपूर्ण स्थान सभक नाममे परिवर्त्तन भए रहल छल, तकर सूचना भेटैत अछि। उदाहरणक लेल, ललितादित्यक प्रसिद्ध मन्दिरक समीप स्थित मार्तण्डक तीर्थकेँ 'भवनक' नामसँ उल्लेख कएल गेल अछि, जाहि नामसँ ई एखनहु जानल जाइत अछि। समर्पित रूपेँ काज कर'बला श्रीवर सुल्तान जेनुल - अबीदीनक उत्तराधिकारी सुल्तान हसन शाह (१४७२-८४ई.)क समय धरि अपन काज पर वनल रहलाह। वास्तवमे, सुल्तान हसन शाह हिनका संगीत विभागक अध्यक्ष बनाओल, जे विभाग स्वयं सुल्तान द्वारा पारम्परिक रूपेँ संरक्षित होइत छल। अग्रिम सुल्तान मुहम्मद शाह (१४८४-८६ ई.) सेहो श्रीवरकेँ राजकीय संरक्षण प्रदान कएल।

तीस वर्षसँ कमे समयक (१४५९ - ८६ ई.) विवरण रहितहुँ श्रीवरक वर्णन यथेष्ट रूपेँ विस्तृत अछि आ एकर सामान्य स्तर जोनराजक पुरालेखसँ नीक मानल गेल अछि। तथापि स्टीन[2] श्रीवरकेँ कल्हणक हू-बहू नकल करऽबला कहलनि अछि - "हिनक पाठ

१. डॉ. जी. एम.डी. सूफी कशिरमे ई इंगित कएल छथि जे जे० सी०दत्त द्वारा प्रयुक्त (१८३५ ई. पृथक कलकत्ता संस्करण) जोनराजक संस्कृत-पाठमे मात्र ९८० श्लोक छल; जखनकि डॉ. पीटरसन द्वारा प्रयुक्त (१८९६क बम्बइ संस्करण) जोनराजक संस्कृत-पाठमे १३३४ श्लोक रहय। डॉ. सूफी आगाँ लिखलनि, "संगहि, प्राज्य भट्टक राजावलि पटक - नामक वास्तविक कृति दिस ध्यान नहि देल गेल अछि तथा श्री दत्त, डॉ. पीटर पीटर्सन आ 'सर आरेल स्टीन शुकक 'राजतरंगिणी'केँ धोखासँ प्राज्यभट्ट ओ शुकक संयुक्त कृति मानि लेलनि; स्पष्टतः ई भ्रम सुल्तान फतहशाह द्वारा कश्मीरक गद्दी पर तीन बेर बैसबाक कारणे उत्पन्न भेल अछि। जखन श्रीवर अपन पुरालेख समाप्त कएल, तखन फतहशाह पहिल बेर कश्मीर पर शासन कए रहल छल। जखन शुक अपन पुरालेख प्रारम्भ कएल, तखन फतह शाह पुनः सुल्तान बनल रहय। ओएह शासक दोबारा शासन कए रहल छल तेँ एहि तीनू विद्वानक शृंखला अविच्छिन्न प्रतीत भेल

२. स्टीन एम. ए. :क्रानिकल आफ दि किंग्ज आफ कश्मीर,' 'राजतरंगिणी'क अंग्रेजी अनुवाद

अधिकांशतः मौलिक रचनाक अपेक्षा 'राजतरंगिणी'क एक अध्याय जकाँ बूझि पड़ैत अछि। जोनराज सदृश हिनकहुँ वर्णन दरबारी पुरालेख सनक अछि। ''. तथापि स्टीन श्रीवरक पुरालेखक उचित मूल्यांकन सेहो करैत छथि, ''तथापि ई (पुरालेख) महत्त्वपूर्ण अछि, कारण जे एहिमे वर्णित तीस वर्षक कालक लेल इएह एकमात्र समकालीन स्रोत अछि।''

श्रीवरक पुरालेखकें पण्डित प्राज्यभट्ट ''राजाकवि पटक'' - शीर्षकसँ आगाँ बढ़ाओल। ओ १४८६ ई. सँ १५१३ - १४ ई. धरिक २७ वर्षक इतिहास लिखलनि, जाहि अवधिमे सुल्तान फतह शाह आ सुल्तान मुहम्मद शाह दू बेर एक - दोसरकेँ हँटाय गद्दी पर बैसल। एहि शासनक विवरण किछु भ्रम प्रस्तुत कए देल, यद्यपि श्रीवरक शिष्य शुक[1] अकबर द्वारा १५८६ ई. मे घाटी पर अधिकार कएलाक बाद *राजावलिके* पूरा कएल एवं कल्हणक प्रसिद्ध शीर्षकक अनुकरण पर अपन पुरालेखक सेहो नाम 'राजतरंगिणी' राखल। प्राज्यभट्ट आ शुकक पुरालेख सभमे नगर आ दोसर स्थानक पुरान नामक नव नाममे बदलि जाएब बेसी स्पष्ट अछि (एहिमेसँ किछु आधुनिक नामक बहुत समीप अछि)। आर. के. परमू[2]क ई मत अछि जे प्राज्यभट्टक ''मूल कृति अप्राप्य अछि तथा उपलब्ध जे कृति से हुनक उत्तराधिकारी शुक द्वारा ५० पद्यमे कएल गेल सारांश मात्र अछि।'' शुकक विवरण अनियोजित आओर प्रायः कालक्रमविहीन होएबाक दोषसँ पूर्ण अछि तथा एकर भूगोल सेहो सभ ठाम ठीक नहि छैक।

एक दोसर कृति सेहो अछि, जाहिमे 'राजतरंगिणी'क परम्पराकेँ आगाँ बढ़ाओल गेल अछि। एकर नाम अछि 'लोकप्रकाश' तथा एहन विश्वास कएल जाइत अछि जे एकर रचना क्षेमेन्द्र ११म सदीमे प्रारम्भ कएल। एकर दोसर अध्यायमे शाहजहाँक उल्लेख ई इंगित करैत अछि जे एकर रचनाकाल १७म सदी सेहो भए सकैत अछि। एहि धारणाक पुष्टि एकर पदावलीसँ सेहो भए जाइछ, जाहिमे संस्कृत ओ फारसीक मिश्रण आ कश्मीरीक प्रभाव अछि। तथापि एहि पुरालेखक एक उल्लेखनीय विशेषता ई छैक जे एहि मे - राजनीतिक - राजवंशीय आख्यान कम छैक तथा प्रशासनिक, सामाजिक ओ आर्थिक विषयसँ सम्बन्धित सूचना बेसी छैक।

कल्हणक 'राजतरंगिणी'क तुलनामे ई पछातिक पुरालेख सभ साहित्यिक प्रबन्ध रूपमे निश्चित रूपें हीन अछि। एकर मूल्य - निर्धारण मे सभ मिलाय ई कहि सकैत छी जे, व्यक्तिगत त्रुटि रहितहुँ, ई कृति सभ कल्हणक इतिहास लिखबाक पद्धतिमे सुधार कयलक। एहि सभ कृति सँ ओहि परिवर्त्तनकालक अत्यधिक प्रामाणिक विवरण भेटैत अछि, जाहि समय कश्मीरक शासन हिन्दूक हाथसँ निकलि मुस्लिम हाथमे चल गेल। एहि

---

१. द्रष्टव्य 'किंग्ज आफ कश्मीर'-३, 'जे०सी० दत्त कृत जोनराज ; श्रीवर आ शुकक 'राजतरंगिणी' सभक अंग्रेजी अनुवाद; कलकत्ता, १८९८

२.'हिस्ट्री आफ मुस्लिम रूल इन कश्मीर, '१३२० - १८१९' नई दिल्ली, १९६९

तरहें 'ई कश्मीरी सभक समकालीन जीवन पर प्रकाश दैत अछि आ ओहि असुविधा ओ यातना सभक विवरण दैत छथि, जे अकबरक विजयसँ अढ़ाइ सदी पूर्व धरि, संक्षिप्त अन्तरालक संग, चलैत आबि रहल छल।' समकालीन घटना सभक हिनका सभक विवरण, सभ मिलाय सही अछि, यद्यपि दृष्टिकोण बेसी काल हिनका सभक आख्यानकें अनुरंजित कए देने अछि। जेना कि जोगेशचन्द्र दत्त कहैत छथि - "ई उल्लेख करब जरूरी अछि जे यद्यपि-सम्बद्ध प्रदेशक कोनहु दोसर इतिहासक अभावमे-एहि लेखक सभक रचना, ऐतिहासिक दृष्टिकोणसँ मूल्यवान अछि; तथापि विभिन्न व्यक्ति ओ घटनाक ओहि मूल्यांकनकेँ हम बिनु विचारने स्वीकार नहि कए सकैत छी; किएक तऽ ई स्मरण भऽ अवैत अछि, ओ सभ दरबारी पण्डित रहथि, आ अपन सांसारिक उपलब्धि सभक लेल ओहि राजाक प्रसन्नता पर सोलहन्नी निर्भर रहथि जनिक विवरण ओ लिखलनि।"[२]

मुस्लिम शासन प्रारम्भ भेलाक लगभग दू सदी बाद धरि संस्कृत राजकार्यक भाषा बनल रहल। जेना-जेना मुस्लिम-सम्राट फारसी भाषा (ओ साहित्य) केँ अधिकाधिक संरक्षण देबऽ लगलाह, तेना-तेना संस्कृतमे घटना सभक अभिलेख लिखबाक प्रथा क्रमशः समाप्त भए गेल। कश्मीरी विद्वान अपनाकें एहि परिवर्त्तनक अनुकूल बना लेलनि आ फारसीमे इतिहास लिखय लगलाह।

सुल्तान जैनुल् - अबीदीन 'राजतरंगिणी'कें ओकर मूल संस्कृत पद्य - रूपमे तऽ आगा बढ़बाए देल; संगहि मुल्ला अहमद द्वारा ओकर फारसी मे अनुवाद सेहो करबाओल। अनुवादकक चयन बहुत योग्य छल; मुल्ला अहमद स्वयं एक प्रमुख विद्वान ओ एक विख्यात कवि आ इतिहासकार रहथि। बहरूल - अस्मर (कथासमुद्र) नामक ई अनुवाद ओ सम्भवतः अपूर्ण छोड़ि देल एवं ओकरा पूरा कएने रहथि (अकबरक शासनकालमे) अब्दुल कादिर बदायूनी, जे ओकरा सम्राटक इच्छानुसार बोलचालक फारसीमे संशोधित कएल। एहि समय कोनहु संस्करण उपलब्ध नहि अछि; किन्तु मुल्ला अहमदक इतिहास मलिक हैदर 'चौदुरा'क कृतिक आधार बनल से निश्चय।

मौलिक हैदर प्राचीन कालसँ लऽ क अपना समय धरि अर्थात, सम्राट जहाँगीरक शासनक बारहमा साल, १६१७ ई० धरिक, कश्मीरक इतिहास कल्हणक राजतरंगिणीक शैलीक आधार पर फारसी मे लिखल नि। जे विषय एहि वृत्तान्त 'तवारीखे - कश्मीर'कें समकालीन घटना सभक रूचिकर दर्पण बनबैत अछि, ओ ई जे मलिक हैदर तत्कालीन राजनीतिक घटना सभक व्यक्तिगत सम्पर्कमे रहथि - कल्हणक अपेक्षा बेसी प्रत्यक्ष रूपेँ। हैदर आ ओकर भाई मलिक अली शेर अफगन खाँक विधवा मेहरून्निसाकेँ बचाओल,

---

१. बमजी पी. एन. कौल, 'ए हिस्ट्री आफ कश्मीर', १९६२

२. 'किंग्ज़ आफ़ कश्मीर,' (क आमुख), भाग-३

जे पछाति नूरजहाँ बनलि । कृतज्ञतास्वरूप ओ जहाँगीरसँ मलिक हैदरक प्रशंसा कएल, जकर फलस्वरूप बादशाह पुरस्कार देल तथा कश्मीरक शासनक एकटा अधिकार - सेहो । ओ वास्तवमे पारितोषिक योग्य रहथि, कारण ओ शिल्पी सेहो छलाह तथा जामा-मास्जिद एवं अन्य मस्जिद सभक पुनर्निर्माण केलनि । मलिक हैदरक उपनाम 'चौदुरा' श्रीनगरक दक्षिणमे १७ कि. मी. पर स्थित हिनक गामसँ पड़ल - जकरा मलिकक मूल ग्रामक रूपमे जहाँगीर अपन संस्मरण 'तुजुके - जहाँगीर' मे उल्लेख कयने छथि । एकटा रोचक विषय ई जे मलिक हैदर, अबुल फजल, एवं अन्य व्यक्तिक कश्मीरी वृतान्त स्पष्टतः 'राजतरंगिणी' पर आधारित अछि आ एहि मे अधिकांशतः पुराख्यान ओ अद्‌भुत कथा सभसँ सम्बन्धित किंवदन्ती सभक पुनरूक्ति बेसी अछि । मलिक हैदर तऽ कल्हणक आरम्भिक हिन्दू राजा सभसँ सम्बद्ध कथाकेँ सेहो अलंकृत कए देने छथि । दोसर दिस, लोहार-वंश सँ सम्बन्धित कल्हणक विवरण जे बेसी ऐतिहासिक अछि तकरा सम्बन्धमे हिनक विवरण किछुए पृष्ठक अछि ।

'तवारीखे - कश्मीर' नामस एक दोसरो पुरालेख हसन अली कश्मीरीक लिखल अछि । ई अपेक्षाकृत संक्षिप्त कृति छल, प्राचीन कालसँ लए १६१६ ई० धरिक घटनाकें अभिलेखित करैत एहि कृतिमे हसन शाहक शासनक अन्त धरि सुल्तानक अधीन कश्मीरक विस्तृत विवरण देल गेल अछि । कल्हणक कवि-इतिहासकार–परम्परा चलैत रहल आओर (फारसी उपनाम अजीज राखय बला) नारायण कौल अजीज़ जे एक कवि आ फारसी साहित्यक ज्ञाता छलाह हैदर मलिकक अनुसरण कए १७१० ई. मे अपन 'तवारीखे - कश्मीर' लिखलनि, जाहिमे सुल्तान तथा आरम्भिक मुगल शासक सभक अत्यधिक वास्तविक चित्रण अछि । मुदा अधिकांश आख्यान हैदर मलिकक पुरालेख पर आधारित अछि ।

मोहम्मद आजम कौल नामक एकटा आरो कवि जे अनेक कृति सभक लेखक सेहो छलाह इतिहासकारक कठिन कलामे अपन कौशल देखौलनि । ई पाश्चात्वर्ती मुगल सभक समय श्रीनगरमे रहैत छलाह । हिनक पुरालेख 'वकाते-कश्मीर' (कश्मीरक घटना सभ) १७४६ ई.मे पूरा भेल । ११वर्षक सतत् परिश्रमक फल एहि पुरालेखमे मुख्यतः पूर्ववर्ती कृति सभक सारांश अछि, किन्तु एहिमे तत्कालीन सामाजिक, धार्मिक आओर साहित्यिक प्रवृत्ति सभ पर विशेष प्रकाश देल गेल अछि । साहित्यिक उपलब्धि सभक अतिरिक्ति ख्वाजा मुहम्मद आजमक ख्याति एकटा संतक रूप मे सेहो छल । १७६५ ई.मे हिनक निधनक बाद हिनक पुत्र ख्वाजा मुहम्मद असलम, अपन पिताक कृतिकें आगाँ बढ़बैत, **'गौहरे** - आलम' (संसारक रत्न) लिखलनि ।

१९म सदीमे पहुँचि हमरालोकनिकें एक आओर कश्मीरी कवि-इतिहासकार पण्डित बीरबल कचरूक उल्लेख भटैछ जे एक प्रसिद्ध फारसी विद्वान सेहो रहथि तथा

जे १८३५ ई. मे द्वितीय डोगरा महाराज रणजीत सिंहक शासनकालमे 'मुख्तसर तारीखे-कश्मीर' (कश्मीरक संक्षिप्त इतिहास) लिखलनि। कश्मीरक उत्थान-पतनक इतिहास मुगल ओ अफगान कालक विस्तारसँ वर्णन करैत कचरू कल्हणक समान ओहि समयक लोकक आर्थिक दशाक विवरण करैत छथि। यद्यपि ओ हिन्दू सभक परम्परा ओ सामाजिक आचार-विचार पर बेसी प्रकाश देलनि अछि, हिनका द्वारा कएल गेल ओहि युगक मूल्यांकन इतिहासकारक लेल बहुत महत्वपूर्ण अछि। तथापि किछु क्षम्य रूपक अतिशयोक्ति आ अप्रामाणिक इतिहासक बात सभ एहिमे सेहो छैक।

संस्कृत-साहित्यमे कश्मीरक विषयमे किछु बेसी नहि भेटैछ। जेना कि हम देखि चुकल छी ई अभाव परोक्षरूपेँ कल्हणक 'राजतरंगिणी'क महत्व बढ़ौलक। कश्मीर कोनहु विशेष अपवाद नहि छल; विद्या आ साहित्यक प्राचीन केन्द्र सभक समीपवर्ती क्षेत्र सेहो एहि तरहें उपेक्षित वा स्वल्प रुपेँ - निर्दिष्ट रहल। तथापि पाणिनि अपन प्रसिद्ध व्याकरणमे 'कश्मीर'क उल्लेख केने छथि। *महाभारत* आ *पुराण* कश्मीरी सभक उल्लेख करैत अछि। वराहमिहिर (५०० ई.)क वृहत्संहिता मे भारतक उत्तरीय क्षेत्र सभमे कश्मीरक समावेश भेल अछि।

भारतक सीमा-क्षेत्रसँ बाहरक देशक कथा भिन्न अछि। टोलेमी अपन भूगोल मे (दोसर सदी ई.) कस्पीरिया (कश्मीर) प्रदेशकेँ 'बिदास्पिस' (वितस्ता)क स्रोतक नीचा देखौलनि अछि। हैकांतयोस (५४६-४८६ ई. पू.) *गांधारी* सभक नगरी *कस्पपिरोसक* उल्लेख करैत छथि, कारण जे प्राचीन कालमे कश्मीरकेँ गांधार (काबुल घाटी) सँ निकट सांस्कृतिक ओ राजनीतिक सम्बन्ध छल। पछाति हिरोडोट्स (इतिहासक पिता) *कस्पपिरोसक* उल्लेख केलनि अछि।

एक दिस जतऽ ई पुरान उल्लेख सभ पश्चिमी देश सभमे कश्मीरक कीर्ति सिद्ध करैत अछि, दोसर दिस एहि घाटीक *चीनी* उल्लेख बेसी विस्तृत अछि आ ५४१ ई. धरिक अछि। प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्यूनसांग ६३१ ई. सँ दुइ साल धरि एहि घाटीमे रहलाह आ हिनक विवरण पूर्ण विस्तृत अछि। राजाक शासित-क्षेत्र, हुनक सहिष्णु व्यवहार, जनता, जलवायु, भूमि, आदिक हिनक यथार्थ मूलक वर्णन उदाहरण योग्य अछि। घाटीक उद्भव सम्बन्धमे प्रचलित परम्परा सभक प्रसंगमे ओ जे लिखलनि; से इतिहासकाक लेल अत्यधिक उपयोगी मानल गेल अछि। ओ लिखैत छथि जे ओ ६३३ ई. मे तोस्मैदानक मार्ग सँ *पुन्नत्सो* पहुँचाह जे कल्हणक 'राजतरंगिणी' मे पर्णात्स आ आधुनिक *'पूँच'* अछि।

शाही तांग वंशक वृत्तान्त सेहो एतबय महत्वपूर्ण अछि; जाहिमे दरबारमे राजा *चेतो-लो-पि-लि* (लगभग ७१३ ई.) द्वारा प्रेषित प्रथम राजदूतक अएबाक तथा बादमे हुनक भाइ ओ उत्तराधिकारी *मु - तो - पिक* दोसर राजदूतक उल्लेख अछि। जेनाकि इतिहासकार सभक सहमति छनि, ई नाम कल्हणक 'राजतरंगिणी'क 'चन्द्रपीड' आ 'मुक्तपीड'

(ललितादित्य) दिस स्पष्ट निर्देश करैछ । झील मो - हो - तो - मो - लुंग (वूलर झीलक प्राचीन नाम 'महापद्म') एवं शहर पो - लो - उ - लो - पो - लो (अथवा 'प्रवरपुर',जे श्रीनगरकें कहैत छलैक)क उल्लेख सेहो 'राजतरंगिणी' आ दोसर कश्मीरी पुरालेखसँ पुष्ट अछि ।

दोसर उल्लेखनीय चीनी यात्री ७५९ ई. मे औकांग रहय, जे ह्यूनसांगक सदृश उरूस (हजारा) मार्ग सँ घाटी मे प्रविष्ट भेल तथा चारि स्मरणीय वर्ष धरि एतऽ रहल । यद्यपि घाटी आ ओकर निवसी सभक वर्णनमे ह्यूनसांगक घोर यथार्थता नहि छैक, तथापि एकर ऐतिहासिक महत्व अछि, कारण जे अवन्तिवर्मा (८५५-८८३ ई.) द्वारा मन्दिर आओर विहार स्थापित कएल जएबाक कल्हणक अनेक विवरण सभकें ई पुष्ट करैत अछि।

तांग वंशक लोपक उपरान्त ई आवागमन समाप्त भए गेल । स्पष्टतः भारतक पूर्वोत्तर राज्य आ चीनक बीचक राजनीतिक सम्बन्ध एकाएक समाप्त भऽ गेल । अग्रिम दू शताब्दी धरि चीनी बौद्ध- -यात्री कश्मीर अबैत त' रहल, मुदा अपन दैनन्दिनीमे घाटी आ ओकर निवासी सभक विषयमे ओ कोनहु विवरण नहि लिखल ।

कालक्रमानुसार, कश्मीरक इतिहास आ भूगोल पर लिखनिहार बादक विदेशी लेखक आरम्भिक मुस्लिम यात्री लोकनि छलाह । एहिमे सर्वाधिक महत्वपूर्ण महान् अरब विद्वान *अल्बेरूनी* छथि, जनिक एहि एकान्त घाटीक सम्बन्ध मे उत्सुकता गजनीक विजयक कारण जागृत भेल, कारण ई कहल गेल अछि जे "हिन्दू सभ एहन सभ ठाम भागि गेल छथि, जे स्थान सभ एखन हमर पहुँचसँ बाहर अछि, जेना कश्मीर, बनारस, इत्यादि ।"अल्बेरूनी कश्मीर आ बनारसक उल्लेख ज्ञान एवं विज्ञानक प्रसिद्ध केन्द्रक रूपमे करैत छथि । महमूद गजनी कश्मीर पर विजय प्राप्त नहि कए सकल सँ अल्बेरूनी एतऽ नहिआबि सकलाह, तथापि अल्बेरूनी कश्मीरक निवासी, विधि-व्यवहार, कृषि, कला ओ शिल्पक विषयमे; भारतक दोसर भागक अपेक्षा, विस्तारपूर्वक लिखने छथि ।

मुगल सभक अधीन कश्मीर पर बहुत लिखल गेल अछि । अबुल फजल (आईने अकबरी) कल्हणक 'राजतरंगिणी'कें स्रोत मानैत, कश्मीरक आरम्भिक इतिहासक सारांश देने छथि । फादर जेरोमी जेवियर आओर फ्रांसिस बर्नियर प्रभृत कतेको यूरोपियन जे क्रमशः अकबर आ औरंगजेबक संग रहलाह कश्मीर आ कश्मीरी सभक विषयमे लिखने छथि ।

१६६५ ई.मे औरंगजेबक संग रहनिहार फ्रांसीसी चिकित्सक डॉ. बर्नियरक टिप्पणी सभ सेहो कश्मीरीक सामाजिक ओ आर्थिक जीवन पर पूर्ण प्रकाश दैछ । घाटीक सुन्दरताक प्रशंसा करबाक क्रममे ('पैराडाइस आफ दि इंडीज' शीर्षक उपयुक्त अछि) बर्नियरक संकेत मलिक हैदरक पुरालेख दिस छल जखन ओ लिखलनि "जहाँगीरक आज्ञासँ लिखित प्राचीन कश्मीरी राजा सभक इतिहास, जनिक आब हम फारसीमे अनुवाद कए रहल छी ।" ई

अनुवाद सम्भवतः हेराय गेल अछि। मध्य १८म सदीमे एक *टाइरोली* मिशनरी *ले पेरे टीफेनथैलरक* कृति 'डिस्क्रिप्शन द ले इंड' मे कश्मीरक प्राचीन राजा सभक इतिहासक सारांश लेल सेहो पुनः मलिक हैदरक पुरालेख स्रोत बनल। १७म सदीक उत्तरार्द्ध आ १८म सदीमे किछु यूरोपियन सभ विशद वर्णन लिखलनि अछि। एहिमेँसँ सर्वाधिक महत्वपूर्ण १७८३ ई.मे घाटीमे प्रवेश कएनिहार बंगाल आर्मीक एक अधिकारी जार्ज फार्स्टर द्वारा लिखित अभिलेखमे कश्मीरक सामाजिक, राजनीतिक ओ आर्थिक अवस्थाक विवरण महत्वपूर्ण अछि। अफगानक अति कठोर शासनक समय कश्मीरी लोक द्वारा भौगल पीड़ाक विषयमे ओ जे लिखने छथि, तकरा कल्हण द्वारा वर्णित ओकर सभक यातनाक स्मरण करबैत अछि। सिक्खकाल (१८१९-४६ ई.) पर सेहो कतेको यूरोपीय यात्री सभ लिखलनि अछि, एहिमे विग्नीक विवरण सर्वाधिक महत्वपूर्ण अछि, राजनीतिक ओ आर्थिक संरचनाक पुनर्मूल्यांकन ओ संगहि जन-साधारणक आचार-विचार, लोक-कथा, शाल-व्यापार, आदिक ओ केलनि अछि। मूरक्राफ्ट लद्दाखक विषयमे सेहो लिखलनि आओर अलेक्जेंडर कनिंघमकृत 'लदाख' 'लघु तिब्बत' सम्बन्धी विवरण त बूझू जे सूचनाक एकटा 'खान' अछि।

''कश्मीरक घाटी,'' एक यात्री-लेखक सर वाल्टर लारेंस' लिखैत छथि, ''हिन्दू सभक 'पवित्र भूमि' आछे आओर हम प्रायः कोनहु एहन गाममे नहि पहुँचि गेल होएब, जाहिमे प्राचीनताक चिन्ह स्वरूप हमरा स्मारक नहि भेटल हो।'' शौकीन व्यक्ति आ आनो व्यक्ति द्वारा कएल गेल 'उत्खनन मे क्रमिक रूपेँ महत्वपूर्ण वस्तु सभक उपलब्धि भेल अछि। संस्कृत आ फारसी पाण्डुलिपि सभक संग्रह करबामे लागल जार्ज बूहलर (१८७५ ई.) केँ कल्हणक 'राजतरंगिणी' आ दोसर कृति सभमे उल्लिखित प्राचीन स्थलक साक्ष्य भेटलनि। ऐतिहासिक भूगोलक महत्वकेँ रेखांकित करैत ओ 'राजतरंगिणी'क पूर्ण रूपेण समीक्षात्मक अध्ययनक लेल दिशा-निर्देशन केलनि अछि।

एहि तरहक प्रोत्साहनसँ पुरातत्व-सम्बन्धी गवेषणा भेल आ कश्मीरक इतिहास पर प्रकाश पड़ल तथा अनेक व्यक्ति द्वारा 'राजतरंगिणी'क विवरण पुष्ट भेल। राज्यक भीतर ओ बाहर प्राप्त - सोना, चानी, ताम आ पित्तरिक सिक्काक अध्ययन एहि गवेषणा सभकेँ सेहो पुष्ट केलक। जार्ज कनिंघमक विशाल मुद्रासंग्रह केँ 'राजतरंगिणी'क कालगणना पद्धति सँ सीधा सम्पर्क छैक। प्राचीन मुद्रा सभक हिनक अनुसंधानपूर्ण महत्वपूर्ण परिणाम सभ एक शोधपत्र[२] मे प्रकाशित अछि, जे कल्हण आ दोसर इतिहासकार सभक पुरालेखक समीक्षात्मक मूल्यांकनक दिशा मे मुद्रा-साक्ष्यक महत्व सिद्ध कए देल अछि।

कश्मीर - घाटीक चारू दिसक लोकक नृवंश-परिचय 'राजतरंगिणी'मे नीक जकाँ

---

१. दि वैली आफ कश्मीर

२. न्यूमिस्मैटिक क्रानिनल, १८४६ ई.

नाकल जाए सकैछै। प्रसिद्ध शारदा-तीर्थक ऊपर स्थित किशन गंगा घाटीक ऊपरी भागमे, आइए - कालि जकाँ 'दरद' जातिक लोक सभ रहैत छल - कल्हण कतेको बेर एकरा सभकेँ कश्मीरी सभक उत्तरी पड़ोसीक रूपमे उल्लेख कएने छथि। कल्हण द्वारा उल्लिखित 'आरो उत्तरक म्लेच्छ' सेहो 'दरदे' जातिक रहल हो से संभव, जे हिनका समय धरि मुसलमान बनि गेल होएत। घाटीक समीपवर्ती दक्षिणी आ पश्चिमी प्रदेशमे खस जातिक लोक रहैत छल। रजौरी ओ 'पून्चक पहाड़ी राज्य सभपर खस जातिक शासन छल ; खस सभ घाटीक राजवंश पर ११म सदी मे कब्जाकए लेने छल ; उत्तररमे मुजफ्फराबाद धरि डोम जातिक लोक बसैत छल। घाटीक पूर्वोत्तर ओ पूर्वी भाग सभमे 'भौट्ट (आधुनिक लद्दाख आओर समीपवर्ती जिला सभक भुटिया) रहैत छल। 'राजतरंगिणी'सँ संचित ई एवं दोसर तथ्य सभ उपयोगी सिद्ध होएत, जखन कश्मीरी सभ आ अन्य उत्तरक्षेत्रीय लोक सभक पूर्ण नृवंश - परिचयक सर्वेक्षण कएल जाएत।

सन्दर्भ - ग्रन्थ सूची

अबुल फज़ल : 'आइने-अकबरी'; अनु.-एच.एस जैरेटः एसिएटिक सोसाइटी ऑव बंगालक बिब्लिओथिका इन्डिका सिरीज । पुनः टिप्पणी सहित अनुवाद : जे एन सरकार; ऐसिएटिक सोसाइटी, कलकत्ता, १९४९.

पी.एन. के, बमजै : ए हिस्ट्री ऑव कश्मीर : मेट्रोपोलिटन बुक क. लि. दिल्ली ; १९६२

जी. बुएहलर : विक्रमाक देबचरित - अनु.,बम्बई-१८७५

जे. सी. दत्त : किंग्ज़ ऑव कश्मीर ३ ; जोनराज, श्रीबर आओर शुक केर 'राजतरंगिणी'क अनुवाद, कलकत्ता १८९८

सर विलियम जोन्स : ऐसिएटिक रिसर्चेज ; कलकत्ता १८२६, खण्ड -५

मो. आजम कौल : वकतए कश्मीर ; श्रीनगर

एस.कौल : स. - जैन-राजतरंगिणी ; होशियारपुर १९६६

वाल्टर लौरेन्स : दी भैली ऑव कश्मीर ; लंदन, १८९५

आर. सी. मजुमदार : एन्सिएन्ट इन्डिया ; बनारस १९५६

आर. सी. मजुमदार : दी वेदिक एज ; लंदन ; १९५०

आर. एस. पंडित : कल्हण कृत राजतरंगिणी -अनु. सा[illegible] अकादेमी; १९७७

आर. के. परमू : हिस्ट्री ऑव मुस्लिम रूल इन कश्मीर ; नई दिल्ली, १९६९

पी. पिटर्सन : जोनराजकृत द्वितीय राजतरंगिणी अनु., बंबई १८९६

एच-जी. रालिन्सन : 'इन्डिया', लंदन, १९३७

एस. सी. रे : अर्ली हिस्ट्री एन्ड कल्चर ऑव कश्मीर ; नई दिल्ली, १९६९

के. एस. सक्सेना : 'पोलिटिकल हिस्ट्री ऑव कश्मीर दी अपर इन्डिया पब्लिशिंग हाऊस प्रा. लि. लखनऊ १९७४

एम- ए. स्टीन : 'कल्हणस राजतरंगिणी' ; अनु. पुनर्मुद्रण, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, वाराणसी, १९६१

एम.ए. स्टीन : नोट्स ऑन ऊ-कॉंग्स एकाउन्टस ऑव कश्मीर, विएन, १८९६

जी. एम. डी. सूफी : 'कशीर', पुनर्मुद्रण, लाईट एन्ड लाईफ पब्लिशर्स, नई दिल्ली, १९७४

एच. एच. विल्सन : 'एन एसे ऑन दि हिन्दू हिस्ट्री ऑव कश्मीर', ऐसिएटिक सोसाइटीक कार्य, ऐसिएटिक रिसर्च, खंड - १५, कलकत्ता - १८२५

जगधर, जादू (आओर कान्जीलाल) : सम्पादन, 'नीलमत पुराण' श्रीनगर - १९२८

• • •

117148
9.12.04

राजतरंगिणीक प्रसिद्ध लेखक कल्हण, एक गोट इतिहासकार मात्र नहि अपितु एक कवि सेहो छथि जनिका अपन स्वर्गोपम शान्तिपूर्ण कश्मीरी मातृभूमिसँ, ओकर सरिता-निर्झरसँ, पुष्पाच्छादित शाद्वल भूमिसँ, कोमल चितकाबर मेघसँ आच्छादित सम्पन्न खेतसँ, दूर-दूर धरि दृश्यमान पहाड़ परहक हिमराशिसँ, जतय उषाकाल ओ संध्याकाल कलाकारक रंगपट्टिकाक समग्र गुलाब ओ मंजीठ भरि जाइत अछि— प्रेम छलनि। कल्हणक स्वर विगत कतिपय शताब्दीक अन्तराल भेलहुँ सन्ताँ, एखनहुँ स्पष्ट अनुगूंजित होइछ; अनेक प्रकारेँ प्राकृतिक सौन्दर्यक प्रति प्रेमक दृष्टिसँ, नर-नारीक हृदयक ओ हुनका द्वारा अपन लक्ष्यपूर्त्तिक हेतु प्रयुक्त साधनक समीक्षात्मक परीक्षणक दृष्टिसँ एकाकी रूपमे आधुनिक अछि।

प्राचीन कालक अनेक संस्कृतक उत्कृष्ट कविलोकनिक समानहि कल्हणक जीवनक विषयमे किछु विशेष ज्ञात नहि अछि। एहि प्रबन्धमे सोमनाथ धर कविक कृतिमे उपलब्ध अन्तःसाक्ष्यसँ हुनक जीवन सम्बन्धी विवरणकेँ एकत्रित करबाक एवं राजतरंगिणीक उत्तम रीतिसँ मूल्यांकन हेतु पाठकक सहायता करबाक प्रयास कयलनि अछि।

एहि प्रबन्धक रचयिता सोमनाथ धर एक पत्रकार एवं लोकगीतकार छथि जे भारतीय विदेश-सेवासँ अप
हिनक अन्य ग्रंथमे 'कौटिल्य एंड दी
उल्लेखनीय अछि।

Library IIAS, Shimla
MT 891.202 109 2 K 124 D
00117148